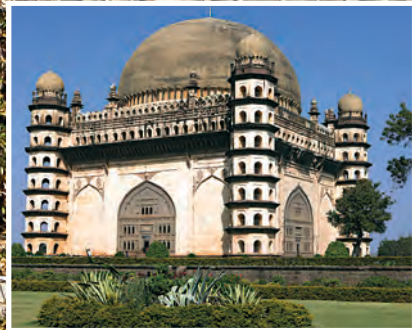
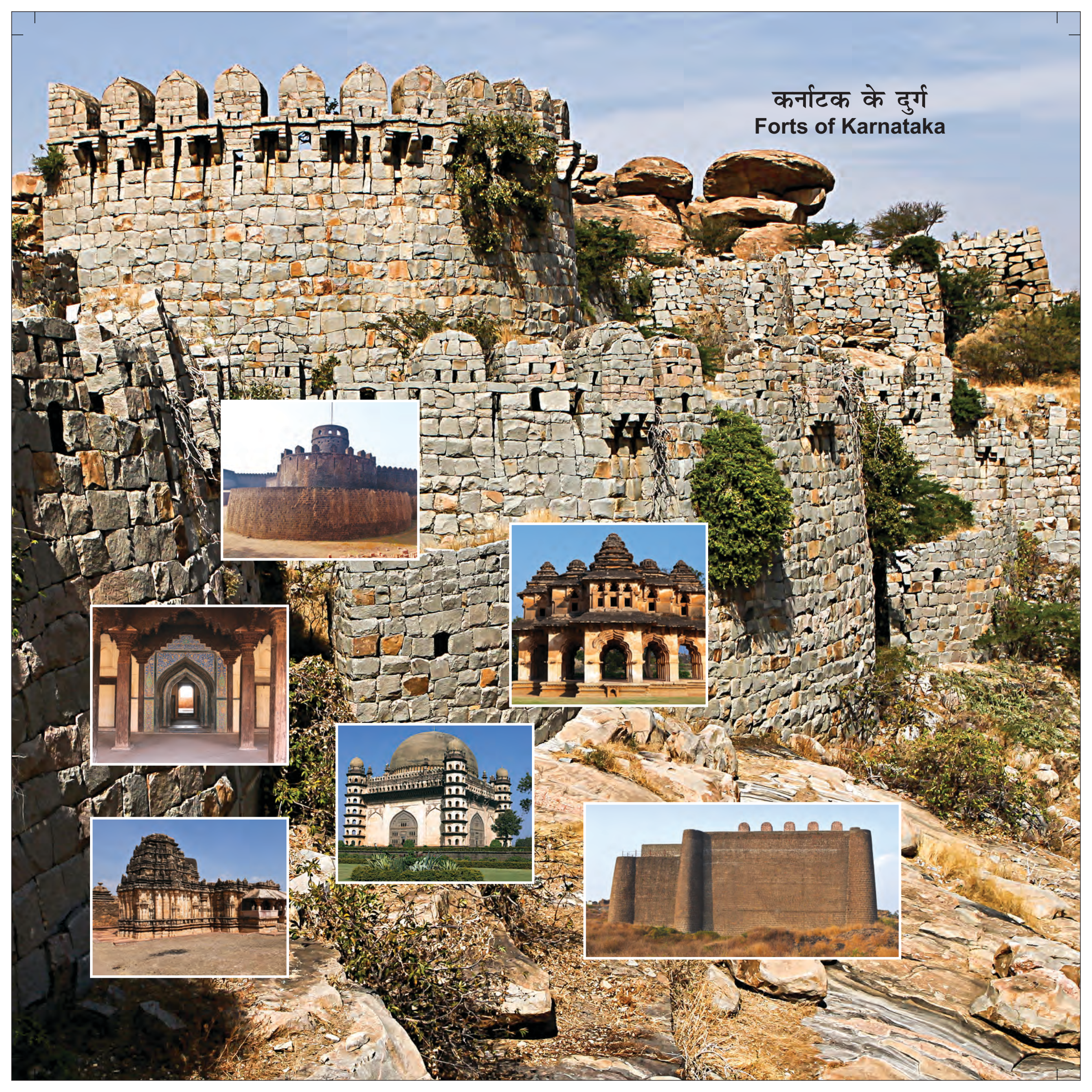
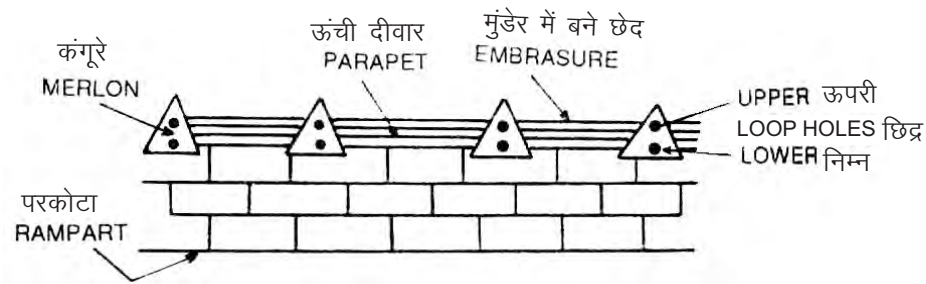
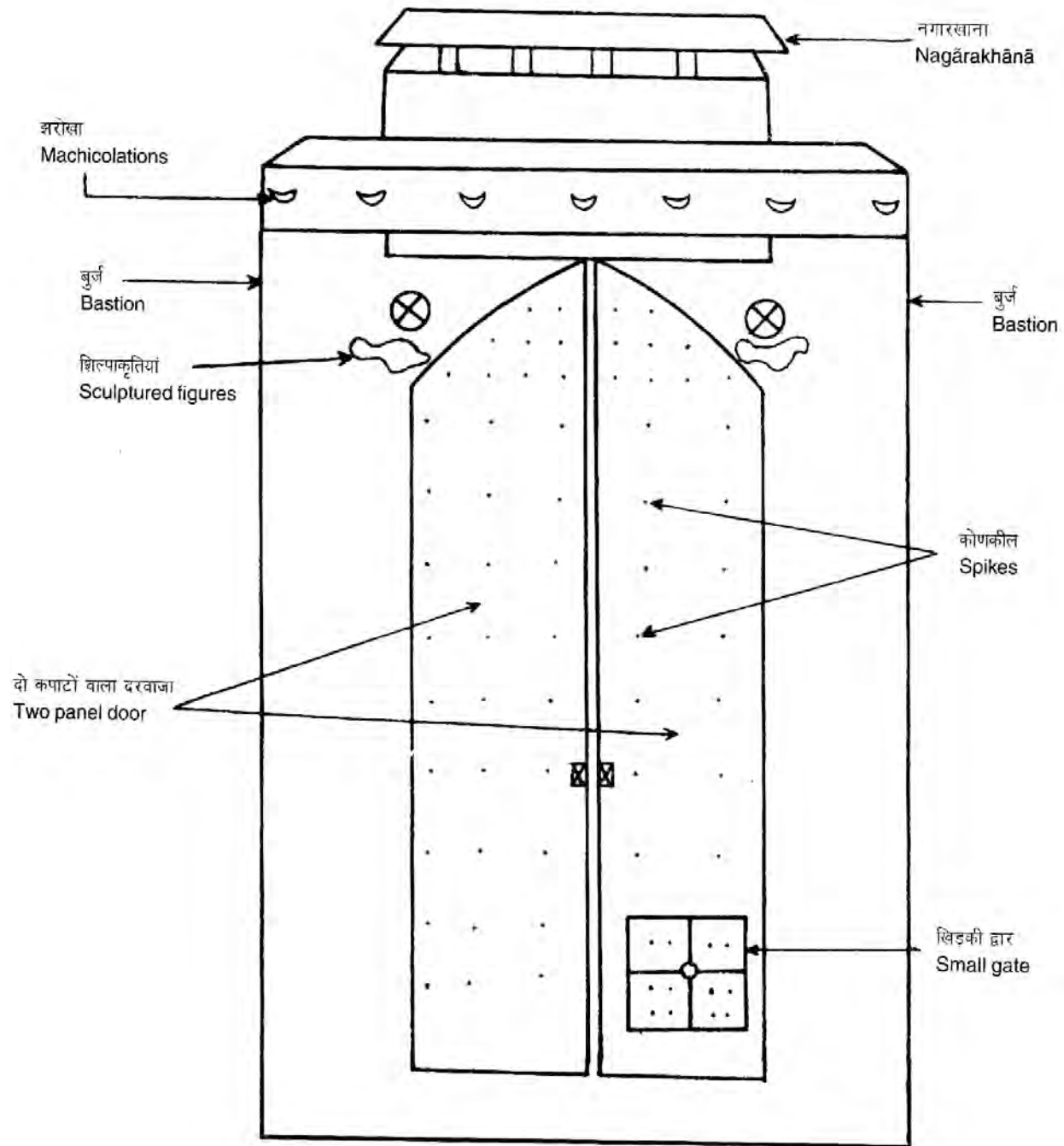


# कर्नाटक के दुर्ग Forts of Karnataka





दुर्ग शब्दावली  
 Fort Terminology



“दुर्ग राज्य के संरक्षण के मुख्य अंग हैं।”  
(आज्ञापत्र, 18वीं सदी के आरम्भ में लिखा गया प्रबंध,  
अमात्य रामचन्द्र द्वारा लिखित)

“Forts are the chief protection of a kingdom”  
-The Ajnapatra, an early 18th century treatise,  
written by Ramachandra Amatya

## भूमिका

दुर्गबंदी की संरचना तथा बनावट सेना की सुरक्षा तथा युद्ध के समय छावनी बनाने के लिए की गयी। अंग्रेजी भाषा में फोर्टीफिकेशन शब्द लेटिन भाषा के फोर्टिस (मजबूत) और फेजेयर (बनाना) से बना है।

प्राचीन समय में शुरु में जंगली जानवरों के हमले से बचने के लिए दुर्गबंदी आरम्भ हुई, बाद में जैसे-जैसे बस्तियों, कस्बों और नगरों का विकास होने लगा, उनकी सुरक्षा के लिए सेना तैयार की जाने लगी तब दुर्गबंदी की आवश्यकता हुई। हथियारों के विकास तथा उपयोग के तरीकों का विशेष प्रभाव दुर्गबंदी की बनावट तथा संरचना पर पड़ा। इसकी कला तथा निर्माण तकनीक में तेजी से विकास हुआ और भारत के इतिहास में प्रत्येक राजनीतिक वातावरण में यह एक मापदंड बन गया। उरुक नगर प्राचीन काल के सुमेर (मेसोपोटामिया) में स्थित दुनिया का सबसे प्राचीन नगर है, यह चारों ओर से घेराबंद था। सिन्धु सभ्यता की कुछ बस्तियां दीवारों से घेराबंद थीं।

कर्नाटक में दुर्ग बनाने का पुराना इतिहास है। भारत के दक्कन क्षेत्र, जिसमें कुछ भाग महाराष्ट्र, कर्नाटक तथा आंध्र प्रदेश के सम्मिलित हैं, अपने दुर्गों के लिये सबसे अधिक प्रसिद्ध हैं। कर्नाटक में सबसे प्राचीन कहे जाने वाले दुर्ग तीसरी तथा चौथी शताब्दी में सातवाहनों द्वारा बनाये गये। इन दुर्गों की दीवारों के खंडहर आज भी सन्नाती, ऐहोल तथा बनवासी इत्यादि में पाए जाते हैं।

कदम्ब शासकों द्वारा अनेक दुर्ग बनाये गए। बादामी दुर्ग ऐसा ही प्राचीन दुर्ग है जिसे 543 ई. में चालुक्य के राजवंशज पुलकेशी प्रथम ने बनवाया था। यह एक ढालदार पहाड़ी के मध्य भाग में बनाया गया था। बादामी और ऐहोल में चालुक्य दुर्ग आज भी देखने को मिलते हैं।

गंग, राष्ट्रकूट, कल्याण चालुक्य और होयसल शासकों ने अनेक दुर्ग 8वीं से 12वीं शताब्दी ई. तक बनवाए। प्रायः सभी नगरों में दुर्ग थे, उदाहरण के लिए बीदर, रायचूर, बेलगोला, चिकमगलूर, तालागुप्पा, हैलेबिड, बेल्लारी, कोलार तथा अन्य बहुत से नगर। मध्य काल में युद्ध कला का बहुत विकास हुआ जिसके फलस्वरूप दुर्ग की बनावट भी बदली। दुर्ग की दीवारों की ऊंचाई, पर्यवेक्षण बुर्जों की ऊंचाई, नहरों और खाइयों की चौड़ाई तथा गहराई सभी को बढ़ाया गया। दुर्ग को घेरने वाली खाइयों और नालों में विभिन्न प्रकार के पेड़ पौधे लगाए गए।

13वीं शताब्दी ई. से 18वीं शताब्दी ई. में बने कर्नाटक के दुर्गों में फारसी, ब्रिटिश तथा फ्रांसीसी प्रभाव पाया जाता है। ऐसे ही दुर्ग हम्पी, गुलबर्गा, बीजापुर, रायचूर, चित्रदुर्ग, कित्तूर,

## Introduction

Fortifications are military constructions and buildings designed for defence in warfare and military bases. The term is derived from the Latin word '*fortis*' (strong) and '*facere*' (to make).

Fortification was considered essential initially during the earliest times for protection against wild animals. Subsequently as habitations progressed and prospered because of the possibility of hostile attacks, it was necessary to provide protective fortifications to cities and towns and also raise armies to defend them. The development of weaponry and armament evidently had a considerable influence on the design and development of fortifications. Proliferation in the art and science of fortifications provides an index to the political climate in India during the various periods of her history. Uruk in ancient Sumer (Mesopotamia) is one of the world's oldest known walled cities. Some settlements in the Indus Valley Civilization were also fortified.

Karnataka has a long history of fort construction. No other region of India has forts as the region of Deccan which includes parts of Maharashtra, Karnataka and Andhra Pradesh. The Satavahanas in the 3rd and 4th centuries C.E. are said to have built the earliest forts in Karnataka. Remnants of fort walls have been found in Sannati, Aihole, Banavasi etc.

Numerous forts were constructed by the Kadamba rulers. The Badami fort is another ancient fort built in 543 C.E. by Pulikesi I of Chalukya dynasty. It was built in the middle of a sloping hill. The Chalukya forts of Badami and Aihole can be seen even today.

The Gangas, Rashtrakutas, Kalyana Chalukyas and Hoysalas built innumerable forts from 8th to 12th centuries C.E. Practically all the towns Bidar, Raichur, Belagola, Chikmagalur, Talaguppa, Halebid, Bellary, Kolar and many more had forts. With the medieval period there was great progress in the art of warfare. This led to changes in fort building. The height of the fortress walls, watch towers and depth and width of canals increased. New plants and features were introduced in the moats.

From 13th century C.E. up to 18th century C.E., Karnataka forts show Persian, British and French influence. We see such forts at Hampi, Gulbarga, Bijapur, Raichur, Chitradurga, Kittur, Srirangapatnam etc. These forts have canals and walls round the forts, embellished with high domes, hole in the front walls to fire



बनवासी दुर्ग का मंदिर

Temple of Banavasi fort



किट्टूर चैनम्मा दुर्ग

Kittur Chennamma Fort

श्रीरंगपटनम इत्यादि में पाए जाते हैं। इन दुर्गों के चारों ओर खाइयाँ, घेराबंद दीवारें, सजावटी ऊँचे गुम्बद, बन्दूक चलाने के लिए सामने की दीवारों में बने छेद पाए जाते हैं। विजयनगर दुर्ग के चारों ओर 500 कि.मी. दीवार बनी हुई है। चित्रदुर्ग का दुर्ग एक विशाल पहाड़ी दुर्ग है तथा श्रीरंगपटनम दुर्ग में एक जलदुर्ग है जो कि यूरोप में पाए जाने वाले दुर्गों के समान है।

यद्यपि कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में राज्य सीमा के साथ-साथ दुर्ग बनाने का सुझाव दिया है परन्तु भारत की विशिष्ट भौगोलिक स्थिति के कारण यह सुझाव कार्यान्वित नहीं हो पाया। प्रायः दुर्ग राज्यों के मध्य भाग में स्थित थे। विदित तौर पर ऐसा राजस्थान, महाराष्ट्र तथा दक्षिण के कई राज्यों में देखा जा सकता है।

वैदिक काल से 17वीं सदी तक नगरों, कस्बों और महानगरों की दुर्गबंदी को अत्यंत महत्त्व दिया गया। समय के साथ लम्बे समय तक दुर्गबंदी के तरीकों में कोई विशेष बदलाव नहीं आया जबकि कुछ बदलाव सुरक्षा के तरीके, युद्ध कला और हथियारों के विकास में आये बदलाव के कारण आवश्यक थे। भारतीय महाद्वीप कई राज्यों में विभाजित था। उन राज्यों पर राज करने वाले शासक अपने सभागार, दुर्ग तथा मुख्य नगरों और कस्बों इत्यादि की भव्य सजावट से अपनी समृद्धि तथा सम्पन्नता का प्रदर्शन करते थे।

प्राचीन तथा मध्य काल के मुख्य दुर्गबंद नगर, महल अपनी अभेद्य तथा कलात्मक सुन्दरता व भव्यता के लिए आज भी दुनिया भर में आकर्षण का केंद्र हैं। प्रामाणिक हिन्दू शिल्प ग्रंथ शिल्पशास्त्र के अनुरूप ये भव्य इमारतें बनाई गयी थीं, जो वास्तुकार दुर्ग वास्तुकला की इस शाखा में पारंगत थे, वे इन्हें दुर्ग करीना कहते थे।

शिल्पशास्त्र के नियमानुसार बने ये दुर्ग तथा दुर्गबंद नगर समस्त भारतवर्ष में पाये जाते हैं। भारत की प्राचीन तथा मध्यकालीन दुर्गबंदी का सैन्यवास्तुशास्त्र के इतिहास में महत्त्वपूर्ण स्थान है तथा यह अन्य देशों से भिन्न तथा विशिष्ट है।

### प्राचीन भारतीय साहित्य में दुर्ग

प्राचीन तथा मध्यकालीन साहित्य में दुर्ग का मतलब सभी प्रकार की सुरक्षा घेराबंदी इत्यादि से है। दुर्ग शब्द का उद्गम संस्कृत शब्द 'दुर्गम' से है। दुर्गम का अर्थ है – किसी भी स्थान तक पहुँचने की कठिनाई, जो कि उसकी स्थिति और चारों ओर बने नालों तथा उसकी मजबूती पर निर्भर करती है।

दुर्ग तथा दुर्गबंद शहरों का वर्णन सभी वेदों, कल्पसूत्रों, स्मृतिशास्त्रों, नीतिशास्त्रों, पुराणों, शिल्प तथा वास्तुशास्त्रों में पाया जाता है।

यह विस्तृत ज्ञानकोष भारत में दुर्गबंदी तथा उनके विकास पर प्रकाश डालता है। वेदों में सबसे पुराने दुर्ग और दुर्गबंदी का वर्णन पाया जाता है। पुर शब्द (पुष्ट मिट्टी का काम) ऋग्वेद



चित्रदुर्ग के दुर्ग की ध्वस्त दीवार Ruined wall of Chitradurga fort

guns. The Vijayanagar fort had 500 km of walls around it. Chitradurga fort had a massive hill fort and Srirangapatnam had a water fort resembling such forts in Europe.

Although Kautilya in his Arthashastra advocated the provision of forts along the boundary of a kingdom, due to unique geographical conditions in India it could not be successfully implemented. Often the forts were situated in the central part of various kingdoms, as is clearly seen from the distribution of forts in Rajasthan, Maharashtra and in several states of South India.

Great importance has been given to the fortifications of the towns and cities in India from the Vedic period to the 17th century. With passage of time, the nature of fortifications does not seem to have changed radically or significantly though certain changes were necessary to suit new armament in the offensive and defensive strategies of warfare. The Indian subcontinent was usually divided into numerous kingdoms. The kings who ruled over them displayed the grandeur and affluence of their courts through the beautification of the forts of important cities and towns.

Important fortified cities and palaces of ancient and medieval India, therefore, present a formidable and aesthetically picturesque appearance which still attracts worldwide attention and admiration. This is believed to be the result of due importance given to fort planning in the *Shilpa Shastras*, the canonical books of the Hindu craftsmen. The architects who specialised in the branch of fort architecture were known as *durga karinah*.

There are innumerable forts and fortified cities which dominate the landscape throughout India and are built according to the norms laid down by the *Shilpa Shastras*. Ancient and medieval fortifications of India occupy a prominent position in the history of military architecture which is quite distinct from the development point of view of the fortifications in other countries.

### Forts in Ancient Indian Literature

In ancient and medieval Indian literature the term *durga* is generally applied to all kinds of fortifications. The word *durga* seems to have originated from the Sanskrit word '*durgam*' meaning difficult to trespass signifying the importance of a strategic site, a strong wall and a moat to make it an impregnable stronghold.

Forts and fortified cities find frequent mention in Indian literature such as the *Vedas*, *Kalp sutras*, *Smriti Shastras*, *Niti Shastras*, *Puranas*, the *Shilpa* and *Vastu Shastras*.

This vast store of knowledge throws considerable light on the development and growth of fortifications in India. The earliest references to the forts and fortified



शाहपुर दुर्ग के परकोटे

Ramparts of Shahpur fort

में तथा इसके पश्चात् अनेक बार प्रयोग किया गया, जिसका अर्थ 'परकोटा', 'दुर्ग' या 'किला' होता है। दुर्ग, जिसमें बहुसंख्य (गोमती) मवेशी रखने हेतु गढ़ बनाये जाते थे, जिससे उनकी रक्षा जंगली जानवरों से हो सके। सभ्यताओं के विकास के साथ-साथ मवेशियों की जंगली जानवरों से रक्षा हेतु आवश्यकतानुसार बाड़ा बनाने की आवश्यकता हुई। आगे के समय में ये बाड़े मिट्टी, ईंट, पत्थर से बनाये जाने लगे।

परवर्ती समय में जैसे-जैसे सुरक्षा की आवश्यकता बढ़ी, दुर्गबंदी करने के तरीके विकसित हुए। सैन्य कला के विकास का भी महत्त्व बढ़ने लगा और यह तथ्य इससे स्पष्ट होता है कि 'धनुर्वेद', जो कि यजुर्वेद की शाखा (उपवेद) माना जाता है, में विभिन्न प्रकार के दुर्गों का प्रामाणिक वर्णन दिया गया है। यह वर्णन भारत में सभी तरह से मान्य है, यद्यपि कुछ जानकारी बाद के समय में भी विभिन्न विद्वानों द्वारा जोड़ी गयी।

### विभिन्न प्रकार के दुर्ग

भूदुर्ग या नगरदुर्ग (समतल धरती पर बने दुर्गनगर)

गिरिदुर्ग या पहाड़ी दुर्ग

जलदुर्ग (पानी के दुर्ग)

धनवन दुर्ग (रिगिस्तानी दुर्ग)

नरदुर्ग (मानव द्वारा बनाये दुर्ग)

महीदुर्ग (मिट्टी से बने दुर्ग)

वनदुर्ग (जंगल दुर्ग)

दुर्गों का वर्णन तथा प्रकार पुराणों में भी पाया गया है। विशेष रूप से अग्निपुराण, मत्स्यपुराण, देवीपुराण इत्यादि में। अग्निपुराण के अनुसार राजा को अपना निवास एक दुर्ग में ही बनाना चाहिए। मनुस्मृति तथा महाभारत ग्रंथों में दुर्ग तथा दुर्गबंदी के कई उदाहरण पाये जाते हैं।

अनेक साम्राज्यों की सीमाएं उनके राजाओं की शक्ति और कमजोरियों के अनुसार फैलती या सिकुड़ती रहती थीं। राज्य विभिन्न प्रदेशों में बँटे हुए थे। प्रादेशिक सीमाओं की सुरक्षा की जिम्मेदारी वहाँ के जागीरदार या प्रादेशिक रक्षक (क्षत्रप) के लिए नियत थी। अपने अधिकार को बनाये रखने के लिए वह दल बदलने के लिए भी आतुर हो जाते थे। खजाने की रक्षा तथा राजनैतिक उथल पुथल के समय लोगों को आश्रय देने के लिए दुर्ग की आवश्यकता होती थी।

पाटलिपुत्र, तक्षशिला, काशी इत्यादि मौर्यकाल में कुछ दुर्गबंद नगर थे। मेगस्थनीज़ के वर्णन के अनुसार पाटलिपुत्र नगर गंगा तथा सोन नदी के संगम पर बना हुआ था। यह नौ मील से अधिक लम्बा तथा डेढ़ मील चौड़ा था। इसकी रक्षा के लिए एक लकड़ी की दीवार, सामने एक नहर तथा नगर का नाला था। नगर की दीवार पर 570 मीनारें सुसज्जित थीं और इसके 64 द्वार थे। महल नगर के मध्य भाग में था, जिसमें अनेक कोष्ठ तथा तहखाने वाली गलियां थीं, जिससे राजा तथा खजाने की रक्षा हो सके।



कृष्णा नदी के तट पर जलदुर्ग  
Jaladurga fort on the bank of Krishna river

cities are to be found in the Vedas. *Pur* (strengthened earthwork) is a word of frequent occurrence in the Rig Veda and later, meaning "rampart", "fort" or "stronghold". A fort 'full of kine' (*gomti*) is mentioned indicating that strongholds were used to hold cattle. The cattle were invariably threatened by wild animals. This must have necessitated some sort of protective barriers or fencing during the early stages of civilization which were improved upon subsequently with the use of mud, brick and stone for the fortification of towns.

Considerable progress was made in the methods of fortification as the need for protection intensified in the subsequent period. The art of warfare also gained importance, which is evident from the fact that the *Dhanurveda* is known to be a branch (*Upaveda*) of *Yajurveda* which expounds the classification of various kinds of forts. This classification is universally accepted in India though few more were added to this list during succeeding periods by various authorities.

### The different types of forts are as follows:

*Bhudurga* or *Nagaradurga* (City Fort on a plain terrain)

*Giridurga* or *Parvatdurga* (Mountain Fort)

*Jaladurga* (Water Fort)

*Dhanvandurga* (Desert Fort)

*Naradurga* (Man-made Fort)

*Mahidurga* (Mud Fort)

*Vanadurga* (Forest Fort)

The description of forts and their classification are found in the *Puranas*, notably the *Agni Purana*, the *Matsya Purana*, the *Devi Purana* etc. According to *Agni Purana* the king should make his residence in a fort. In *Mahabharata* and the *Manusmriti*, we find ample references to forts and fortifications.

The boundaries of various kingdoms were always in flux depending on the strength or weakness of the ruler. The realm used to be divided into various provinces. The protection of each provincial boundary was the responsibility of the *jagirdars* or the provincial *satraps* who in general were interested in keeping their own position and *jagirs* secure. They were prone to change their loyalties to meet this end. The forts were thus meant to protect the local treasury and provide a shelter to the people in the region during the political upheavals.

Pataliputra, Taxila, Kashi etc., were some of the notable fortified cities of the Mauryan period. Based on the account of Megasthenes, Pataliputra was situated on the confluence of the Ganges and the Son rivers and was more than nine miles in length and one and half miles in breadth. It was protected by a wooden wall and in front of it was a moat for defence and sewage of the city. The city wall was crowned with 570 towers and had 64 gates. The palace was in the centre of the city



बेल्लारी दुर्ग का प्रवेश

Entrance to Bellary fort

केलाडी राज्य के शासक बसवा भूपाल (1684–1710) द्वारा 17वीं सदी के अंत में लिखी, 'शिव तत्त्व रत्नाकर' दक्षिण भारत की मुख्य पुस्तक है। इस पुस्तक में दुर्ग की संरचना तथा उपयोग के बारे में एक मुख्य अध्याय है।

विजयनगर राज्य के शासक भी कला, साहित्य तथा वास्तुकला के संरक्षक थे। इनके समय में दो विशेष प्रबंध लिखे गये, जिनके नाम थे—'दैवज्ञ विलास' तथा 'आकाश भैरवकल्प', जो दुर्ग योजना पर विशेष प्रकाश डालते हैं।

विशेष तौर पर सुरक्षा के लिए बनाये गये ये भारतीय दुर्ग, देखने वालों को अपने भव्य और विशाल बनावट के कारण आकर्षित करते हैं। इनसे शासक की सम्पन्नता और शक्ति का प्रदर्शन होता है। भारतीय किलों की दीवारें आमतौर पर मोटी, ऊँची तथा मजबूत होती हैं और समान दूरी पर बनी विशाल मीनारें हैं, जो पहरे देने और बन्दूक तथा तोप रखने के काम आती थीं।

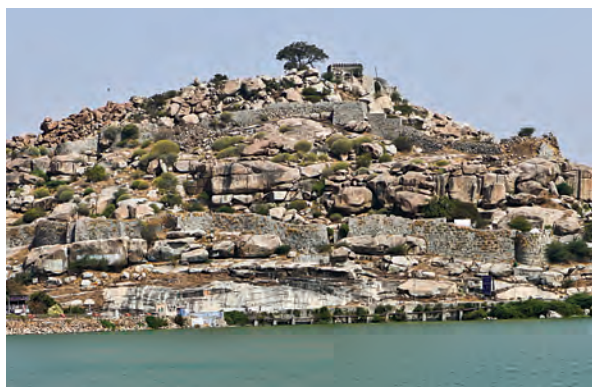
भारतीय दुर्गों की अन्य विशेषता उनके सजावटी रक्षकद्वार हैं, जिन पर नक्काशीदार मूर्तियों से सजावट की गयी। इनकी संरचनाओं में मेहराब, चौखट तथा टोडे की विशिष्ट कलाकारी हैं।

भारत में दुर्ग के द्वारों, महलों तथा नगरों की कुछ विशिष्ट वास्तुकलात्मक विशेषताएँ हैं।

भारी शीशम के दरवाजों के प्रवेश—द्वार पर लोहे की खूँटीनुमा कीलें बाहर की ओर जुड़ी होती हैं, ये खूँटीनुमा कीलें क्षैतिज श्रेणी में एक के ऊपर एक लगी होती हैं। जब हाथी अत्यंत बल से इन द्वारों पर हमला करें तो ये खूँटियाँ उन्हें ऐसा करने में बाधा उत्पन्न करती हैं। द्वार के ऊपर बनी मुंडेर पर कपोला या छतरी बनी होती है। प्रवेश द्वार के दोनों ओर उत्कर्ष बुर्ज बनाए गए, जिनमें कंक्रीट से जड़े कंगूरे, झरोखेदार जालियाँ तथा अन्य रक्षक उपकरण होती थीं। दुर्ग का मुख्य द्वार प्राचीर द्वारा सुरक्षित किया गया।

दुर्ग की मोटी कंगूरेदार दीवारों के चारों ओर अमूमन खाई पायी जाती है। बाहर निकली हुई मुंडेरें भी किलों की रक्षा के लिए आवश्यक थीं। उत्तर भारत में इनका प्रचलन कम है, अधिकतर ये दक्कन, जैसे कि बीदर और गोलकुंडा में देखी जा सकती हैं।

प्राचीन भारतीय किलों की एक और विशेषता है, वह है— द्वार पर बने नुकीले मेहराब। सुरक्षा और महल के अलावा दुर्ग संकुल के आवश्यक अंग, मंदिर तथा मस्जिद का दुर्ग के अंदर होना भी अनिवार्य था।



रायचूर दुर्ग का दूरवर्ती दृश्य A distant view of Raichur fort

and contained many chambers including underground passages for the security of the king and the treasury.

The *Sivatatva Ratnakara* is another important work compiled in South India towards the end of the 17th century by Basava Bhupala (1684-1710), who was the ruler of the Keladi kingdom. It has an important chapter on the use and construction of fortresses.

The rulers of the Vijayanagar kingdom were also great patrons of art, literature and architecture. During this period, two notable treatises namely '*Daivadhnya Vilasa*' and '*Akashabhairavakalpa*' were written, which throw considerable light on the fort planning.

Though they are defence-oriented in nature, the Indian forts do not fail to impress the beholder by their formidable and imposing structures. They spell the power and affluence of the rulers. The walls of Indian forts in general are of great thickness and height, strengthened at regular intervals by massive towers which were used as watch towers where guns and cannons were placed.

Another important feature of Indian forts is the ornamentation of their defences and gateways. These are generally covered with panelling and moulded sculptural decoration. Construction features such as arches, lintels and corbels are carved in rich and elaborate designs.

The gates of forts, palaces and towns in India have some special architectural characteristics.

The heavy teak doors as the entrance gates are provided with iron spikes on the outer face. They are arranged in horizontal tiers. Their purpose was to prevent the doors being stormed by the mighty force which elephants could otherwise have brought to bear upon them. The parapet above the gate is marked by cupolas or *chhatris* (memorial canopy). The entrance gate is flanked by lofty bastions on either side. The bastions are reinforced by merlons and embrasures besides usual defense devices. The main entrance gates of forts are protected by barbicans.

Broad battlemented wall forts are also surrounded by a moat. Machicolations were also important for the defence of the forts. They are relatively rare in the north but common in the Deccan, as seen at Bidar and Golconda.

Another important feature of ancient Indian forts is the use of the pointed arch in the construction of the gateways. Apart from the defence works and the palaces, the other essential component of the fort complex was the presence of temple or the mosque.



मलखेड दुर्ग का आंतरिक दृश्य

Malkhed Fort

अधिकतर किलों का स्वरूप 12वीं शताब्दी के मुस्लिम आक्रमणों के बाद बदला। मस्जिदें दुर्गसंकुलों का आवश्यक अंग बन गईं। इनके साथ-साथ मकबरे तथा बगीचे भी बनाये गये।

### कर्नाटक – भौगोलिक विशेषताएं

कर्नाटक भारत के पश्चिमी भाग के दक्षिणी पठार में स्थित है तथा अरब सागर की लम्बी तट रेखा बनाता है। उत्तरी भाग में गोवा तथा महाराष्ट्र की सीमा एवं पूर्वी भाग में आंध्र प्रदेश तथा दक्षिणी सीमा केरल व तमिलनाडु से जुड़ा है। इस राज्य की सीमा तीन तरफ 2900 कि.मी. लम्बी है तथा 320 कि.मी. सागर तट है। इसका क्षेत्रफल 1,91,791 वर्ग कि.मी. है। बड़े राज्यों में क्षेत्रफल के अनुसार अभी इसका 8वाँ स्थान है। कन्नड़ यहाँ की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा एवं राजभाषा है।

इस राज्य को भौगोलिक स्थिति तथा भौतिक विशेषताओं के कारण मोटे तौर पर चार भागों में बाँटा जा सकता है।

- (अ) उत्तरी पठार
- (आ) दक्षिणी पठार
- (इ) पश्चिमी घाट (मालेनाडू)
- (ई) समुद्र-तटीय क्षेत्र

उत्तरी पठार में बेल्लारी, बीजापुर, धारवाड़, रायचूर, गुलबर्गा तथा बीदर शामिल हैं। यह इलाका 'दक्षिण काली कपास के इलाके' के नाम से प्रसिद्ध है। यह इलाका आमतौर पर समतल तथा यहाँ साधारण ऊँचाई 300-600 मीटर की है।

दक्षिणी पठारी इलाके में पहाड़ियाँ तथा नदियाँ पायी जाती हैं। इस इलाके में बंगलुरु, चित्रदुर्ग, कोडागु, कोलार, मांड्या तथा तुमकुर जिले शामिल हैं।

मालेनाडू क्षेत्र में शिमोगा, चिकमगलूर, हासन और मैसूरु जिले हैं। यह क्षेत्र जंगलों तथा प्राकृतिक वनस्पति से संपन्न है। इस क्षेत्र से बहने वाली अधिकतर नदियों का उद्गम पश्चिमी घाट से हुआ है।

समुद्र तटीय क्षेत्र में उत्तरी कन्नड़ जिला तथा दक्षिणी कन्नड़ जिला शामिल है और यह पश्चिमी घाट तथा अरब सागर के बीच में स्थित है तथा अपनी नैसर्गिक सुन्दरता के लिए जाना जाता है।

कर्नाटक राज्य का 60% क्षेत्रफल चट्टानों से बना है, जो ग्नेइस्सेस (तहदार) तथा ग्रेनाइट की हैं।

कर्नाटक की नदी प्रणाली मुख्य रूप से 5 भागों में बांटी जा सकती है :

1. कृष्णा नदी प्रणाली
2. गोदावरी नदी प्रणाली
3. कावेरी नदी प्रणाली
4. पलर-पेन्नार नदी प्रणाली
5. पश्चिम में बहने वाली नदी प्रणाली



गुलबर्गा दुर्ग के बड़े तहखाने की तोप  
Cannon at Bala Hissar of Gulbarga fort

Most of Indian forts were transformed after the Muslim invasion of the 12th century. Mosques became an integral part of many of the fort complexes along with tombs and gardens.

### Karnataka: Physical Features

Karnataka is situated in the Deccan Plateau, on the western side of India, having a long coast line on the Arabian Sea with Goa and Maharashtra states as its northern boundaries, Andhra Pradesh on the east and Kerala and Tamil Nadu as its southern boundaries. The State has 2900 km. long border on three sides and sea coast of 320 km. It has an area of about 1, 91, 791 square km. It is the eighth largest Indian state by area. Kannada is the official and most widely spoken language.

As per topography and physical features, the State is broadly divided into four parts:

- a. Northern Plateau
- b. Southern Plateau
- c. Malenadu region and
- d. Coastal region.

The Northern plains include Bellary, Bijapur, Dharwar, Raichur, Gulbarga and Bidar. This is famous "Deccan Black Cotton belt". They are generally flat with its average height varying from 300-600 metre altitude.

The Southern Plateau region consists of hills and rivers. Districts of Bengaluru, Chitradurga, Kodagu, Kolar, Mandya and Tumlsar are in this region.

The Malenadu region consists of the districts of Shimoga, Chickmagalur, Hassan and Mysuru. This region is full of forests and natural vegetation and most of the rivers of Karnataka originate in the Western Ghats and flow through this region.

The Coastal region comprises of the districts of Uttar Kannada and Dakshina Kannada. It is situated between the Western Ghats and the Arabian Sea, and known for its scenic beauty.

60% of the area of the Karnataka state is made up of rocks namely gneisses, granites etc.

The River systems of Karnataka can be divided into 5 main parts.

1. Krishna River system
2. Godavari River system
3. Cauvery River system
4. Palar-Pennar River system and
5. West flowing River system



बीदर दुर्ग का प्रवेश

Entrance to Bidar fort

इन क्षेत्रों में दुर्ग निर्माण की योजना बनाते समय, यद्यपि वास्तुविद पारंपरिक रूप से वास्तुग्रंथों से अच्छी तरह निपुण थे और उसका पालन दुर्गों की योजना और निर्माण में कर रहे थे, परन्तु उन्हें क्षेत्रीय पर्यावरणिक परिस्थितियों, जैसे— चट्टानों का प्रकार, भौगोलिक स्थितियाँ, नदी प्रणाली इत्यादि का भी ध्यान रखना पड़ा। इसलिए वास्तविक निर्माण में इन वास्तुकला के नियमों का पालन करते हुए, क्षेत्र के चयन, दुर्ग की संरचना और निर्माण की विधि में ऐसा प्रतीत होता है कि उनको कुछ संशोधन करने पड़े।

इस क्षेत्र की अन्य रोचक विशेषताएं, जैसे— समृद्ध विकासशील बंदरगाह और मूल्यवान खनिज सम्पदा की क्षमता वाली तटीय पट्टी के निकट फैले घने जंगल, प्राकृतिक सुरक्षा देने वाली पहाड़ी पर्वतमाला, विशेषतः प्रायद्वीपीय तहदार समूह और तलछटी चट्टानों द्वारा निर्मित और गहरी तथा चौड़ी घाटियाँ, लम्बी और घुमावदार बारहमासी नदियों द्वारा बनाये गये अनियमित और गहरे कटाव और बड़े पैमाने पर भवन निर्माण में उपयोग आने वाले विभिन्न प्रकार के पत्थरों की प्राकृतिक पूर्ति के महत्वाकांक्षी शासकों को बार-बार अपनी राजधानी बनाने के लिए, जाहिर है कि प्रेरित किया। बनवासी घने जंगली क्षेत्र में वर्धा नदी के तेज गहरे कटानों से घिरा, बलुआ पत्थर की पहाड़ी वाली गहरी घाटी में बादामी और ऊँची पहाड़ी पर तुंगभद्रा से घिरा हम्पी, इन रोचक विशेषताओं के उदाहरण हैं।

### कर्नाटक का इतिहास

कर्नाटक की पुरातनता के संकेत पुरापाषाण युग में मिलते हैं। कर्नाटक का भूमिखंड भारत में सबसे पुराने क्षेत्रों में से एक है। सांस्कृतिक तौर पर यहाँ के लोगों की कला, वास्तुकला, साहित्य, भाषा, धर्म के क्षेत्र में आश्चर्यजनक एवं प्रेरणादायक उपलब्धियाँ हैं। प्राचीन तथा मध्यकाल से ही कर्नाटक सबसे अधिक शक्तिशाली राज्यों में से एक केंद्र रहा है।

नन्द, मौर्य तथा सातवाहन शासन के अतिरिक्त कर्नाटक में विशिष्ट राजवंश जैसे कि बनवासी के कदम्ब और चौथी शताब्दी ई. के मध्य काल में गंगा, बादामी के चालुक्य (500–753 ई.) जिन्होंने नर्मदा से कावेरी तक एक बड़े क्षेत्र पर राज्य किया और ऐसा ही राष्ट्रकूटों ने किया, जिन्होंने कन्नौज के शासकों से भी शुल्क वसूला। कल्याण के चालुक्य (973–1189 ई.) और उनके बाद के सामंत, हैलेबिड के होयेसलों ने बढ़िया मंदिर बनवाये। दूसरे प्रसिद्ध राज्य हैं — विजयनगर राज्य (1336–1646 ई.), बहमनी सुल्तान तथा बीजापुर के आदिलशाही और बहादुर शासक हैदर अली तथा टीपू सुल्तान और कर्नाटक के अंतिम राजवंशी मैसूरु के वाडियार। मुख्य स्थानों पर तथा आवश्यकतानुसार अन्य स्थानों पर सैन्य सुरक्षा निर्माण भी राजनीतिक उथल-पुथल के समय अनिवार्य आवश्यकता बनी।

मस्की, ब्रह्मगिरि इत्यादि में अशोक के समय के आदेश पत्र या राजाज्ञा प्रमाणित करते हैं कि उत्तरी कर्नाटक प्रान्त मौर्य सम्राट अशोक के समय में "स्वर्णनगरी" के नाम से जाना जाता था पर हमारे पास इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि यह दक्षिणी स्थान सुरक्षा के लिए बनाई गयी दीवारों से बंधित अशोक के समय से पहले अथवा उसके तुरंत बाद के समय के हैं। कर्नाटक की दुर्गबंदी मौर्य समय की प्रतीत नहीं होती। मौर्य राज्य विभाजन प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व ई. से तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व ई. तक हुआ, जिसके बाद उत्तरी कर्नाटक पर सातवाहनों का शासन हुआ। पहली बार इस समय में सीमाओं के आस-पास गढ़ बनाने का चलन क्रमशः बढ़ा। प्लिनी ने पूर्वी दक्कन राज्य आंध्र के एक शक्तिशाली राजा का वर्णन किया है जिसके पास एक बड़ी सेना के साथ दीवारों से घिरे 30 नगर थे।

जब सातवाहनों का राज्य प्रभाव कम होने लगा तब कर्नाटक के इतिहास में प्रथम और अग्रतम राज्य वैजयन्ती के कदम्बों का उदय हुआ जो कि आधुनिक समय में बनवासी कहलाता है व उत्तर कन्नड़ जिले में है।

चौथी शताब्दी ई. में दो राज्यों का उदय हुआ— कदम्ब तथा गंग। कदम्ब की राजधानियां तथा उप राजधानियां वैजयन्ती (बनवासी), पलासिका (बेलगाम जिले में हल्सी) तथा उच्चशृंगी

While planning for building forts in these regions, although the architects are well-versed traditionally in the *Shilpa* texts and were following them in their planning and construction of forts, they had to take into consideration the regional ecological conditions such as the rock material, the topography of the region, the river systems etc. Accordingly, in their actual construction governed by the architectural principles, they had to devise certain modifications in the selection of the area, the type of fort and the mode of construction.

The other interesting features of this region were, the thick forests located close to the coastal strip with flourishing ports and with rich mineral potential, the hill ranges especially of the peninsular gneissic complex and of the sedimentary rocks providing naturally secure, deep and wide valleys, the perennial rivers meandering over a long distance resulting in deep curves here and there and the natural supply of building material of different rocks on a large scale obviously prompted the ambitious rulers to have their capitals repeatedly in the region. Banavasi located in the thick forest area surrounded by the deep curve of the river Varadha, the Badami in the deep valley of the sandstone hill, Hampi in the highly elevated hills surrounded by the river Tungabhadra are remarkable instances in this regard.

### History of Karnataka

The antiquity of Karnataka can be traced back to the Paleolithic age. Karnataka's land mass is the oldest in India. Culturally, her people have achieved amazing and inspiring accomplishments in the field of art, architecture, literature, language and religion. Karnataka has also been home to some of the most powerful empires of ancient and medieval India.

Apart from being subject to the rule of the Nandas, Mauryas and Satavahanas, Karnataka came to have indigenous dynasties like the Kadambas of Banavasi and the Gangas from the middle of the fourth century C.E. The Chalukyas of Badami (500-753 C.E.) ruled over wider area from the Narmada to the Cauvery and so did the Rashtrakutas who levied tribute on the rulers of Kanauj. The Chalukyas of Kalyana (973-1189 C.E.) and their later feudatories, the Hoysalas of Halebid built fine temples. The other famous kingdoms are that of the Vijayanagar Empire (1336-1646), the Bahamani Sultans and the Adil Shahis of Bijapur and that of the valiant rulers like Hyder Ali and Tipu Sultan and the last royal line of Karnataka—the Wodeyars of Mysuru. The defence architectural creations within their capital places and also other places were a necessity during the course of such political movements.

The Ashokan edicts at Maski, Brahmagiri etc., provide evidences of the fact that northern Karnataka was a province known as *Suvarnagiri* under the Mauryan emperor Ashoka. But we have no evidence to show that these places in the South were fortified with defence walls before or immediately after Ashoka. In Karnataka there appears to be no fortification during Mauryan period. After the Mauryan empire disintegrated during 1st century B.C.E. – 3rd century C.E., northern Karnataka came under the rule of the Satavahanas. This period witnessed the gradual growth of strongholds in and around their territories for the first time. Pliny gives an account of a powerful king of Andhra country in eastern Deccan possessing 30 walled cities with a big army.

As the rule of Satavahanas receded, the first and foremost kingdom in the history of Karnataka under the name of Kadambas arose at Vijayanti i.e. the modern Banavasi in north Kanara district.

In the fourth century C.E. two kingdoms arose in Karnataka, namely, the Kadambas and the Gangas. The Kadamba capitals and sub-capitals founded at Vijayanti (Banavasi), Palasika (Halsi in Belgaum district) and Uchhasringi



(बेल्लारी जिले में उच्चांगी) में बनाई गयी। अपने समय में राजनीतिक केंद्र बने इन स्थानों का दुर्गीकरण किया गया तथा उनके चारों तरफ गढ़ बनाये गये। गंग राज्य की स्थापना के साथ इसकी राजधानी कोलार और बाद में तालकाड़ में हुई। कर्नाटक के दक्षिणी भाग पर इन्होंने शासन किया। गंगों द्वारा बनाये गये मंदिरों में से कोई भी अब अपने मूल रूप में नहीं पाया जाता परन्तु नवीनीकरण के बाद ये मंदिर अपनी कला तथा वास्तुकला के लिए पल्लव एवं चालुक्य से प्रभावित दिखते हैं। सबसे विशिष्ट योगदान श्रवणबेलगोला की गोम्मता की मूर्ति है।

विशेष रूप से कर्नाटक और सामान्यतः दक्षिण भारत के राजवंशों में से प्राचीन बादामी के चालुक्यों (शिलालेखों के अनुसार वातापी) ने अपनी बहादुरी और साहस के लिए, 7वीं शताब्दी ई. में उत्तर भारत में अपनी पहली पहचान, कन्नौज के हर्षवर्धन से निर्णायक युद्ध करके बनाई, जो कि नर्मदा नदी के तट पर हुआ था।

बादामी की राजसी राजधानी भारतीय कला तथा वास्तुकला का उद्गम मानी जाती है। इसकी दुर्गबंदी पुलकेसी प्रथम ने 543 ई. में की थी। उत्तरी पहाड़ी चोटी पर लिखे शिलालेख में ऐसा ही बताया गया है। ऐहोल में एक प्रकार की सुरक्षा संरचना की घेराबंदी थी, जिसमें आबादी तथा संरचनात्मक मंदिरों को चारों ओर से घेरा हुआ था। ऐहोल में यहाँ वहाँ पाये जाने वाले खंडहर अर्धगोलाकार क्रमबद्ध हैं और आयताकार बुर्ज जो कि दीवारों, झरोखों और ऊपर गोल गुम्बद से सजे दिखाई देते हैं। बादामी के पत्थर काट कर बनाये गये मंदिर तथा गुफाएं, चालुक्यों की वास्तुकला के मूक गवाह हैं। इन गुफाओं का बाहरी भाग सुन्दर नक्काशीदार है, साथ में सुसज्जित खम्भे भी हैं।

राष्ट्रकूटों का शासन 753 ई. में आरंभ हुआ, जब दंतिदुर्ग ने बादामी के चालुक्य, कीर्तिवर्मन द्वितीय को हराया। उन्होंने अपनी राजधानी आरंभ में, पैठण में, जो आजकल महाराष्ट्र में है, तथा उसके बाद मलखेड में बनायी। यह काल कर्नाटक राज्य के इतिहास में कला और साहित्य क्षेत्र में स्वर्णयुग कहा जा सकता है। राष्ट्रकूट अच्छे प्रशासक थे और उनका विशाल राज्य वैभवशाली तथा शांतिप्रिय था। राजमिस्त्री तथा शिल्पकार न केवल सैन्य वास्तुकला, जैसी मलखेड के दुर्ग में देखी जा सकती है, के अनुभवी थे अपितु विशाल पत्थर काट कर बनाये गये ऐलोरा तथा एलीफेंटा के मंदिरों की नक्काशी तथा शिल्पकला के जानकार भी थे। कैलाश मंदिर का स्थापत्य एवं मूर्तिकला, राष्ट्रकूटों को भारतीय कला के इतिहास में एक विशिष्ट स्थान दिलाती है।

बाद के चालुक्य शासक (973-1198 ई.) बादामी के चालुक्यों के वंशज थे। उन्होंने अपना आधिपत्य राष्ट्रकूटों से वापस लिया और कल्याण की राजधानी (बीदर जिले में) वापिस ली। दो शताब्दियों के लम्बे काल तक उन्होंने कर्नाटक के पश्चिमी, मध्य तथा दक्षिण भारत पर राजधानियों तथा उप राजधानियों में बने दुर्गों, जैसे— कल्याण, मोरखिंड (अब महाराष्ट्र) तथा धारवाड़ जिले का लक्कुंड्डी पर अधिकार जमाये रखा। मंदिर कला तथा मूर्तिकला समृद्ध हुई। सम्पूर्ण साम्राज्य के कई स्थानों, जैसे— इत्तागी, लक्कुंड्डी, हावेरी, गडग इत्यादि में अनेक मंदिर बनाये गये।



बसवाकल्याण दुर्ग का दृश्य

View of Basavakalyan fort

(Uchchangi in Bellary district) known as the political centres of the time had been fortified with strongholds around them. The Ganga kingdom was founded with its capital at Kolar and later at Talkad. They ruled the area comprising of the southern portion of Karnataka. No temple built by the Gangas exists today in its original shape but the renovated temples show that their art and architecture were influenced by both the Pallavas and the Chalukyas. However, the most singular contribution is the Gommata statue of Shravanabelagola.

The early Chalukyas of Badami, (Vatapi of the inscriptions) of all the royal dynasties of Karnataka in particular and of south India in general by their valour and adventure made themselves known to the north India, as early as the 7th century C.E. in the decisive encounter with Harshavardhana of Kanauj on the banks of the river Narmada.

The royal capital of Badami considered as the cradle of Indian art and architecture was fortified by Pulakesi I, in 543 C.E. as stated in his inscription on the cliff of the north-hill. Aihole also had a form of defence architecture encircling the whole habitation and the structural temples. The extant remains of the fort now dotted here and there in semi-circular form, at Aihole, reveal the rectangular bastions connected with screen wall crowned by battlements of round top. The rock cut temple caves of Badami are mute testimony to the architecture of the Chalukyas. The facades of these caves are beautifully carved with the well decorated pillars.

The rule of the Rashtrakutas commenced in 753 C.E. when Dantidurga defeated Kirtivarman II of the Chalukyas of Badami. They established their capital initially at Paithan, now in Maharashtra and subsequently at Malkhed. This period was a golden period for arts and literature. Rashtrakutas were good administrators and the vast empire was prosperous and peaceful. The masons and craftsmen not only were experienced in defence architectural style as seen in the fort of Malkhed but also were well-versed in carving out the colossal rock cut temples at Ellora and Elephanta. The sculptures of Kailasa alone are enough to give the Rashtrakutas a prominent place in the art history of India.

The Later Chalukyas (973-1198 C.E.) were the descendants of the Chalukyas of Badami. They recaptured their lost power from the Rashtrakutas with their capital at Kalyana (in Bidar district). During a long span of time over two centuries, they controlled parts of the western, middle and the south India from the capital forts and sub-capital forts like Kalyana, Morkhind (now in Maharashtra) and Lakkundi of Dharwad district, Karnataka. Temple art and sculpture flourished. A large number of temples were built all over the empire at places like Ittagi, Lakkundi, Haveri, Gadag etc.



जलदुर्ग की ध्वस्त दीवार

Wide view of Jaldurga fort

कर्नाटक में संभवतः होयसलों ने अपना शासन गंगों के सामंत बन कर आरंभ किया परन्तु एक शासक राम का अभिलेख सर्वप्रथम 1006 ई. में ही दर्ज किया गया। देवगिरि के यादव राष्ट्रकूटों तथा कल्याण चालुक्यों के सामंत थे और राष्ट्रकूट शासन के विग्रह के बाद स्वतंत्र हो गये। सिंहन द्वितीय (1199–1247 ई.) तथा कृष्णा (1247–1261 ई.) प्रसिद्ध और सफल शासक थे। वे मूर्तिकला में पारंगत थे। हैलेबिड के होयसलेश्वर मंदिर में 700 फीट से अधिक की चौखटें हैं। 2000 से अधिक हाथी और शेर की मूर्तियाँ अलग-अलग मुद्राओं में बनी हुई हैं।

परवर्ती चालुक्यों के पतन के कारण दक्षिणी सल्तनतों का क्रमवार विकास हुआ क्योंकि एकीकृत शक्तिशाली हिन्दू शासन देश के इस भाग में नहीं था। बहमनी सल्तनत दक्षिण भारत का पहला स्वतंत्र मुस्लिम राज्य था। इस सल्तनत की स्थापना 3 अगस्त, 1347 में सूबेदार अलाउद्दीन हस्सन बहमन शाह ने की। बहमनियों ने अपना अधिकार दक्षिण के विजयनगर के हिन्दू राज्य को जीत कर आरंभ किया। बहमनियों का गढ़ गुलबर्गा था। गुलबर्गा दुर्ग की अत्यंत शक्तिशाली तथा सैन्य अभियांत्रिक विशेषज्ञता आज भी उसके खंडहरों में देखी जा सकती है। इस दुर्ग में फ्रांसीसी व जर्मन क्रुसेडर्स के फ्रांकिश कासल, जैसे कि "क्रैक डी शेवेलियर" अथवा सेलजुक के अलेप्पो की स्पष्ट छाप देखी जा सकती है।

बहमनी शासकों को यह जानने में अधिक देर नहीं लगी कि गुलबर्गा उनके दुश्मन विजयनगर से पास है और राजधानी बनाने के लिए सुरक्षित स्थान नहीं था। उसकी तुलना में बीदर अधिक सुरक्षित तथा उत्तम जलवायु वाला स्थान है। सन् 1429 में अहमदशाह वली ने बहमनी राजधानी गुलबर्गा से बीदर स्थानांतरित कर दी। पुराने दुर्ग का नवीनीकरण किया गया और नए भाग जोड़े गये जिसके ऊपर तोपें स्थापित की जा सकें।

बीजापुर का आदिलशाही राज्य, बहमनी राज्य (1347–1518 ई.) के पांच उप राज्यों में से एक था। ये ज्ञान, कला तथा वास्तुकला के संरक्षक थे। बीजापुर का नगर दुर्ग अपनी वास्तुकला के वैभव का एक चामत्कारिक नमूना था तथा दिल्ली व आगरा जैसी प्रशंसा की पात्रता रखता है। बीजापुर कला का उद्गम और मिश्रित संस्कृति का केंद्र बना। यहाँ के अनोखे और विशिष्ट स्मारक आदिलशाही पद्धति को दर्शाने वाली एक जीती जागती धरोहर हैं। उन्होंने 1489 से 1686 ई. तक राज्य किया जब तक कि मुगल बादशाह औरंगजेब द्वारा उनका राज्य न हड़प लिया गया।

विजयनगर राज्य (1336–1565 ई.), तुंगभद्रा नदी के दाएँ तरफ बसा हुआ था, मध्यकाल में दक्षिणी भारत का यह एकमात्र सशक्त राज्य था जिसने उत्तर भारत की मुस्लिम शक्तियों के विरुद्ध टक्कर ली। 1336 ई. में संगमा के पुत्र, दोनों भाइयों हरिहर तथा बुक्का ने एक नए राज्य की नींव डाली। 1354 ई. में हरिहर के पश्चात् सिंहासनारूढ़ हुए बुक्का ने एक नयी राजधानी विजयनगर बनाने का काम शुरू किया। 'विजय का नगर', विजयनगर पर चार राजवंशों ने शासन किया जिनके नाम हैं—संगमा, सलुव, तुलुव तथा अरविदु। तुलुव वंश के कृष्णदेव राय (1509–1529 ई.) के शासन काल में विजयनगर शक्ति और सफलता की चोटी पर पहुंचा।

14वीं शताब्दी से 16वीं शताब्दी ई. तक प्राचीन विजयनगर राजसी नगर केंद्र था जिसके चारों ओर रियासतें थीं। विदेशी पर्यटक जैसे कि फारसी पर्यटक अब्दुर रज्जाक जो 1440 ई. में विजयनगर आया था, के वर्णन के अनुसार राजमहल के द्वार से पहले 6 दुर्गबंदियाँ थीं।



बीजापुर दुर्ग का प्रवेश

Entrance to Bijapur fort

The Hoysalas perhaps started their reign in Karnataka as feudatories of the Gangas but the first record of a ruler is that of Rama in 1006 C.E. The Yadavas of Devagiri were the feudatories of the Rashtrakutas and the Chalukyas of Kalyana who became independent after the Rashtrakuta empire disintegrated. Singhana II (1199-1247 C.E.) and Krishna (1247-1261 C.E.) were very famous and successful rulers. They excelled in sculptures. The Hoysaleswara temple of Halebid has over 700 feet of panels. There are more than 2000 elephants and tigers in various poses.

The fall of the later Chalukyas paved the way to the gradual rise of Deccan Sultanates, as there was no centralized power of Hindu order to control the affairs of this part of the country. Bahamani Sultanate was the first independent Islamic kingdom in South India. The Sultanate was founded on 3 August 1347 by Governor Ala-ud-Din Hassan Bahman Shah. The Bahamani contested the control of the Deccan with the Hindu Vijayanagar empire to the south. Gulbarga was a stronghold of the Bahamanis. The immensity of strength and sophistication of military engineering of the Gulbarga fort amid the desolation is still very visible even today. The fort is clearly marked by knowledge of the Frankish castles of the Crusaders, like Krak des Chevaliers, or Aleppo of the Seljuks.

The Bahmani rulers did not take too long to realize that Gulbarga being nearer to their rival Vijayanagar was not too secure a place for the capital. Comparatively, Bidar was more secure and also climatically better. In 1429 Ahmad Shah Wali shifted the Bahamani capital from Gulbarga to Bidar. The old fort was renovated. New additions were made so that the cannons could be mounted on the fort.

The Adil Shahi kingdom of Bijapur, one of the five off-shoots of the Bahamani kingdom (1347-1518) were great patrons of learning, art and architecture. The architectural splendors of the city fortress Bijapur are truly a marvel, deserving the kind of appreciation usually reserved for Delhi and Agra. Bijapur became the cradle of cultures and nucleus of composite cultures with the unique monuments of distinct, Adil Shahi style which are living heritage. They ruled from 1489 to 1686 till the kingdom was annexed by the Mughal emperor Aurangzeb.

The Vijayanagar Empire (1336-1565 C.E.) founded on the right bank of Tungabhadra river was the only empire in the medieval South India, which rose into mighty power against the Muslim pressure from the north. In 1336 two brothers, Harihara and Bukka, the sons of Sangama, laid the foundations of the kingdom. It was in 1354 Bukka succeeded Harihara and immediately began work on a new capital, Vijayanagar, City of Victory. It was ruled by four dynasties namely, the Sangamas, Saluvas, Tuluvas and the Aravidu. Under Krishna Deva Raya (1509-1529 C.E.) of the Tuluva dynasty, the kingdom of Vijayanagar reached its peak of power and sophistication.

The ancient city of Vijayanagar was the urban core of the imperial city and the surrounding principalities of the capital of the Vijayanagar empire during the 14th



गुलबर्गा दुर्ग में जामिया मस्जिद Jamia Mosque in Gulbarga fort

पर्यवेक्षण बुर्ज के लिए पथरीली पहाड़ियां प्रहरी का काम करती थीं तथा ग्रेनाइट के गोल पत्थर मंदिर निर्माण में कच्चे माल के काम आते थे।

विजय नगर की दुर्गबंदी की बाहरी सीमा से आरंभ हुई रियासतें, उत्तर में अनेगुंडी से लेकर दक्षिण में होसपेट तक फैली 650 वर्ग कि.मी. का क्षेत्रफल घेरती हैं। पुरातत्त्ववेत्ताओं ने इस राजधानी क्षेत्र को कई भागों में बांटा है। उनमें से दो मुख्य – धार्मिक केंद्र तथा राजसी केंद्र हैं। धार्मिक केंद्र अधिकतर दक्षिणी किनारे के साथ फैला हुआ है तथा यहाँ सबसे अधिक धार्मिक संरचनाएं बनी हुई हैं। राजकीय केंद्र अपनी सैन्य तथा असैन्य संरचनाओं के लिए दर्शनीय है। राज्य शक्ति का केंद्र भी इसी भाग में स्थित था। 1336 ई. में विजयनगर राज्य की स्थापना के बाद ही, प्रभावशाली तौर पर राजनीतिक, सामाजिक तथा धार्मिक सभी कामकाजी व्यवस्थाएं एक ही महाशक्ति, विजयनगर प्रशासन केंद्र के अधीन लायी गयीं।

विजयनगर राज्य ने मुख्यतः अपने नगर हमलों से सुरक्षा की दृष्टि से बनवाए थे। पूरा नगर ही एक दुर्ग था। बड़े-बड़े पत्थरों और मिट्टी की दीवारों से बना, यह दुर्ग नगर पहाड़ी पर स्थित था और इसके चारों ओर पर्यवेक्षण बुर्ज बने हुए थे। महानगर के सभी प्रवेशद्वार तथा अन्य आवश्यक स्थानों पर विशाल दुर्गबंदी थी। अन्य सुरक्षा के उपायों में, सड़कों के किनारे, द्वार पर तथा पहाड़ी की चोटी पर बनायी गयी चौकी तथा छावनियां थीं जिनसे दूर तक देखा जा सके। इस नगर के खंडहर, हम्पी के खंडहर के सन्दर्भ में जाने जाते हैं और यूनेस्को विश्व सांस्कृतिक धरोहर घोषित हैं।

आरंभिक 16वीं शताब्दी में विजयनगर शासक अपनी शक्ति तथा सत्ता की चरम सीमा पर थे तथा भारत के इतिहास में महान शासकों में गिने जाते हैं। 10 कि.मी. वर्ग में थोड़ी सी बची दुर्गबंदी की कुछ इमारतों में विजयनगर के पूर्व वैभव की झलक मिलती है।

हम्पी, उत्तर कर्नाटक के बेल्लारी जिले में स्थित है। अब यह दक्षिणी भारत में फैले, ऐतिहासिक विजयनगर साम्राज्य का एक खंडहर-राजधानी नगर मात्र है, जो आधुनिक हम्पी नगर के चारों ओर फैला हुआ है।

विजयनगर शासकों की अत्यंत कीमती धरोहर है उनकी कला तथा वास्तुकला। उदाहरण के लिए विट्ठल के मंदिर परिसर में पत्थर से बने सुंदर रथ, हम्पी में बने विशालकाय नरसिंह तथा गणेश मूर्तियाँ इत्यादि। हम्पी, अनेगुंडी तथा लेपाक्षी के मंदिरों में अद्भुत चित्रकला बनी हुई है। वीरुपाक्ष मंदिर के 'शिखर मंडप' 1510 ई. में कृष्णदेव राय द्वारा बनाये गये थे।

विजयनगर साम्राज्य के पतन के बाद उत्तर कर्नाटक में कोई बड़ी सत्ता नहीं रही। बीजापुर के आदिलशाहियों का अधिकार तुंगभद्रा के सम्पूर्ण उत्तरी प्रदेश पर था।



विजयनगर दुर्ग का तलरिघट्टा द्वार  
Talarighatta gate of Vijayanagar fort

century to 16th century C.E. Accounts by foreign travellers such as Abdur Razzak, the Persian who visited Vijayanagar in 1440, mention six fortifications before the gates to the royal palace. The rocky hillocks made excellent sentinel points for watch towers and granite boulders provided the raw material for temple construction.

Starting at its outermost fortifications, the principality of Vijayanagar spans from Anegondi in the north to Hospet in the south and covers a total area of 650 square kilometers. Archaeologists have divided the capital area into many zones. Of these, the major two zones are the Sacred Centre and the Royal Centre. The former, generally spread along the south bank, is characterized by the highest concentration of religious structures. The Royal Centre is notable for its stately structures, both civil and military. The very seat of power of the empire was located at the core of this area. It is only with the founding of the Vijayanagar empire in 1336 C.E., the political, social and religious affairs of this region were brought effectively into order under one of the most powerfully centralized control i.e. Vijayanagar administration.

The Vijayanagar empire created its cities primarily for protection against invasion. The city itself was a fortress and designed as such in every possible way. It was built of massive stone and earthen walls, with hilltop fortresses and watch towers scattered across its length and breadth. Massive fortifications stood at every possible entry into the main metropolis and in other crucial locations. Additional defensive features were watch-posts and bastions located along roads, gates and hilltops that provided maximum visibility. The ruined city is a UNESCO World Heritage Site, known in that context as the Ruins of Hampi.

At the zenith of their power and authority during the early 16th century, Vijayanagar kings were among the greatest historical rulers of India. Of the fortifications little survives, over the ten square mile site, there are still some buildings left to give an impression of Vijayanagar's former splendour.

Hampi is situated in Bellary district in northern Karnataka. It is the now-ruined capital city that surrounds modern-day Hampi, of the historic Vijayanagar Empire which extended over the southern part of India.

There is a very rich legacy of the art and architecture of the Vijayanagar rulers. Fine example of this art is the beautiful stone chariot in the enclosure of Vithala temple, the monolithic statues of Narasimha and Ganesha at Hampi etc. The temples at Hampi, Anegundi and Lepakshi have excellent paintings. The *Shikhara* (gate tower), *Mandapas* (pillar halls) of Virupaksha temple was built by Krishnadevaraya in 1510 C.E.

After the fall of the Vijayanagar empire, north Karnataka had no major ruling authority. The Adil Shahis of Bijapur held all the territory of north of the Tungabhadra river.



विजयनगर दुर्ग का गुंबद द्वार Domed gate of Vijayanagar fort

वाडियारों ने दक्षिणी कर्नाटक में मैसूर राज्य स्थापित किया। मैसूर को 'महलों का नगर' के नाम से भी जाना जाता है। 'मैसूर महल' विशेष रूप में पुराने दुर्ग से संबंधित है जो कि दो दरबार सभागारों के साथ उनका आधिकारिक निवास था। वाडियार राजाओं ने पहले 14वीं ई. में मैसूर में महल बनवाया। परन्तु बाद में (1578–1617 ई.) वाडियार राजा ने अपनी राजधानी द्वीप दुर्ग नगर श्रीरंगपटनम में 1610 ई. में स्थानांतरित कर दी और मैसूर ने अपना शक्ति का केंद्र होने का महत्त्व खो दिया। 1762 ई. में हैदर अली के सत्ता में आने पर मैसूर का महत्त्व और भी कम हो गया। 1787 ई. में उसके बेटे टीपू सुल्तान ने पूरा दुर्गीय नगर महल समेत तोड़ कर पास में ही नया नगर नज़राबाद (आजकल मैसूर का भाग) बनाया, जिसमें पुराने टूटे हुए दुर्ग की निर्माण सामग्री का उपयोग किया गया। टीपू सुल्तान के 1799 में पतन के पश्चात् अंग्रेजों ने नयी सीमाएँ निर्धारित कर मैसूर साम्राज्य की राजधानी मैसूर में स्थानांतरित की। यथासमय नज़राबाद दुर्ग को तोड़कर उसकी निर्माण सामग्री का उपयोग पुनः मैसूर दुर्ग के निर्माण में किया गया।

कर्नाटक तथा तमिलनाडु क्षेत्र का बड़ा भाग शिवाजी के अधिकार में था। 1675 ई. में उन्होंने बेलगाम जिले में रामदुर्ग दुर्ग तथा कर्नाटक के गडग जिले में नार्गुड दुर्ग बनाया। इन पर 1691–92 ई. में औरंगजेब ने अपना अधिकार कर लिया परन्तु 1706–1707 ई. में रामराव दादाजी भावे ने पुनः अधिकृत कर लिया। माना जाता है कि गडग जिले में स्थित गजेन्द्रगढ़ दुर्ग भी शिवाजी द्वारा बनाया गया था।

दक्षिण में मुगलों ने आक्रमण किये परन्तु अंत में 1800 ई. में मराठों ने उत्तर कर्नाटक अपने अधीन कर लिया। यहाँ फ्रांसीसी, अंग्रेज तथा पुर्तगाली सभी ने समय-समय पर अपनी प्रभुसत्ता दिखायी। अंग्रेजों ने अपना प्रभाव बढ़ाया और पेशवा बाजीराव द्वितीय के पतन के बाद उत्तरी कर्नाटक निज़ाम के अधीन हो गया तथा बाकी सारा कर्नाटक अंग्रेजों ने हथिया लिया। हैदर अली तथा टीपू सुल्तान के मैसूर राज्य पर शासन के समय पूर्व ही दक्षिण कर्नाटक के कुछ भाग, अंग्रेजों ने अपने अधीन कर लिये थे। परन्तु मैसूर साम्राज्य का अस्तित्व 1947 ई. में भारत के स्वतंत्र होने तक बना रहा। कर्नाटक राज्य का आधुनिक स्वरूप 1 नवम्बर, 1956 को बना। 1 नवम्बर, 1973 से 'मैसूर' को 'कर्नाटक' के रूप में परिवर्तित किया गया।

इसी वर्णन के अनुसार कर्नाटक में, विभिन्न राज्यों तथा राजवंशों के, विभिन्न प्रकार के दुर्ग देखे जाते हैं। उन्होंने गढ़ बनवाए अर्थात् उन्होंने राजधानियों तथा उप राजधानियों के चारों ओर घेराबंद दीवारें बनवाईं, जिनमें अस्त्र-शस्त्र तथा तत्कालीन युद्धकलाओं की तकनीक का ध्यान रखा गया। अभेद्य परकोटों को भेदने के लिए प्रयोग होने वाली तोपों से दुर्गों की मजबूती पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। अपितु, दुर्ग कारखानों से सुसज्जित थे जिनमें लोहार, तोप ढालने तथा निर्माण का कार्य करते थे तथा नये हथियारों को गढ़ने का काम भी करते थे। इससे दोनों ही पक्ष संतुलन में रहते थे।



कर्नल बेली के तहखाने का आंतरिक दृश्य (सेरिंगपटम दुर्ग)  
Colonel Baillie's Dungeon of Seringapatam fort

The Wodeyars established the Mysore rule in Southern Karnataka. Mysuru is commonly described as the City of Palaces. However, the term "Mysore Palace" specifically refers to one within the old fort which was their official residence with two durbar halls. The Wodeyar kings first built a palace in Mysuru in the 14th century. But Raja Wodeyar (1578-1617 C.E.) shifted his capital to the island fort town of Srirangapatnam in 1610 and Mysuru lost its importance as a seat of power. Mysuru further lost its importance when it was taken over by Hyder Ali in 1762. But his son Tipu Sultan demolished the entire fort town including the Palace in 1787 and used the fort material to build a new town nearby known as Nazarabad (now part of the Mysore City). The old Mysore dynasty was restored after the fall of Tipu Sultan in 1799 by the British and they shifted the capital of the newly defined territory of Mysore Kingdom to Mysuru. In due course the Nazarabad fort was dismantled and the material made its way back in building the Mysore fort once again.

Shivaji possessed extensive areas in Karnataka and Tamil Nadu. He built Ramdurg fort in Belgaum district and Nargund fort in Gadag district of Karnataka in 1675. They were taken by Aurangzeb in 1691-92 and recaptured in 1706-07 by Ramrao Dadaji Bhawe. Gajendragad fort located in the Gadag district is also believed to be built by Shivaji.

The Mughals made their forays down south and finally the Marathas by 1800 C.E. subjugated the whole of northern Karnataka. The French, British, Portuguese appeared on the scene. The British soon dominated and with the fall of the Peshwa Baji Rao II, portions of northern Karnataka were taken over by the Nizam and the rest by the British. Portions of southern Karnataka were taken over earlier by the British during the rule of Hyder Ali and Tipu Sultan in Mysuru. However the Mysore kingdom continued till Independence in 1947. The state of Karnataka in its present shape came into existence on November 1, 1956. 'Mysore' was changed to 'Karnataka' with effect from November 1, 1973.

With this brief account, one finds forts of different kingdoms and dynasties and of different types and kinds in Karnataka. They created strongholds i.e. fortified walls around their capital cities and sub-capital cities keeping in view the arms and armor and the then prevalent science of wars. The use of cannons to breach impregnable ramparts did not in any way reduce the strength of the fort. Instead, forts equipped themselves with *karkhana*, the workshops, run by blacksmiths who cast cannons and manufactured new weapons so that both sides were evenly balanced.



सेरिंगपटम दुर्ग में टीपू का शव पाया गया था  
Tipu's body was found at Seringapatam fort

सत्ता प्राप्त करने के संघर्ष में लगातार किये जाने वाले युद्धों में दुर्ग तथा दुर्गीकृत बस्तियां, शक्ति प्रदर्शन के महत्त्वपूर्ण प्रतीक थे। दुर्ग एक शासक की शक्ति का मापदंड था। दुर्ग न केवल सैनिक छावनियों की रक्षा के लिए थे, परन्तु उनमें बने कुछ आकर्षक भव्य महल भी थे जहाँ जीवन की चहल पहल थी, मंजीरों की आवाज गूंजती थी कुछ महान राजवंशों की कहानियां थीं, साथ ही मोहक, भव्य चमक-दमक और उत्तराधिकार के लिए की गयी निर्मम शाही हत्याओं के साक्ष्य थे। इस प्रकार इतिहास के किसी भी युग के विषय में लिखने के लिए उस समय के दुर्ग मुख्य विषय होते हैं। वही ऐश्वर्य के उत्थान तथा पतन को दर्शाते हैं। ये धरोहर तथा संस्कृति के अवशेष, जो उस समय की भव्यता तथा संपन्न अद्भुत अतीत का आइना हैं, देश की अमूल्य संपत्ति हैं अर्थात् आने वाली पीढ़ियों के लिए इन्हें सुरक्षित रखना आवश्यक है।

In the constant struggle for power, forts and fortified settlements were a potent symbol of authority. Forts were the measure of a monarch's strength. Forts were not only simply inanimate buildings serving a military purpose; they housed some of the most magnificent palaces. They were alive and echoing to the sounds and cymbals of some of the great dynasties, witness to regicides and ruthless succession battles, and carrying within their bastions glamour and glitter unsurpassed. Thus, when writing history of any era, of any period, it is the forts of that period which dominate the rise and fall of fortunes. These heritage sites and cultural remains of different periods reflect its glorious and fascinating past. They are an invaluable treasure of the nation and need to be preserved and protected for posterity.



पहाड़ी पर गढ़ बेल्लारी दुर्ग

Citadel on the summit of the rock, Bellary fort



इब्राहीम रोज़ा (बीज़ापुर दुर्ग में) Ibrahim Roza in Bijapur fort



बादामी दुर्ग का दूरवर्ती दृश्य A distant view of Badami fort

## दुर्ग शब्द संग्रह / शब्दावली

आराबस्क – विशेष इस्लामिक आभूषण, जो पुष्पीय व ज्यामितीय रूपों में होता है।

आरकेड, वीथिका – स्तंभों या सेतुबंधों पर उकेरी गयी मेहराबों की शृंखला।

आर्चेज, मेहराब – ऐसी संरचना, जिसके नीचे खाली स्थान हो और जो ऊपर के भार को संभाले रखे (उदाहरण के लिए पत्थर की दीवार में बना हुआ द्वार)।

अरक्युएट, धन्वाकार – धरन की जगह मेहराबों का इस्तेमाल करने वाली निर्माण शैली।

एक्वीडक्ट, कृत्रिम जल सेतु – जल आपूर्ति का साधन अथवा जहाज या नाव खेने लायक नहर जो पानी पहुँचाने के लिए बनायी जाती है।

अर्थशास्त्र – सैन्य रणनीति, राजकार्य व अर्थनीति पर प्राचीन भारतीय पुस्तक।

एशलर मेसनरी, पत्थर की राजगीरी या चिनाई – पत्थर तराश कर चिनाई करना।

बावली – सीढ़ीदार कुआँ।

बारबिकन, प्राचीर – दुर्ग के द्वार पर बाहर की ओर निकला हुआ पर्यवेक्षण बुर्ज।

बास्टियन, छावनी – मुख्य दुर्गकृत घेरे में बाहर निकली हुई संरचना।

बुर्ज – उच्च स्तंभ।

केनन, तोप – एक ऐसा शस्त्र जिसमें बारूद अथवा अन्य विस्फोटक या प्रणोदक पदार्थ का गोला भर कर प्रक्षेपित किया जा सके।

छतरी – स्मारक पर बना चंदवा।

सिटडेल, गढ़ – आंतरिक घेराबंद क्षेत्र जहाँ राजा रहते थे।

कोरबेल, टोडा – पत्थर का बाहर निकला हुआ ढांचा जो भार उठा सके, शिल्पकला में टोडा कहलाता है।

## Fort Glossary

Arabesque - typical Islamic ornament, intertwining of floral and geometrical forms.

Arcade - range of arches raised on piers or columns.

Arches - An arch is a structure that provides a space while supporting weight (e.g. a doorway in a stone wall).

Arcuate - building style using arches in place of beams.

Aqueduct - An aqueduct is a water supply or navigable channel constructed to convey water.

Arthashastra - ancient Indian treatise on military strategy, statecraft and economy.

Ashlar Masonry - Stone masonry using dressed stones.

Baoli - stepwell.

Barbican - A projecting watch-tower over the gate of a fort.

Bastion - It is a structure projecting outwards from the main enclosure of a fortification.

Burj - tower

Cannon - A cannon is any piece of artillery that uses gunpowder or other usually explosive-based propellants to launch a projectile.

Chattris - Memorial canopy or a small domed kiosk.

Citadel - The inner fortified area where the king stayed.

Corbels - In architecture a corbel (or console) is a piece of stone jutting out of a wall to carry any weight.



बीदर दुर्ग का रंगीन महल  
Rangin Mahal of Bidar fort



रायचूर दुर्ग की चिनी हुई दीवार  
Wall made of ashlar masonry, Raichur fort



विजयनगर दुर्ग का सीढ़ीदार तालाब  
Stepped tank, Vijayanagar fort



बीदर दुर्ग का तरकश महल  
Tarkash Mahal of Bidar fort

क्रेनेलेशन, मोर्चा चहारदीवारी – फाँकदार दीवार।

दुर्ग – किला।

एम्ब्रेसर – मुंडेर में बने छेद, जिनमें बन्दूक की नाली डाल कर दागा जा सके तथा उनसे झाँक कर बाहर देखा जा सके।

गिरिदुर्ग – पहाड़ी किला।

हौज़ – जल कुण्ड।

जलदुर्ग – पानी से रक्षित दुर्ग।

जामा मस्जिद – शुक्रवार या सभा वाली मस्जिद।

लिंगल, चौखट – एक भवन का भारवाही घटक, जिस पर सजावटी आभूषण की तरह शिल्पकला बनी हो। अधिकतर दरवाजों और खिड़कियों पर पाया जाता है।

मरलोन, कंगूरे – मुंडेर के ऊपर बारी-बारी से बने छेद तथा ऊँचे हिस्से। इनसे पीछे खड़े सुरक्षित सिपाही छेदों में से बाहर बन्दूक दाग सकते हैं।

मेशिकोलेशन, बाहर निकली मुंडेर – प्रवेश द्वार के ऊपर बाहर की तरफ निकली हुई मुंडेर जिस पर खड़े होकर हमला करने वाले दुश्मनों पर ठोस या तरल पदार्थ फेंक सके।

मोट, खाई – गहरा और चौड़ा नाला, सूखा या पानी से भरा हुआ, जो दुर्गकृत स्थान को चारों ओर से घेरे।

पुर – मजबूत मिट्टी से बना हुआ बांध।

पेरापेट, मुंडेर – जिसे जाली या झरोखा भी कहा जाता है। परकोटे के किनारे 1 से 2 मीटर ऊँची दीवार होती है जो सिपाहियों को दुश्मनों की गोलाबारी से बचाती है।

पोस्टर्न, चोर दरवाजा – दुर्ग के पीछे की दीवार में बना छोटा सा दरवाजा।

स्कार्प, कगार या प्रपात – लगभग सीधी चट्टान या खड़ी चट्टान, यह प्राकृतिक अथवा कृत्रिम हो सकती है।

तलाव – पानी से भरा टैंक।

वनदुर्ग – जंगल में स्थित किला।

Crenellation - battlements or loopholes.

Durg - fort.

Embrasure - Openings made into the parapet for observation and firing.

Giridurga - hill fort.

Hauz - pool or tank.

Jaladurga - fort secured by a water body.

Jama Masjid - congregational or Friday mosque.

Lintel - A lintel can be a load-bearing building component, a decorative architectural element, or a combined ornamented structural item. It is often found over doors and windows.

Mahal - palace.

Mahidurga - mud fort.

Merlons - The alternate high parts of a parapet between the embrasures. They afforded protection to the soldiers standing behind it and firing through the loopholes.

Machicolations - Openings made in the floor of a projecting gallery on top of the gateway for dropping solids or liquids on an attacking enemy.

Moat - It is a deep broad ditch, either dry or filled with water that surrounds a fortified place.

Naradurga - fort protected by able-bodied men.

Pur - Strengthened earthwork

Parapet - Also called battlement. This is a 1 to 2m high wall built along the edge of a rampart to protect soldiers from the fire of the enemy.

Postern - A small back door made into the wall of a fort.

Scarp - A near vertical rock face or cliff either natural or artificially made.

Talao - small lake or pond.

Vanadurga - forest fort.



बीजापुर दुर्ग का उपली बुर्ज  
Upli Burj, Bijapur fort



मालिक-ए-मैदान, बीजापुर दुर्ग Malik-e-Maidan, Bijapur fort



बसवाकल्याण दुर्ग

Basavakalyan fort

## छात्रों तथा अध्यापकों के लिए रचनात्मक गतिविधियाँ

### CREATIVE ACTIVITIES FOR STUDENTS AND TEACHERS

इस विषय वस्तु के साथ दिए गये 25 चित्र-कार्ड कक्षा में अथवा स्कूल में मुख्य स्थानों पर प्रदर्शित करें। चित्रों को गत्ते पर चिपका कर, शीर्षक दे कर उनका वर्णन स्थानीय भाषा में किया जा सकता है। इसका अध्ययन गहराई से करने के लिए कुछ गतिविधियाँ भी की जा सकती हैं, जिनसे शिक्षा में संस्कृति और वास्तुकला का महत्त्व दर्शाया जा सके। शिक्षक एक बार में थोड़े ही चित्रों के साथ रोचक गतिविधियों के द्वारा सिखाने का कार्य कर सकते हैं। ऐसी ही कुछ गतिविधियों का सुझाव नीचे दिया गया है।

भारत के बड़े खाका मानचित्र में, देश के विभिन्न दुर्गों के स्थानों को चिह्नित करें। इस विषय-वस्तु में दिए गए दुर्गों के चित्रों के स्थानों को खोजें।

भारत में बने दुर्गों का अध्ययन करके, उनको बनाने वाले राजाओं के बारे में सूचना एकत्रित करें।

- दुर्ग के आस-पास की जलवायु
- प्राकृतिक परिवेश, आस-पास की नदियाँ, पहाड़ तथा वनस्पतियाँ
- इन दुर्गों को बनाने तथा रहने वाले लोगों के बारे में व उनके व्यवसाय के बारे में
- उस समय के नृत्य, संगीत, नाट्य तथा हस्तकला इत्यादि के विषय में
- रीति, रिवाज़, स्थानीय पर्व, उत्सव – उनसे जुड़ी कथाएँ
- साथ में दी गयी सांस्कृतिक विषय-वस्तु को देख कर रेखा चित्र बनाना तथा कुछ स्मारकों की रूपरेखा बनाना।

विषय वस्तु में दिए गये दुर्गों के विषय में, भारतीय इतिहास के प्राचीन तथा मध्यकालीन समय के अनेक भ्रमणकर्ता/इतिहासकारों ने इन स्मारकों का बड़ा ही जीवंत सजीव वर्णन किया है तथा इनके कुछ रेखा चित्र भी मिलते हैं। ऐसे ही यात्रा विवरण, वृत्तांत तथा रेखाचित्रों का संग्रह करें। इन विवरणों की शैली, उच्चारण तथा समकालीन उसी क्षेत्र के स्मारकों की समीक्षा करें।

अलग-अलग दुर्गों की बुनियादी योजनाओं का अध्ययन करें तथा उनकी समानताओं और असमानताओं की तुलना करें। इसी प्रकार की बुनियादी योजनाओं का अध्ययन अपने स्कूल कॉलेज तथा घर का भी किया जा सकता है जिसमें खिड़की, दरवाजे इत्यादि के वास्तुशास्त्र का विवरण हो।

#### धार्मिक सिद्धांतों को समझना

सभी धर्मों का ध्येय, हमें अधिक अच्छा और समृद्ध जीवन जीने में हमारी सहायता करने का है। धर्म के बाहरी आविर्भाव जैसे कि प्रथा या रीति रिवाज भिन्न-भिन्न होते हैं और इसके कारण ऐतिहासिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा भूभौतिकीय होते हैं। अनेक धार्मिक रीतियाँ तथा संस्कार वार्षिक खेती-चक्र तथा जीवन उत्सव से जुड़े हैं। पुराने समय के वास्तुकारों, शिल्पकारों तथा चित्रकारों पर इन धार्मिक धारणाओं का प्रभाव पड़ा जिसके अनुसार स्मारक इत्यादि बनाने में उन्होंने प्रत्येक धर्मानुसार चिह्न तथा नमूने उपयोग किये।

The 25 picture-cards provided in this package can be displayed in the classroom or any prominent place in the school. The pictures may be stuck on cardboard with the title and description in regional languages. It can also be studied in-depth with activities that bring out the educational value of Indian art and architecture. The teachers can work with a few pictures at a time ensuring students' enjoyment in learning by involving them in some activities suggested below:

In a large outline map of India, mark the sites of various forts of our country. Find out the location of the forts given in the pictures in this package.

Make a study of the forts in India and collect information about the kings and emperors who built these forts.

- Climate of the location of the forts.
- Natural surroundings, rivers, mountain range and the flora and fauna.
- People who built and lived in these forts, their occupation, etc.
- Music, dance, drama, craft, etc. of the period.
- Customs, regional festivals and associated myths.
- Make sketches/rough outlines of some of the monuments from the pictures provided in the cultural packages.

The forts mentioned in this package were visited by a number of travellers/historians in the ancient and medieval period of Indian history and these people have left a vivid and interesting account of these monuments including the drawing/sketches. Collect such travelogues/memoirs/sketches. Notice interesting details in these travelogues such as the style of description, pronunciation of places and other contemporary monuments in that area.

Collect and study the ground plans of different forts and find the similarities and differences. Similar studies of ground plans can also be made of your school, home or college showing windows, doors and other architectural details.

#### Understanding Religious Concepts

All religions aim at helping us to lead better and richer lives. The outward manifestations of religion such as rituals, customs differ from one another for historical, economic, political and even geophysical reasons. Many religious rituals and ceremonies are linked with annual agricultural cycle and celebrations of life. Religious beliefs have influenced the architects, sculptors and painters of the bygone era to create beautiful monuments using specific symbols and motifs pertaining to each religion.

Invite your students to study the religions and people of India and collect information on each religion such as Hinduism, Buddhism, Christianity, Islam, Jainism, Sikhism and others.



अपने शिष्यों को भारत के विभिन्न धर्म और व्यक्तियों के विषय में अध्ययन करने के लिए प्रेरित करें तथा हिन्दू, बौद्ध, इसाई, इस्लाम, जैन, सिक्ख तथा अन्य धर्मों के विषय में जानकारी एकत्र करने को कहें।

वास्तुशिल्प के विषय में प्राचीन लेखों में विभिन्न दुर्गों का वर्णन किया है। दुर्ग एक घेराबंद निर्माण है, अधिकांशतः यह सारे नगर को अपनी दीवारों में घेराबंद करता है। इन लेखों में भूमि, चट्टान, पानी अथवा द्वीप तथा जंगल और रेगिस्तान के दुर्गों का वर्णन भी मिलता है।

विद्यार्थियों को शैक्षणिक पर्यटन के लिए आसपास के किसी दुर्ग को देखने ले जाया जा सकता है अथवा उनसे किसी विशिष्ट क्षेत्र के ऐतिहासिक वास्तुशिल्प का अध्ययन करवाया जा सकता है।

एक परियोजना बनवाई जा सकती है जिसमें हमारे देश के दुर्गों के विकास का इतिहास हो।

दुर्ग वास्तुशिल्प से संबंधित शब्दों तथा उनके अर्थों की सूची बनाएं, जिनमें कुछ शब्द जैसे गढ़, कोट, मुंडेर, कंगूरे, खाई इत्यादि सम्मिलित किये जा सकते हैं।

हमारे देश के विभिन्न दुर्गों के नामों के विषय में जो भी जानकारी एकत्र कर सकते हैं उसे एकत्र करके एक कहानी लिखें, जिसमें बताएं कि वह नाम क्यों दिया गया।

परिकल्पना करें कि आप एक मध्य कालीन दुर्ग में रहते थे और अपना जीवन एक वास्तुकार, एक राजा अथवा एक साधारण नागरिक की तरह वर्णित करें।

एक दुर्ग निर्माण का नाट्य रूपांतर करें, साथ में उस समय के संगीत से सजा कर उसे सुसंगत बनाएं।

एक संग्रह पुस्तिका बनाकर उसमें विभिन्न दुर्गों का वर्णन, उनकी मुख्य विशेषताओं के आधार पर करें। विषय से चुनकर चित्र लगा सकते हैं।

दुर्ग सम्बन्धी प्राचीन पुस्तकों के सन्दर्भ उद्धरण, विभिन्न दुर्गों के प्रकार के विषय में एकत्र करें।

भारत के विभिन्न क्षेत्रों के रीतिरिवाज के सन्दर्भ में वहां के वास्तुशिल्प के चित्र संग्रह करें।

हमारे देश के राजवंश, राजा, जिन्होंने दुर्जेय दुर्ग बनाये – इन सब की कथाएँ लिखें।

विभिन्न दुर्गों का अध्ययन करके उन्हें नीचे दी गई श्रेणियों में श्रेणीबद्ध करें –

जंगल दुर्ग                      पहाड़ी दुर्ग

द्वीपदुर्ग                        भूदुर्ग

जलदुर्ग

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र, नई दिल्ली इस प्रकाशन में प्रदत्त सहयोग एवं विद्वत्ता के लिए प्रो. चूड़ामणि नंदगोपाल, लेखक, विद्याविद् का आभार प्रकट करता है।

Ancient texts on architecture describe a variety of forts. *Durg* or fort is a fortified building which many times encompasses whole city within its walls. In these texts there is mention of land, hill, water or island and also forest and desert forts.

Students can be taken on educational tours to nearby forts or asked to study the history of architecture of a specific region.

Conduct a project on the historical development of forts in our country.

Make a list of the terms associated with the architecture of forts with their meaning. Some terms like citadel, parapet, merlons, moat etc. can be included.

Find out all that you can about the names of different forts of our country and write a story how these were named.

Imagine you lived in a fort of the medieval period. Now describe your life as an architect, a king or a common man.

Dramatize the events involved in the construction of a fort and enrich it with music of the period.

Make a scrap book displaying different forts with important description. You may choose pictures from this package also.

Collect reference/quotations from ancient books on different types of forts.

Collect pictures and references of the rituals connected with the architecture of different regions of India.

Write stories about the dynasties and kings who built formidable forts in our country.

Conduct a study of various forts in our country and categorize these monuments as per the following:

Forest Fort

Mountain Fort

Island Fort

Land Fort

Desert Fort

CCRT, New Delhi acknowledges the scholarship and support of Prof. Choodamani Nandagopal, author and academician, for this publication.

## ग्रन्थसूची संदर्भिका:

- बेग, अमिता : फोर्ट्स एंड पैलेसेज़ ऑव इंडिया, 2010
- जोशी, एस.के. : डिफेन्स आर्किटेक्चर इन अर्ली कर्नाटक, 1969
- सहाय, सुरेंद्र : फोर्ट्स एंड पैलेसेज़ ऑव इंडिया, 2011
- वी. बगडे., प्रभाकर : फोर्ट्स एंड पैलेसेज़ ऑफ इंडिया, 1982
- वी. बगडे., प्रभाकर : ऐंशिअंट एंड मिडिवल टाउन प्लानिंग इन इंडिया, 1987
- वर्जीनियो फास : फोर्ट्स ऑव इंडिया, 1986
- वर्मा, अमृत : फोर्ट्स ऑव इंडिया, 1985
- रहमान, एस. ए. (संपादक) : द ब्यूटीफुल इंडिया – कर्नाटक, 2005
- नईम. एम.ए. : द हैरिटेज ऑफ द आदिलशाही ऑव बीजापुर, 2008
- स्टीन बर्टन : द न्यू केम्ब्रिज हिस्ट्री ऑव इंडिया – विजयनगर, 1994
- याजदानी, जी : बीदर, 1995

## Bibliography

- Baig, Amita : Forts and Palaces of India, 2010
- Joshi, S.K : Defense Architecture in Early Karnataka, 1969
- Sahai, Surendra : Forts and Palaces of India, 2011
- V. Begde, Prabhakar : Forts and Palaces of India, 1982
- V. Begde, Prabhakar : Ancient & Medieval Town Planning in India, 1978
- Virginia Fass : Forts of India, 1986
- Verma, Amrit : Forts of India, 1985
- Edited by Rahman, S.A : The Beautiful India – Karnataka, 2005
- Nayeem, M.A : The Heritage of the Adil Shahis of Bijapur, 2008
- Stein, Burton : The New Cambridge History of India - Vijayanagar, 1994
- Yazdani, G : Bidar, 1995





सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र  
CENTRE FOR CULTURAL RESOURCES AND TRAINING  
15A, Sector-7, Dwarka, New Delhi-110075  
Phone : 011-25309300 Fax : 91-11-25088637  
email : [dir.ccrtnic.in](mailto:dir.ccrtnic.in)  
website : [www.ccrtnic.in](http://www.ccrtnic.in)



## कर्नाटक के दुर्ग Forts of Karnataka

### 1. बनवासी दुर्ग

कर्नाटक में उत्तर कन्नड़ जिले में बनवासी मंदिरों का एक प्राचीन कस्बा है। यह बंगलुरु से 374 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। बनवासी, कर्नाटक के उत्तर कन्नड़ जिले का एक प्राचीन मंदिर नगर है। यह उन प्राचीन नगरों में से एक है, जिनका उल्लेख महाभारत ग्रन्थ में मिलता है। पुलकेसी द्वितीय के ऐहोल शिलालेख में बनवासी को एक जलदुर्ग कहा गया है, संभवतः इसलिए कि, वर्धा नदी नगर को तीन ओर से घेरते हुए बहती है। इसके अतिरिक्त यह पश्चिमी घाट के घने बारिश के जंगलों में स्थित है, जिससे इस तक पहुंचना अत्यंत कठिन है।

दूर तक फैली दुर्ग की दीवारें वर्तमान बनवासी गाँव का कुछ भाग घेरे हुए हैं। सातवाहन साम्राज्य के जागीरदार, चुट्टुओं ने बनवासी को अपनी राजधानी बनाया, बाद के समय में इस पर कदम्बों ने राज किया। किले का कुछ टूटा व बचा हिस्सा ही आज देखा जा सकता है।

दुर्ग, वर्धा नदी के तेज घुमाव पर बना है, जहाँ पर उत्तर-पश्चिम की ओर से आती हुई नदी अचानक पूर्व की ओर मुड़ जाती है। नदी सर्पिल गति से घुमावदार रास्तों पर बहती है, इसलिए दक्षिण की ओर बहुत अधिक सुरक्षा प्रदान करती है। दुर्ग की दीवार की पूरी लम्बाई 2140 मीटर है तथा बाहरी ढलान के साथ-साथ खाई हुआ करती थी। खाई की चौड़ाई तल की ओर 12 मीटर तथा ऊपरी सिरे की ओर 22 मीटर है। दो मुख्य द्वार हैं, एक उत्तर की ओर तथा दूसरा दक्षिण पूर्व की ओर। एक छोटा द्वार पश्चिम में दुर्ग के पश्चिमी खंड की ध्वस्त दीवार के लगभग बीच में है। यह सामान्यतः आम रास्ता नहीं था परन्तु खतरे के समय लोगों के भागने के काम आता था।

शुरु में, सातवाहनों के जागीरदार चुट्टुओं के राज्य में, किले की दीवारें ईंटों से बनी थी। इसके बाद कदम्ब राज्य के समय दुर्ग को बढ़ाया गया और दुर्गीकरण भी किया गया, जिसमें लेटराइट पत्थर, ईंटों और गीली मिट्टी का उपयोग किया गया। इसके बाद दुर्ग का उत्तरी किनारा और अधिक बढ़ाया गया तथा विशिष्ट रूप से केवल लेटराइट पत्थर का ही उपयोग किया गया।

**चित्र :** बनवासी दुर्ग के परिसर के मध्य एक मंदिर।



### 1. Banavasi Fort

Banavasi is an ancient temple town in Uttara Kannada district in Karnataka. It is 374 kilometres away from Bengaluru. It is one of the ancient towns of India which has been mentioned in the *Mahabharata* epic. Banavasi has been called as “*Jaladurga*” or Water Fort by the Aihole inscription of Pulakeshi II probably because the river Varadha flows around the town on three sides. It used to lie in the rain forests of Western Ghats making its access very difficult.

At one point of time the extant fort walls used to enclose part of the present village of Banavasi. The Chutus, a feudatory of the imperial Satavahanas made Banavasi its capital and later on it was ruled by the Kadambas. However, only the ruins and few remains of the fort can be seen today.

The fort was built at the sharp curve of the river Varadha, the point at which the river from the north-western direction used to take an easterly turn abruptly. The river flowed in a zigzag way thus providing considerable protection on the southern side. The total length of the fort wall measured 2140 meters. There used to be a moat along the exterior slope. The width of the moat was about 12m at the base and about 22m at the top. There were two main gates, one on the north and the other on the south-east. There was a small gate on the west almost in the mid-way of the western wing of the fort-wall which is in ruins. It was not meant for regular and common entrance, but to be used in times of danger by people for escape.

Originally, the fort wall was built of bricks during the reign of the Chutus, a feudatory of the Satavahanas. Thereafter, during the reign of Kadambas, the fort was enlarged and fortified with laterite stones, bricks and mud.

**Picture :** View of temple in the premises of Banavasi fort.



## कर्नाटक के दुर्ग Forts of Karnataka

### 2. मलखेड दुर्ग

मान्यखेट या आधुनिक मलखेड, कर्नाटक के गुलबर्गा जिले में कगीना नदी के किनारे पर स्थित है। 814 ई. से 968 ई. तक मलखेड शक्तिशाली राष्ट्रकूट साम्राज्य की राजधानी रहा। राष्ट्रकूट राजवंश में मलखेड का यशस्वी अतीत रहा है, विशेष रूप से राजा अमोघवर्ष नृपतुंग के राज्य में जिन्होंने 64 वर्ष राज्य किया तथा पहला शास्त्रीय कन्नड़ लेखन कार्य "कविराजमार्ग" लिखा। अमोघवर्ष तथा अन्य विद्वान जैसे गणितज्ञ महावीराचार्य तथा बुद्धिजीवी ज्ञानसेनाचार्य, गुणभद्राचार्य ने इस क्षेत्र में जैन धर्म का प्रचार करने में सहायता की। राष्ट्रकूटों के पतन के बाद भी यह उनके उत्तराधिकारी कल्याणी चालुक्य या पश्चिमी चालुक्यों की राजधानी लगभग 1050 ई. तक बनी रही।

यहाँ दो दुर्ग हैं : बाहरी बड़ा दुर्ग, निचले स्तर अथवा धरातल पर और दूसरा छोटा दुर्ग, उसके भीतर कृत्रिम रूप से ऊँचे किये गये स्तर पर। वास्तु शिल्प के अनुसार भी बाहरी तथा भीतरी दुर्ग एक दूसरे से भिन्न हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि बाहरी दुर्ग भीतरी दुर्ग से काफी पुराना है। बाहरी दुर्ग असमान रूप से बहुभुजी आकार का है। दीवार की चौड़ाई 3 मीटर, ऊँचाई 6 मीटर तक है। इसके दो निकास हैं – एक उत्तर पश्चिम कोने में पश्चिम की ओर खुलता है तथा दूसरा पूर्वी किनारे के मध्य में पूर्व की ओर खुलता है। दुर्ग में स्थित गढ़, शासकों उनके मुख्य अधिकारियों के लिए था, परन्तु गढ़ सहित यह दुर्ग, राष्ट्रकूटों और चोल शासकों के बीच भयंकर टकराव के कारण अंत में ध्वस्त हो गया। वर्तमान समय में इस दुर्ग में, एक जैन मंदिर तथा कुछ शिल्प, दरवाजों की चौखट, राष्ट्रकूटों के समय के कुछ मंदिरों के खम्भे हैं।

कालांतर में बहमनियों के प्रति निष्ठावान मुस्लिम सूबेदारों ने शायद इस दुर्ग को काफी अधिक सुधार करके बनवाया। दुर्ग में जामा मस्जिद और काली मस्जिद है। साथ में, विशाल गढ़ जो कि "उपली बुर्ज" के नाम से जाना जाता है, भी है। मलखेड का निरंतर पतन चोल राजा और बाद में मुस्लिम सल्तनत तथा मुगल समय में भी चलता रहा।

**चित्र :** मलखेड दुर्ग के भग्नावशेष (ऊपर) तथा मलखेड दुर्ग के प्रवेश द्वारों में एक (नीचे)



### 2. Malkhed Fort

Manyakheta or modern Malkhed is located on the banks of Kagina River in Gulbarga district, Karnataka. Malkhed was the capital of the powerful Rashtrakuta empire from 814 C.E. to 968 C.E. Malkhed had a glorious past under the Rashtrakuta dynasty, particularly under the Emperor Amoghavarsha Nrupatunga, who ruled for 64 years and penned the first classical Kannada work, *Kavirajamarga*. Amoghavarsha and scholars such as mathematician Mahaveeracharya, and intellectuals Jinasenacharya, Gunabhadracharya helped to spread Jainism in the region. After the fall of the Rashtrakutas, it remained the capital of their successors, the Kalyani Chalukyas or Western Chalukyas till about 1050 C.E.

There used to be two forts: a large outer fort at the ground level and within it, a small fort on the artificially elevated ground. Architecturally too, the outer and the inner differed considerably. It appears that the outer was much earlier than the inner. The outer fort was irregularly polygonal. The width of the wall was 3 m and the wall rose to a height of 6 m. It had two exits, one near the north-west corner looking west and another in the middle of the eastern side looking east. The citadel within the fort was meant for the rulers and their important officials. But this fort including the citadel was destroyed ultimately perhaps during severe conflicts between the Rashtrakutas and the Cholas. Within the fort is, at present, a Jaina temple and a few sculptures, door frames, pillars of some temples of the Rashtrakuta period.

Later a Muslim chieftain owing allegiance to the Bahamanis perhaps built the fort with considerable modifications. Within the fort is Jamma Masjid, Kali Masjid together with a colossal bastion known as 'Upli Burj'. Malkhed was subjected to series of unspeakable destructions by the Cholas and later by the Muslims during the Sultanate and Mughal periods.

**Pictures :** A view of remains of Malkhed fort (above) and one of the entrances to the Malkhed fort (below).





## कर्नाटक के दुर्ग Forts of Karnataka

### 3. बादामी दुर्ग

बादामी, पहले वातापी के नाम से जाना जाता था, कर्नाटक के बागलकोट जिले में एक तालुक है। 540 ई. से 757 ई. तक यह बादामी चालुक्यों की शाही राजधानी थी, यह चट्टान से कटे तथा अपने अन्य संरचनात्मक मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है। बादामी को हम पहाड़ी भूदुर्ग कह सकते हैं। यह दो अत्यंत चट्टानी पहाड़ियों के बीच घाटी के मुहाने पर स्थित है। ये पहाड़ियाँ इसके उत्तर और दक्षिण में हैं जिनके बीच पूर्व में गिरी पीठ पर एक बाँध है जो बड़ा जलाशय बनाता है।

दुर्गबंदी के आरंभ में मूलरूप से निचले स्तर पर बना हुआ दुर्ग था जिसकी गढ़ बनाती हुई दीवार, नगर को घेरे हुए थी। दो छोटे परन्तु शक्तिशाली दुर्ग पहाड़ियों पर बने हुए थे जहाँ से शासन किया जाता था। दक्षिणी पहाड़ी पर बना हुआ दुर्ग 'रण मंडल' दुर्ग कहलाता था तथा उत्तरी पहाड़ी पर बना दुर्ग 'बन्देकोट' या 'बावन चट्टान दुर्ग' कहलाता था। पूर्व दिशा में नगर पत्थर और गीली मिट्टी से बनी दीवार से रक्षित था, जिसमें बचाव हेतु मुंडेर बनी हुई थी तथा आगे पश्चिम दिशा में बचाव के लिए गहरी तथा चौड़ी खाइयाँ बनी थीं।

उत्तरी पहाड़ी पर बना हुआ दुर्ग, पहाड़ी दुर्ग का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। दुर्ग की अर्ध गोलाकार दीवार पूरे पहाड़ी किनारे को घेरते हुए गढ़ बनाती है साथ ही यहाँ के मैदानी दृश्य का अवलोकन भी किया जा सकता है। दुर्ग असमान बहुभुजाकार है तथा इसकी दीवार की ऊँचाई भी 2 मीटर से 6 मीटर तक घटती बढ़ती है। दक्षिणी दुर्ग सीधी खड़ी चट्टान के शिखर पर है। इस चट्टान को मुख्य पहाड़ी खण्ड से अलग करने वाली एक प्रभावशाली गहरी खाई है, जिसकी चौड़ाई 18 से 30 फीट है और यह 26 फीट से 60 फीट तक गहरी है। यहाँ एक संकरी घाटी में बनी सीढ़ियों द्वारा पहुँचा जा सकता है। गोलाकार गढ़ की दीवारों के बाहरी ओर चोटी पर एक असमान पंचभुजीय कोट बना हुआ है।

पुलकेशी प्रथम ने अपने राज्य की राजधानी स्थानांतरित कर बादामी में बना दी और ऊँचे पहाड़ी पठार पर दुर्ग बनाने का असीम प्रयत्न किया। उनके समय के 543 ई. का प्राचीन कर्नाटक से संबंधित अब तक का एकमात्र शिलालेख विशेष रूप से दुर्ग-निर्माण पर प्रकाश डालता है।

**चित्र :** बादामी दुर्ग का दूरवर्ती दृश्य



### 3. Badami Fort

Badami, formerly known as Vatapi, is a taluk in the Bagalkot district of Karnataka. It was the regal capital of the Badami Chalukyas from 540 to 757 C.E. It is famous for rock-cut and other structural temples. Badami may be termed as hill cum land fort. It is situated at the mouth of a ravine between two extremely rocky hills on its north and south and a dam to the east at the foothills forming a large reservoir between them.

The fortifications consisted originally of a lower fort consisting of a bastioned wall enclosing the town and on a level with the plain commanded by two small but strong forts on the hills. The fort on the south hill is called Ranmandal or the Battlefield fort and that on the north hill, is called the Bande Kote or Fifty two rocks fort. The city was defended on the east by stone and mud walls with loop-holed parapets and on the west further protected by deep and broad ditches.

The fort on the north-hill is a very good instance of *Giridurga*. The fort wall is semi-circular raised all along the edge of the high hill serving as a bastion providing a view of the plains. The fort is irregularly polygonal and the height of the wall also varies between 2m to 6m. The south fort stands on the summit of a cliff. The rock is separated from the mass of the main hill by an impressive chasm, 26 to 60 feet deep and 18 to 30 feet broad. It is approached by a flight of steps through a narrow valley. The walls have circular bastions on the outside and on the top is an irregularly pentagonal citadel.

Pulkeshi I shifted the capital of his kingdom to Badami and also made tremendous effort to construct a fort on the high hill plateau. His only known inscription dated 543 C.E essentially speaks of the construction of the fort, the only one known so far belonging to the period of ancient Karnataka.

**Picture :** A distant view of Badami fort.



## कर्नाटक के दुर्ग Forts of Karnataka

### 4. विजयनगर दुर्ग

कर्नाटक के बेल्लारी जिले में 1335 ई. में, साधु विद्यारण्य के मार्ग दर्शन में, हरिहर तथा बुक्का ने तुंगभद्रा नदी के किनारे एक नगर बसाया जिसका नाम विजयनगर रखा गया।

उनके शासन में राज्य तो समृद्ध हुआ परन्तु लगातार पड़ोसी राज्यों से, जैसे कि बहमनी इत्यादि से प्रभुत्व के लिए लड़ाई होती रही। नगर की सुरक्षा के लिए हरिहर द्वितीय (1399–1406 ई.) ने दुर्ग की दीवारें और बुर्जों की घेराबंदी और मजबूत कराई। देवराय-द्वितीय (1422–1446 ई.) के द्वारा नगर को भी अधिक मजबूत बनाया गया। 1443 में आये फारसी यात्री अब्दुल रज्जाक के वृत्तान्त के अनुसार विजयनगर एक गोलाकार आकृति का है तथा एक पहाड़ी के शिखर पर स्थित है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि नगर का दुर्गीकरण दुर्जेय था। यह खाइयों से घिरा हुआ था जिसके कारण दुश्मन दुर्ग की दीवार तक नहीं पहुँच पाते थे। यह नवीनतम हथियारों से सुसज्जित था जो कि आक्रमण तथा सुरक्षा के लिए सक्षम थे। दीवारों पर प्रक्षेपक स्थित थे जिनसे पत्थर, मुगदर या लाठी तथा कुल्हाड़ी साध कर दुश्मन पर बरसाए जाते थे, जिससे दुश्मन की बहुत हानि होती थी। आक्रमणकारियों के विरुद्ध विस्फोटक हथियार भी दुर्ग की सुरक्षा के लिए उपयोग होते थे। यहाँ पर विभिन्न प्रवेश द्वार थे जिनके नाम हैं – काम्पली द्वार, संदूर द्वार, होसपेट द्वार, कमलापुरा द्वार तथा मल्लपुरा द्वार। ये सभी संकेद्रित द्वार ऊँची दीवारों तथा पहाड़ी शृंखलाओं से जुड़े हुए थे। दुर्ग की सुरक्षा का भार अमरनायकों के हाथों में था, जिन पर राजा को बहुत विश्वास था।

1509 ई. में जब कृष्णदेव राय राजगद्दी पर बैठे तब उन्होंने बहुत से भवन राजधानी में बनवाए। परन्तु 23 जनवरी, 1565 के तालीकोट के युद्ध ने विजयनगर को पूर्णरूप से ध्वस्त कर दिया। यह एक विनाशकारी युद्ध था। जो विजयनगर साम्राज्य तथा संयुक्त रूप से दक्षिणी अहमदनगर सल्तनत, बीदर, बीजापुर तथा गोलकुंडा के बीच हुआ था, जिन्होंने दक्षिण भारत में अंतिम हिन्दू साम्राज्य के विरुद्ध गठबंधन किया था।

**चित्र :** तलरिघट्टा द्वार का दृश्य (ऊपर बाएँ), गुंबदवाला द्वार (ऊपर दाएँ), कमल महल (नीचे बाएँ), सीढीदार तालाब (नीचे दाएँ)



### 4. Vijayanagar Fort

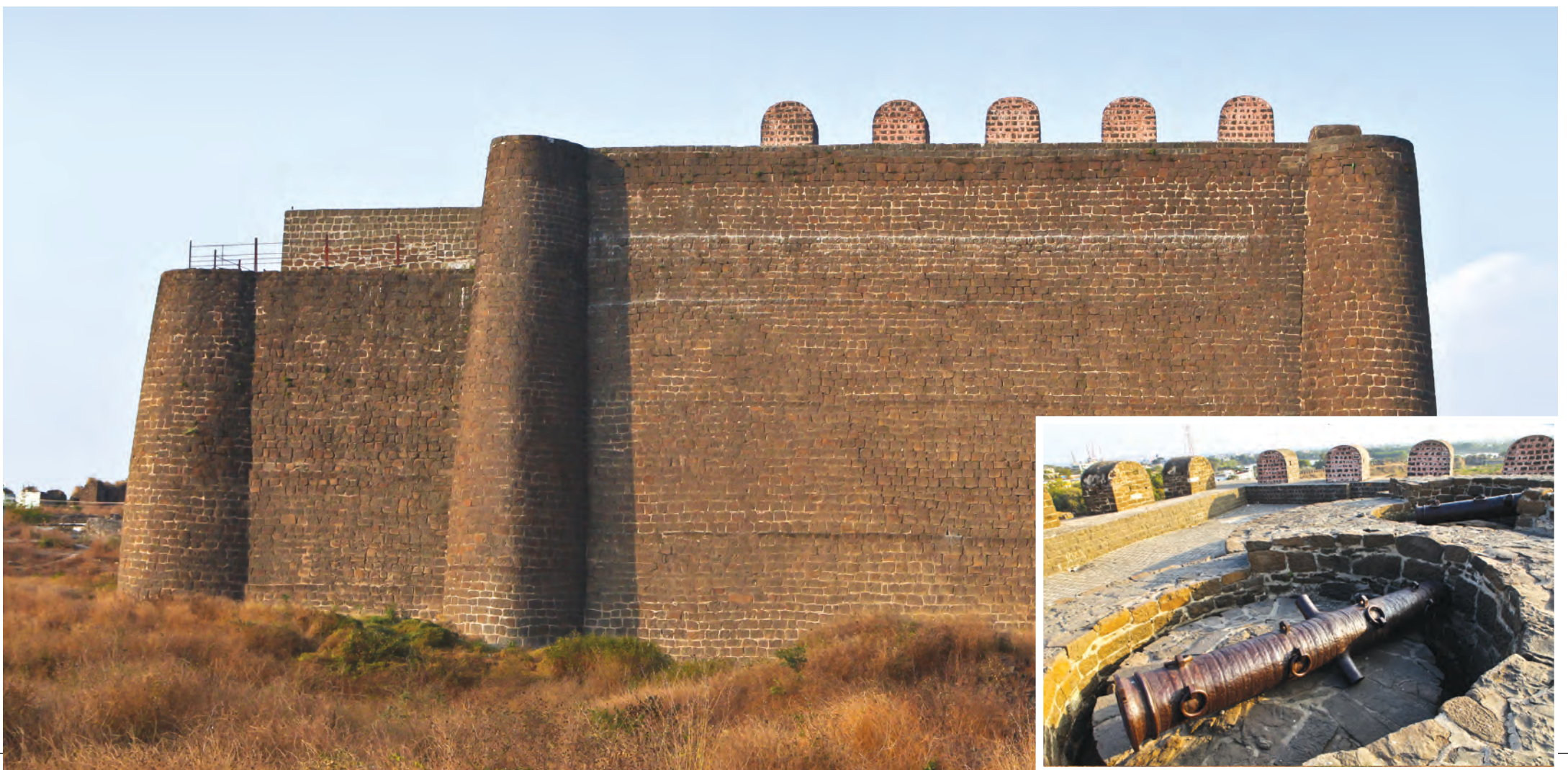
Under the guidance of sage Vidyanarany, Harihar and Bukka founded in 1335 a city on the banks of the Tungabhadra river which was named Vijayanagar in Bellary district in Karnataka.

The kingdom prospered under their rule but it was constantly in conflict with the neighbouring powers like the Bahamani kingdom. To protect the city Harihar II (1399-1406) raised walls and towers of the fort and strengthened their fortifications. The city was further strengthened by Devaraya II (1422-1446). The Persian traveller Abdul Razak who visited the city in 1443 tells us that the fortress of Vijayanagar is in the form of a circle situated on the summit of a hill.

The fortifications of the city were no doubt formidable. It was surrounded by deep moats which prevented the enemy from coming near the walls. It was equipped with up-to-date weapons of offence and defence. On the walls were set up catapults which showered stones, clubs and viable axes upon the enemy, causing much harm. Explosive weapons were also used in defending the fort against the invaders. There were various gateways, namely the Kampli gateway, Sandur gateway, Hospet gateway, Kamalapura gateway and Mallapura gateway. All these gates were connected with high walls and hill ranges concentrically. The defence of the fort was left in the hands of Amaranayakas in whom the Raja had great confidence.

Krishnadevaraya who ascended the throne in 1509 added several buildings in the capital. But a battle on 23 January 1565 at Talikota completely destroyed Vijayanagar. It was a watershed battle fought between the Vijayanagar Empire and the Deccan Sultanates of Ahmednagar, Bidar, Bijapur and Golconda, who had formed a grand alliance which caused the end of the Vijayanagar Empire, the last great Hindu kingdom in South India.

**Pictures :** View of Talarighatta Gate (above, left), Domed Gate (above, right), Lotus Mahal (below, left), Stepped Tank (below, right).



## कर्नाटक के दुर्ग Forts of Karnataka

### 5. गुलबर्गा दुर्ग

कर्नाटक में गुलबर्गा का दुर्ग एक नरदुर्ग था, जिसमें कोई भी प्राकृतिक सुरक्षा का साधन नहीं था। दुर्ग में 15 बुर्ज तथा संभवतः 26 तोपें थीं, जिसमें से एक 25 फीट लम्बी थी। दुर्ग नगर की उत्तरी पश्चिमी दिशा में है तथा योजना में आयताकार है। यह 50 फीट दोहरी दीवार से घिरा हुआ है तथा कुछ दूरी के अंतराल पर गढ़ बने हुए हैं और चौड़ी तथा गहरी खाई इसे घेरे हुए है। वस्तुतः विशाल, ऊपर उठे हुए गढ़ पर घूमने वाले चबूतरे बने हुए थे जिन पर तोपें रखीं हुई थीं। यहाँ बाहर निकली मुंडेर, उन पर बने कंगूरे तथा छेद थे ये सब बन्दूकधारी सेना के बचाव के तरीके थे।

यहाँ दो प्रवेश द्वार हैं, एक पूर्वी दीवार के मध्य में तथा दूसरा पश्चिमी दीवार के मध्य में। पूर्वी प्रवेशद्वार के बाहरी प्राचीर का द्वार ध्वस्त हो चुका है। इसके 50 फीट लम्बे बड़े गलियारों के दोनों ओर बड़े रक्षक गृह हैं।

पश्चिमी द्वार एक दुर्जेय संरचना है जो बहिर्दुर्ग से सुरक्षित थी तथा अब खंडहर अवस्था में है। यह सींग के आकार की अथवा चंद्राकार संरचना का भव्य प्रदर्शन है जो दुर्ग से बाहर की ओर निकली हुई बनी है। इसमें क्रमशः चार दरवाजे तथा चार अत्यंत सुरक्षित दरबार हैं। प्रवेशद्वार मजबूत लोहे की जंजीरों की तीन श्रेणियों से और अधिक सुरक्षित हो जाता है। ये आक्रमण के समय द्वार के सामने एक सिरे से दूसरे सिरे तक बाँध दी जाती थीं। दो पट का द्वार जिस पर लोहा जड़ा हुआ है तथा कीलें गढ़ी हुई हैं आज भी अपनी स्थिति में बना हुआ है।

भारतीय दुर्गों में केवल गुलबर्गा दुर्ग को एक दुर्जेय बड़ा तहखाना “बाला हिसार” रखने का गौरव प्राप्त था। यह आयताकार था इसमें चार बुर्ज थे, और इसकी भूरी काली बलुआ पत्थर से बनी दीवारों में कोई निकलने का रास्ता नहीं था। यह परकोटे से नीचे तल पर बना हुआ था, इसमें केवल ऊँचे उत्तरी मुहाने पर बनी खुली सीढ़ी द्वारा ही प्रवेश किया जा सकता था। यह दुर्ग के मध्य भाग में बना हुआ था। इसका उपयोग अंतिम आश्रय के लिए किया जाता था।

**चित्र :** निरंतर अंतराल पर बुर्ज के साथ दोहरी दीवारों का दृश्य (ऊपर), बड़ा तहखाना (नीचे), बड़े तहखाने की तोप (इनसेट)



### 5. Gulbarga Fort

The fort of Gulbarga located in Karnataka was a *Naradurga* with no natural defences. The fort had 15 towers and probably 26 guns, including one 25 feet long. The fort stands to the north-west of the city and has a rectangular plan. It is enclosed by a double wall (50 feet thick) with bastions at intervals and surrounded by a deep and wide moat. The really massive projecting bastions held revolving platforms for cannon. There were machicolations, merlons and embrasures with loopholes for musketry.

There were two gateways, one in the middle of the east wall and other in the middle of the west wall. The outer barbican gate of the east gateway is destroyed. On the either side of this 50 feet long gateway are large guard rooms.

The west gate was a formidable structure and was protected by an outwork, now in ruins. It projects out as a spectacular horn work beyond the fort and includes a succession of four doors and four strongly defended courts. The entrance was further defended by three tiers of powerful iron chains which, in times of attack, were fixed across the opening in front of the door. The two-leaved door is still in its position, iron clad and armoured with spikes.

Alone among Indian forts, Gulbarga boasted a huge, formidable dungeon the Bala Hissar. Rectangular, with four great towers, its grey-black sandstone walls have no opening below the level of the crenellations except the entrance, high up on the north face at the head of a long, exposed flight of steps. It was in the centre of the fort, used as a residence and place of last refuge.

**Pictures :** View of a double wall with bastions at intervals (above), the dungeon Bala Hissar (below) and Cannon at Bala Hissar (inset).



## कर्नाटक के दुर्ग Forts of Karnataka

### 6. जामा मस्जिद, गुलबर्गा दुर्ग

गुलबर्गा दुर्ग की जामा मस्जिद 1367 ई. में रफी काज़विन द्वारा बनाई गयी थी। यह भारत की एक अनोखी, पूर्ण रूप से आवृत मस्जिद है, इसकी मेहराब के ऊपर तथा प्रत्येक कोने में गुम्बद बने हैं। लगभग 70 गुम्बद हैं। इसमें कोई खुला हुआ आँगन नहीं है तथा यह 216 फीट लम्बी और 176 फीट चौड़ी है। सारा प्रकाश तोरण पथ से आता है।

नगर के पूर्व की ओर बहमनी कब्रें हैं। ये वर्गाकार हैं तथा इन पर बड़े गुम्बद हैं। ये साधारण गुम्बदीय घनाकार उत्तर भारतीय शैली में बनी कब्रें हैं जो प्लास्टर किये गये मलबे की बनी हैं। परन्तु फीरोजशाह के मकबरे पर कुछ हिन्दू शिल्प की सजावट देखने को मिलती है, आदिल शाही वंश के शासन के अंतिम चरण 15वीं शताब्दी ई. तक, ऐसी शैली का सामान्यतः प्रचलन नहीं था। इन्हीं में से एक कब्र जो कि ख्वाजा बंदा नवाज की है, सभी संप्रदाय के लोगों द्वारा पूजी जाती है। यहाँ के भवनों के मेहराब बहमनी शैली के हैं तथा दीवारों पर फारसी शैली की चित्रकला है।

दिल्ली द्वारा नियुक्त किये गये मुस्लिम अधिकारियों के विद्रोह के फलस्वरूप 1347 ई. में हसन गंगू द्वारा बहमनी सल्तनत की स्थापना हुई जिसने गुलबर्गा को अपनी राजधानी के लिए चुना तथा इसे भवनों का निर्माण करके सजाया।

1429 ई. तक गुलबर्गा की मुख्य भूमिका रही और तब अहमदशाह ने अपनी राजधानी स्थानांतरित करके बीदर को राजधानी बना दिया। राजधानी बदल जाने से गुलबर्गा का गौरव जाता रहा। 1520 ई. में विजयनगर के कृष्णदेव राय ने गुलबर्गा पर आक्रमण कर यहाँ के दुर्ग को ध्वस्त कर दिया। शिलालेखों के अनुसार, बाद में अली आदिलशाह ने विजयनगर के राजा को हराने के बाद गुलबर्गा दुर्ग का जीर्णोद्धार किया। 1657 ई. में औरंगजेब ने, जो उस समय दक्षिण के सूबेदार थे, बीजापुर और गुलबर्गा को जीत लिया। बाद में गुलबर्गा निजाम साम्राज्य के अधीन आ गया।

**चित्र :** गुलबर्गा दुर्ग में जामिया मस्जिद का दृश्य (ऊपर), जामिया मस्जिद का भीतरी दृश्य (नीचे, बाएँ), जामिया मस्जिद का इबादत खाना (नीचे, दाएँ)



### 6. Jamia Mosque, Gulbarga Fort

Gulbarga's Jamia Mosque, built in 1367 by Rafi of Kazvin, is unique in India in that it is completely covered, with a dome over the *mihrab*, domes at each corner and more than 70 smaller domes. There is no open courtyard and it measures 216 feet by 176 feet – all light comes from the arcades.

Towards the east of the city are Bahmani tombs - squares with large domes. They are simple domed cubes of plastered rubble in northern style. But the mausoleum of Firoz Shah does bear some Hindu decoration, though this remained uncommon in the Deccan until the time of the Adil Shahi dynasty towards the end of the 15th century C.E. One of the tombs – of Khwaja Banda Nawaz- is venerated by all communities. The arches of these buildings are in Bahmani style and paintings on walls are in Persian style.

The revolt of the Muslim officers appointed from Delhi resulted in founding of the Bahmani Sultanate in 1347 C.E. by Hassan Gangu, who chose Gulbarga to be his capital and adorned it with buildings.

Gulbarga continued to play an important role till 1429 when Ahmad Shah shifted his capital to Bidar. With the transfer of the capital, Gulbarga lost its place of pride. In 1520 Krishnadevaraya of Vijayanagar invaded Gulbarga, razed the fortress to the ground. Later Ali Adil Shah defeated the king of Vijayanagar and, as per inscriptions, repaired the Gulbarga Fort. In 1657 Aurangzeb, then governor of Deccan succeeded in conquering Bijapur and Gulbarga. Later Gulbarga changed hands and became a part of the Nizam's kingdom.

**Pictures :** View of Jamia Mosque in Gulbarga fort (above), inside view of Jamia Mosque (below, left) and prayer hall of Jamia Mosque (below, right)





## कर्नाटक के दुर्ग Forts of Karnataka

### 7. बीदर दुर्ग

बीदर, दक्षिणी पठार में कर्नाटक के उत्तरी-पूर्वी भाग तथा बंगलुरु से उत्तर में 740 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यह अनियमित रूप से समान्तर असम चतुर्भुज आकार का है तथा देश के सर्वाधिक दुर्जेय दुर्गों में से एक है। इसके परकोटों का पूरा घेरा 3 मील से अधिक का है इसमें 37 गढ़ और 5 द्वार हैं। दुर्ग, खाई तथा बर्फ से पटी नदी से घिरा हुआ है इस प्रकार तिगुनी नाले की सुरक्षा तथा ठोस चट्टानों से काट कर बनी, घेरे हुई दीवारें बीदर दुर्ग की विशेषताएं हैं। बीदर दुर्ग की दीवारें, छावनियां, द्वार तथा प्राचीर अभी तक अखंड हैं, तथा भारत के परिष्कृत वास्तुशिल्प की विशेष अभिव्यक्ति है। मुंडे बुर्ज सबसे प्रमुख गढ़ है तथा भारी तोपों और बचने के रास्तों के कारण अत्यंत प्रभावशाली है। दुर्ग का मुख्य प्रवेश मार्ग नगर की ओर से प्रवेश करके तीन द्वार पार करके बनता है। पहला द्वार एक खाई द्वारा सुरक्षित था, जो कि अब भर दी गयी है, जिसके बाद दो और द्वार एक के बाद एक हैं। बाहरी द्वार कीलों से जड़ा हुआ है।

प्रवेशमार्गों की बनावट कुशलतापूर्वक की गई, जिनके प्राचीर भी मजबूत बनाए गये। पूर्वी दिशा में बना प्रवेशद्वार धरातल से ऊंचा बना हुआ था, जहाँ तक पहुँचने के लिए गहरी घुमावदार सुरंगों से होते हुए जाना पड़ता है। गढ़ या कोट जो सबसे ऊँचे स्थान पर बना हुआ था, बाकी दुर्ग से एक दीवार द्वारा अलग किया गया था। वह दीवार अब अधिकतम: खंडहर है। यहाँ के लिए दुर्ग में से एक द्वार है तथा इसमें एक चोर दरवाजा भी है। नगर-दीवार तथा दुर्ग में अनेक पुरानी इमारतें हैं। जिसमें शाही रसोई घर, तरकश महल, लाल बाग, गगन महल, तख्त महल इत्यादि अधिक महत्वपूर्ण हैं। मोहम्मद गवां का मदरसा, बीदर के उल्लेखनीय स्मारकों में से एक है।

बहमनी शासकों को यह समझने में अधिक देर नहीं लगी कि गुलबर्गा अपने दुश्मन, विजयनगर के पास होने के कारण एक राजधानी के लिए सुरक्षित स्थान नहीं है। इसकी तुलना में बीदर अधिक सुरक्षित तथा जलवायु के आधार पर भी उत्तम है। 1429 ईस्वी में अहमदशाह वली ने बहमनी राजधानी गुलबर्गा से बीदर स्थानांतरित कर दी। ऐसा माना जाता है कि खेरला के युद्ध से लौटने के बाद 1429 ईस्वी में राजा अहमदशाह वली ने बीदर नगर तथा दुर्ग बनवाना आरंभ किया और यह कार्य तीन साल तक चलता रहा और 1432 ईस्वी में समाप्त हुआ।

**चित्र :** बीदर दुर्ग का प्रवेश (ऊपर, बाएँ), तरकश महल (ऊपर, दाएँ), रंगीन महल (नीचे, बाएँ), गगन महल (नीचे, दाएँ)



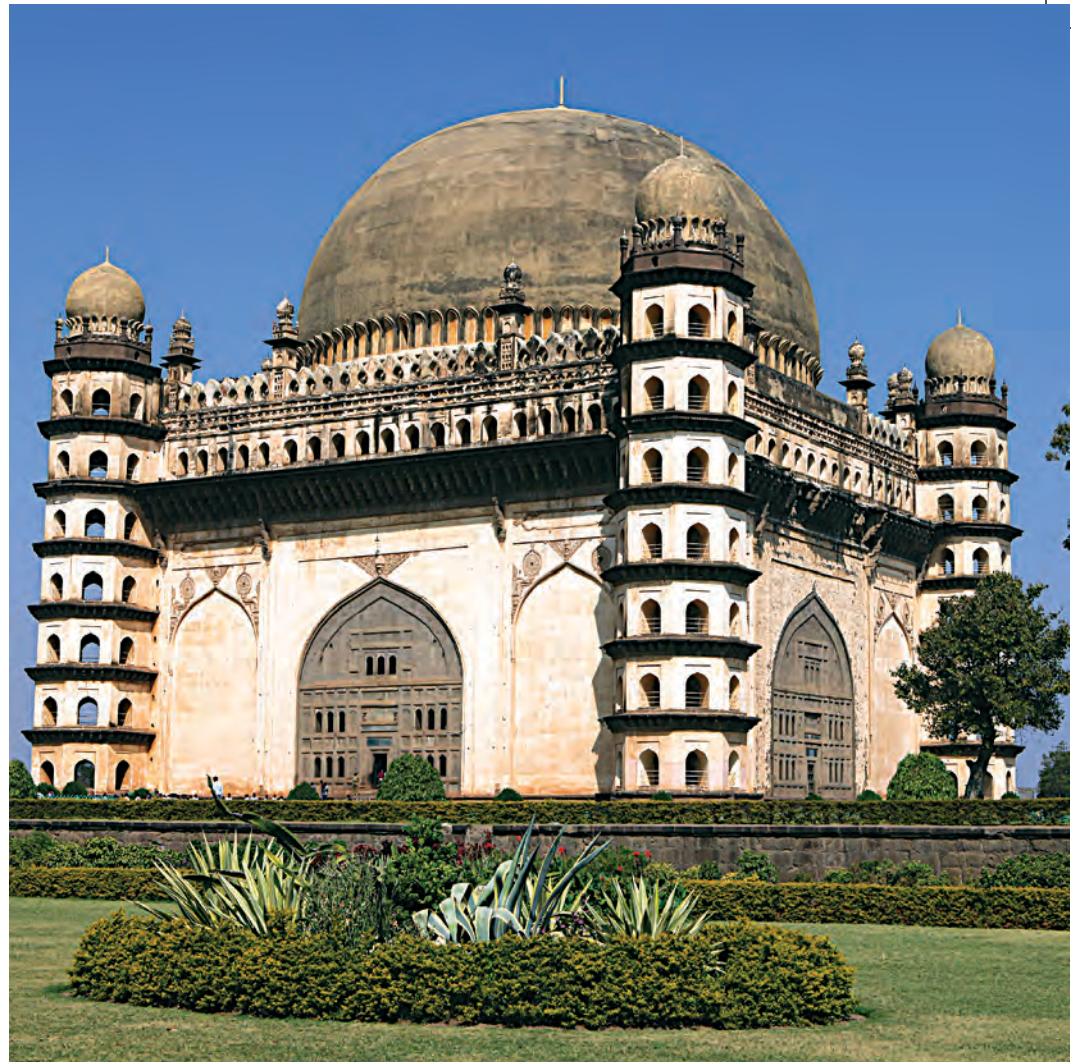
### 7. Bidar Fort

Located on the Deccan Plateau in the north-eastern part of Karnataka, Bidar is situated 740 kms north of Bengaluru. The Bidar fort is irregular rhomboid in shape and is one of the most formidable forts of the country. The total circuit of the ramparts is over 3 miles and it has 37 bastions and five gates. The fort is surrounded by glacis and moats in the form of triple channel with partition walls hewn out of solid rocks which are a special feature of Bidar. The walls, bastions, gates and barbicans of Bidar, which are still intact, are some of the most sophisticated architectural features in India. The Munde Burj is the most prominent bastion commanding the approach with heavy guns and loopholes. The main entrance to the fort is from the town through a triple gate. The first was defended by a moat, now filled in, and was closed by two doors in succession, the outer door being studded with spikes.

The gateways are skillfully designed, having strong barbicans. The gateways on the east side, standing high above the plain, are approached through steep and winding tunnels. The citadel was formerly cut off from the rest of the fort by a wall, now largely destroyed, occupies the highest spot and, in addition to its gate from the fort, has a strong postern. Inside the town-walls and the fort are many old buildings. The more important of them are Royal Kitchen, Tarkash Mahal, Lal Bagh, Gagan Mahal, Rangin Mahal, Takhat Mahal, and so on. The *madrassa* of Mahmud Gawan is one of the noteworthy monuments of Bidar.

The Bahamani rulers did not take too long to realize that Gulbarga being nearer to their rival Vijayanagar was not too secure a place for the capital. Comparatively Bidar was more secure and also climatically better. In 1429 Ahmad Shah Wali shifted the Bahamani capital from Gulbarga to Bidar. It is believed that the building of the city and fort of Bidar commenced sometime in 1429, when the king Ahmad Shah Wali returned from the conquest of Kherla, and the operation lasted for three years and was completed in 1432.

**Pictures :** Entrance to Bidar fort (above, left), Tarkash Mahal (above, right), Rangin Mahal (below, left) and Gagan Mahal (below, right).



## कर्नाटक के दुर्ग Forts of Karnataka

### 8. बीजापुर दुर्ग

बीजापुर एक समय पर आदिलशाही राजवंश की राजधानी था तथा आधुनिक कर्नाटक राज्य में इसी नाम के जिले में स्थित था। यह दुर्ग लगभग अंडाकार मापचित्र के अनुसार बना हुआ है, इसका पश्चिमी भाग अधिक चौड़ा है तथा इस ओर 36 मीटर चौड़ी पानी से भरी खाई, आपस में एक दूसरे जुड़े हुए विशाल दुर्जेय पर्यवेक्षण बुर्ज तथा तोप वाले गढ़ बने हुए हैं। दुर्ग का पूर्व-पश्चिमी क्षेत्र 4 कि.मी. तथा उत्तरी दक्षिणी क्षेत्र 3.25 कि.मी. है। कर्नाटक में मुस्लिम शासकों का सबसे विस्तृत दुर्ग बीजापुर का है। दुर्ग के पांच मुख्य द्वार हैं: पश्चिम में मक्का द्वार, उत्तर-पश्चिम में शाहपुर द्वार, उत्तर में बहमनी द्वार, पूर्व में अल्लापुर द्वार, दक्षिण-पूर्व में फतेह द्वार।

इन मुख्य द्वार मार्गों के साथ-साथ तीन विशाल पर्यवेक्षण बुर्ज, लगभग समान दूरी पर स्थित हैं, इनमें से एक फिरंगी बुर्ज है। इस दुर्ग में अनेक तोपें हैं, जिसमें से कुछ प्रसिद्ध भी हैं, ऐसी ही एक प्रसिद्ध तोप 'मालिक ए मैदान' है। अरकिला के नाम से प्रसिद्ध गढ़ दुर्ग के लगभग केंद्र में स्थित है। अरकिला कलात्मक इमारतों का खजाना है इसमें महल, मेहराब, कब्रें, द्वारमार्ग, मीनारें सभी भूरे चमकदार अशितास्म पत्थर से तराश कर बनाये गये हैं। इनमें सबसे प्रमुख सुल्तान मोहम्मद अलीशाह की कब्र, गोल गुम्बज है। यह संसार की सबसे विलक्षण इमारतों में से एक मानी जाती है। महत्वपूर्ण महल, जैसे चीनी महल, आनंद महल, अदालत महल, असार महल, गगन महल तथा सात मंजिल इत्यादि हैं।

बहमनी साम्राज्य टूटने पर, बीदर के बहमनी सुल्तान मोहम्मद शाह-द्वितीय (1482-1515) के सूबेदार यूसुफ आदिल शाह (1489-1510) ने अपने आपको स्वतंत्र घोषित करके बीजापुर में एक नए राजवंश 'आदिलशाही' की स्थापना की। 16वीं शताब्दी की आरंभ से 17वीं शताब्दी के मध्य तक बीजापुर में प्रबल संरचनात्मक गतिविधियाँ रहीं जिसके फलस्वरूप अनोखे समृद्ध विशाल स्मारक देखने को मिलते हैं।

**चित्र :** बीजापुर दुर्ग का प्रवेश (ऊपर, बाएँ), गोल गुंबज (ऊपर, दाएँ), इब्राहीम रोजा (नीचे), मालिक-ए-मैदान (इनसेट)



### 8. Bijapur Fort

Bijapur was once the capital of the Adil Shahi dynasty and it is located in the district of the same name in the present Karnataka state. The fort is roughly oval-shaped in plan, the western part being broader, with wide moat (36m wide), filled with water besides tall and formidable defence curtains interconnected by colossal watch towers and gun bastions. The area covered by the fort is 4km east-west and 3.25 km north-south. Bijapur fort is the most spacious fort of the Muslim rulers in Karnataka. The fort has five important gateways - Mecca Gate on the west, Shahpur Gate at the north-west, Bahamani Gate on the north, Allapur Gate on the east and Fateh Gate on the south-east.

In addition to the main gateways, there are three colossal watch towers (*burj*), almost at regular intervals, one being the Feringi Burj which accommodates several pieces of cannon. The fort has a number of guns, some are famous, one of them being Malik-i-Maidan (March of the Field). The citadel popularly known as the Arkquila is roughly located in the centre of the fort. The Arkquila is a treasury of artistic buildings consisting of palaces, arches, tombs, gateways, minarets all carved with rich brown basalt rock. The most important of them being the Gol Gumbaz, the tomb of Sultan Mohammad Ali Shah, regarded as one of the most remarkable buildings in the world. The prominent palaces are the Chini Mahal, Anand Mahal, Adalat Mahal, Asar Mahal, Gagan Mahal and Sat Manjil.

In the wake of the breakup of the Bahamani Kingdom, Yusuf Adil Shah (1489-1510), who was a governor under the Bahamani Sultan Muhammad Shah II (1482-1515) of Bidar, declared independence and founded a new dynasty of rulers in Bijapur, known as the Adil Shahis. From the early part of the 16th century to the middle of 17th century, vigorous structural activity in Bijapur resulted in the appearance of monuments of wonder and grandeur.

**Pictures :** Entrance to Bijapur fort (above, left), Gol Gumbaz (above, right), Ibrahim Roza (below) and Malik-i-Maidan (inset).



## कर्नाटक के दुर्ग Forts of Karnataka

### 9. रायचूर दुर्ग

रायचूर जिले का मुख्यालय, तुंगभद्रा नदी के तट पर बसा हुआ है तथा राज्य की राजधानी बंगलुरु से 409 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

दुर्ग की पश्चिमी दीवार में एक शिलापट्टी पर लिखे एक लम्बे शिलालेख के अनुसार आरंभिक रायचूर दुर्ग, काकतीय रानी रुद्रम्मा देवी के आदेश पर राजा विट्टल ने 13वीं शताब्दी के अंतिम दशक में बनवाया था। बाद में 15वीं तथा 16वीं शताब्दी में यह बहमनी, फिर आदिलशाही शासकों के अधीन हुआ।

आदिलशाही शासकों ने इसमें कई नए भाग जोड़े तथा इसके दुर्गीकरण को और मजबूत बनाया और दुर्ग के बाहर दीवार बनवाई। इस दुर्ग की बाहरी दीवार में सुघड़ कटे हुए बड़े पत्थर आपस में एक दूसरे से बिना किसी चूना सीमेंट इत्यादि के जोड़े गये थे। इसकी तुलना में बाहरी दीवार अनगढ़ पत्थरों को राजगीरी से चिनाई कर बनाई गयी थी और इसमें मुस्लिम कारीगरी की छाप है। गढ़ तथा द्वारों पर अरबी तथा फारसी के विभिन्न शिलालेखों में यही दर्शाया गया है। भीतरी दुर्गीकरण के दो द्वारमार्ग हैं (सैलानी दरवाजा पश्चिम में तथा पूर्व में सिकंदरी दरवाजा) तथा बाहरी दुर्गीकरण में पांच द्वार (पश्चिम में मक्का, उत्तर में नौरंगी, पूर्व में काती, दक्षिण में खंदक तथा डोडी, पूर्वी किनारे की ओर) हैं। बाहरी दीवार तीन ओर से खाई से घिरी हुई है और चौथा दक्षिणी छोर प्राकृतिक रूप से तीन चट्टानी पहाड़ी शृंखला से सुरक्षित है, सभी पर विशाल परकोटे हैं। बाहरी दुर्ग भीतरी दुर्ग से अत्यधिक बड़ा है।

बाला हिसार या गढ़, एक बुलंद पहाड़ी के मध्य उसके दक्षिणी किनारे पर एक असमान चबूतरे पर स्थित है, जो कि बड़े-बड़े पत्थरों की राजगीरी की चिनाई से टिका हुआ है। इसमें मुख्य रूप से एक दरबार हाल, एक बीजापुर शैली की एक मेहराब की मस्जिद है, एक पांच बीवी दरगाह तथा एक वर्गाकार पानी की हौदी है जो कि अब मिट्टी से भर दी गयी है।

**चित्र :** रायचूर दुर्ग का दूरवर्ती दृश्य (ऊपर), रायचूर दुर्ग के प्रवेश द्वारों में से एक (नीचे)



### 9. Raichur Fort

Raichur, on the banks of the Tungabhadra river, is the headquarters of Raichur district. It is located 409 kms from the state capital, Bengaluru.

The original fort at Raichur, according to a long inscription on a slab on the western wall, was built by Raja Vitthala on the order of the Kakatiya queen, Rudramma Devi, in the last decade of the 13th century. It came into the possession of the Bahamanis and later Adil Shahis during the 15th and 16th centuries.

Adil Shahi rulers made several additions and modifications to the fortifications and built the outer fort wall. The walls of this fort are constructed of huge blocks of well-dressed and nicely fitted stones, without the aid of any cementing material. The outer wall, which is constructed of comparatively rough stone masonry, however, is the work of the Muslims, as is shown by the various inscriptions in Arabic and Persian on its bastions and gateways. There are two gateways in the inner fortifications (Sailani *darwaza* in the west and Sikandari *darwaza* in the east) and five in the outer fortifications (Mecca in the west, Naurangi in the north, Kati in the east, Khandak in the south and Doddi in the eastern side). The outer wall is enclosed by a deep moat on three sides, the fourth (or the southern) side being naturally defended by a row of three rocky hills, all fortified with massive ramparts. The outer fort is considerably larger than the inner fort.

The Bala Hissar or citadel, situated on the middle and loftiest of the hills on the southern side, stands on an irregularly shaped platform supported on stone masonry piled up with on rough boulders. It contains mainly, a Durbar Hall, a small one-arched mosque in Bijapur style, a *dargah* called Panch Bibi Dargah and a square cistern now filled up with earth.

**Pictures :** A distant view of Raichur fort (above), one of the entrance gate of Raichur fort (below).



## कर्नाटक के दुर्ग Forts of Karnataka

### 10. शाहपुर दुर्ग

शाहपुर एक नगर है, यह कर्नाटक में बंगलुरु के उत्तर में लगभग 500 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। शाहपुर दुर्ग असमान आकार का है और त्वरित चट्टान के ऊपर बना हुआ है, आरम्भ में यह चट्टान प्रधान सुरक्षा का साधन थी। शाहपुर दुर्ग के दुर्गीकरण दीवार से जुड़े हुए दो मेहराब वाला द्वार मार्ग अब खंडहर की स्थिति में हैं। उनमें से एक के शीर्ष पर फारसी के शिलालेख हैं। दुर्ग का प्रभुत्व एक साध्य चोटीदार पहाड़ी के कारण बनता है, जिस पर अजेय गढ़ बना हुआ है। गढ़ तक पहुँचने के लिए तिगुनी, चूरे गारे की चिनाई से बनी दुर्गीकृत दीवार को पार करना पड़ता है। भीतरी दीवार में छावनी तथा मोर्चा चारदीवारी बने हुए हैं। भीतरी घेरे में एक छोटे प्रवेश मार्ग से जाया जाता है। परकोटों के बीच-बीच में पत्थर की विभिन्न नाप की संरचनाएं हैं, जिनके अलग-अलग उपयोग होते होंगे।

शाहपुर दुर्ग के सात शिलालेखों में से सबसे पुराना शिलालेख 1555 ईस्वी का है। इसके अनुसार यह दुर्ग इब्राहीम आदिलशाह प्रथम ने किसी मोहम्मद यूसुफ द्वारा बनवाया था। उसने छावनियां तथा आवरण मजबूत करवाए। रोचक तथा ध्यान देने योग्य बात है कि शाहपुर दुर्ग तथा नगर के गोगी दरवाजे पर तराशे गये शिलालेखों में शाहपुर के नाम का उल्लेख कहीं भी नहीं है। पौराणिक कथाओं के अनुसार शाहपुर का नाम "सागर" है परन्तु इसके स्थान पर आदिलशाही शासकों द्वारा दिए गये नाम नुसरतबाद का उल्लेख मिलता है।

**चित्र :** शाहपुर दुर्ग के परकोटे



### 10. Shahpur Fort

Shahpur is a town located in Karnataka and it is about 500 kms north of Bengaluru. Shahpur fort is of irregular shape built on precipitous rocks which originally formed the principal defences of the fort. The two arched gateways of the Shahpur fort which are attached with the fortification walls are in ruins. One of them has Persian inscription on top. The fort is dominated by a great attainable conical hill, on which the citadel stands making it impregnable. To reach the citadel one has to pass through triple wall fortification built of masonry in lime-mortar. The inner walls also have bastions with battlements. Entrance to the inner circle is through small doorways. Between the ramparts are several stone structures of various dimensions, serving different purposes.

Of the seven inscriptions at Shahpur fort, the earliest dated 1555, describes that the fort was built by Ibrahim Adil Shah I through one Muhammad Yusuf. He strengthened the bastions and curtains. It is interesting to note that even in the inscriptions carved on Shahpur fort and the town gateway (*Gogi Darwaza*) the name Shahpur does not appear. As per the mythology, the name of Shahpur is 'Sagar'. But in its place the name Nusratbad is mentioned which was given by Adil Shahi rulers.

**Picture :** Ramparts of Shahpur fort.





## कर्नाटक के दुर्ग Forts of Karnataka

### 11. बेलगाँव दुर्ग

बेलगाँव दुर्ग कर्नाटक के सबसे पुराने दुर्गों में से एक है तथा अनेकानेक राजवंशों का पोषक रहा है। रत्ता, विजयनगर शासक, बीजापुर सुलतान, मराठा तथा अंत में अंग्रेजों ने यहाँ शासन किया। स्वतंत्रता संग्राम के समय में महात्मा गांधी को यहाँ कैद में रखा गया। बेलगाम दुर्ग, धार्मिक उदारता की धरोहर का एक मूर्तरूप है, यहाँ पर विभिन्न धर्मों के बहुत से पवित्र तीर्थ स्थल हैं। दुर्ग के वास्तुशिल्प में हिन्दू, जैन तथा मुस्लिम प्रभाव है और मंदिर तथा मस्जिद दोनों ही इसकी सीमा के भीतर स्थित हैं जिनसे यहाँ के सांस्कृतिक सद्भाव के संकेत मिलते हैं। मस्जिदों के वास्तुशिल्प शैली में भारतीय समागम तथा दक्षिणी शैली पाई जाती है।

दुर्ग के प्रवेशद्वार पर दो हिन्दू पुण्य स्थल हैं : एक गणेश मंदिर तथा दूसरा मंदिर देवी दुर्गा को समर्पित। दुर्ग के भीतर दो जैन मंदिर हैं, जिसमें नेमिनाथ जी की काले पत्थर की मूर्ति वाला 'कमल बसादी' अधिक प्रसिद्ध है। यह 1204 ईस्वी में चालुक्य शैली से बना था तथा दूसरा 'चिक्की बसादी' कहलाता है जो अब खंडहर हो गया है, किसी समय में यह जैन वास्तुशिल्प का सुन्दर नमूना था। इसका अग्रभाग, छोटी नृत्यरत मूर्तियों, संगीतज्ञों तथा समाकृत फूलों की पंक्तियों से सुसज्जित था। दुर्ग में दो मस्जिदें हैं, जिनके नाम सफा मस्जिद तथा जामिया मस्जिद हैं, पहली वाली में बेलगाँव नगर के मुस्लिम निवासियों का बहुत आना-जाना है।

एक लहरदार मैदानी भूमि पर स्थित यह दुर्ग अंडाकार है तथा मुलायम लाल पत्थर की खुदाई से बनी गहरी तथा चौड़ी खाई से घिरा हुआ है। मूल रूप से यह जय राय द्वारा 1204 ई. में बनाया गया, जिन्हें बिच्ची राजा भी कहते हैं, वह रत्ता राजवंश के मित्र थे। कई शताब्दियों तक उस क्षेत्र के शासकों द्वारा इसके अनेक नवीनीकरण हुए। फिर भी इसको गहरी खाई, ऊंची दीवारों, चाहरदीवारी, गढ़ तथा मुंडेर से घेर कर अजेय दुर्ग में रूपांतरित करने का श्रेय बीजापुर सल्तनत के याकूब अली खान को मिलता है। 1686 ईस्वी में मुगल शासक औरंगजेब ने बीजापुर सल्तनत को हरा कर बेलगाँव पर अपना अधिकार कर लिया।

**चित्र :** कमल बसादी के भीतर जैन मंदिर (ऊपर), सफा मस्जिद के भीतरी भाग का दृश्य (नीचे), सफा मस्जिद के स्तंभ का ब्योरा (नीचे, दाहिने)



### 11. Belgaum Fort

One of the oldest forts in Karnataka, the Belgaum fort played host to a multitude of dynasties, from the Rattas, the Vijayanagar emperors, Bijapur Sultans, Marathas and finally the British. During the freedom movement of India, Mahatma Gandhi was imprisoned here. The Belgaum fort is also an embodiment of the legacy of religious tolerance in Belgaum as there are a number of sacred shrines pertaining to different religions. The fort has Hindu, Jain and Muslim architectural influence with temples and mosques located within its limits, indicating cultural syncretism. The architectural styles seen in the mosques are of the Indo-Saracenic and Deccan type.

There are two Hindu shrines at the fort entrance - one devoted to Ganesha and another to goddess Durga. There are two Jain temples inside the fort, the Kamal Basadi, with the Neminatha idol in black stone is more famous. It was built in the Chalukyan style in 1204 C.E. The other temple called the Chikki Basadi is in ruins. It was once considered as a "remarkable piece of Jain architecture". It had a frontage, which was ornamented with rows of dancing figurines, musicians, and trimmed flowers. The fort has two mosques or *masjids*, namely the Safa Masjid and Jamia Masjid; the former mosque is the most frequented by the Muslim population of the city of Belgaum.

Located in an undulating plain land, the fort is of oval shape and is surrounded by a deep and wide moat excavated in soft red stone. It was originally built by Jaya Raya, also called Bichi Raja, an ally of the Ratta Dynasty, in 1204 C.E. However Jakub Ali Khan of the Bijapur Sultanate is responsible for transforming the fort into an invincible fortress surrounded by a deep moat, huge walls, bastions, battlements and parapets. In 1686, the Mughal emperor Aurangzeb defeated the Bijapur Sultanate, and Belgaum came under his control.

**Pictures:** Jain temple inside the Kamal Basadi (above), view of interior of Safa Masjid (below, left) and detail of pillar of Safa Masjid (below, right).



## कर्नाटक के दुर्ग Forts of Karnataka

### 12. बेल्लारी दुर्ग

कर्नाटक राज्य के बेल्लारी जिले में बेल्लारी एक ऐतिहासिक नगर है। यह दुर्ग बेल्लारी गुड्डा (कन्नड़ में पहाड़ी) अथवा दुर्ग पहाड़ी की चोटी पर बना हुआ है। यह दो भागों में विभाजित है ऊपरी दुर्ग तथा निचला दुर्ग। ऊपरी दुर्ग एक बहुभुजीय दीवार से घिरा, पहाड़ी चोटी पर बना हुआ है। जिस पर पहुँचने का केवल एक ही मार्ग है। यहाँ रक्षा सेना अथवा मोर्चाबंदी का कोई स्थान नहीं है। इसका गढ़ लगभग 2000 फीट ऊंची पहाड़ी चोटी पर है, जो एक के ऊपर एक, तीन श्रेणी की दुर्गबंदी से सुरक्षित है। इसमें चट्टान की खुदाई करके अनेक जलाधार भी बने हुए हैं।

कंगूरेदार परकोटे ढकी हुई खाई के मार्ग से घिरे हुए हैं। दुर्ग तक पहुँचने वाला केवल एक ही मार्ग है, जो घुमावदार पहाड़ी पर पत्थरों के बीच से होता हुआ जाता है। सबसे ऊपर गढ़ के बाहर एक छोटा मंदिर है, कुछ कोष्ठों के अवशेष तथा अनेक गहरे जलाशय हैं। गढ़ के भीतर अनेक सुदृढ़ भवन तथा विभाजित चट्टान के खंड तालु से बने अनेक जलाशय हैं।

नीचे वाला दुर्ग चट्टान के पूर्वी तल पर आधे मील के व्यास वाले घेरे में बना हुआ है। संभवतः यह शस्त्रागार तथा सेना निवास के लिए उपयोग किया जाता था। यह परकोटों से घिरा हुआ है तथा इसमें अनेक छावनियाँ हैं और सामने खाई तथा हिमनदी है। इसमें दो प्रवेशमार्ग द्वार हैं, पूर्वी तथा पश्चिमी छोर पर। निचले दुर्ग के पूर्वी द्वार पर 'कोट आजनेय' हनुमान मंदिर है।

पहाड़ी को घेरता हुआ दुर्ग, विजयनगर के समय में हांडे हनुमप्पा नायक द्वारा बनाया गया था। 1769 ई. में हैदर अली ने इसे हांडे नायक परिवार से लेकर दुर्ग को अपने अधिकार में कर लिया तथा एक फ्रांसीसी अभियन्ता की सहायता से दुर्ग का नवीनीकरण व सुधार कार्य किया। पहाड़ी के पूर्वी किनारों को घेरते हुए निचला दुर्ग, हैदर अली द्वारा बनवाया गया था। एक दंतकथा के अनुसार, अभागे फ्रांसीसी अभियन्ता को फ्रांसी की सजा मिली, क्योंकि उसने इस तथ्य को अनदेखा कर दिया कि पड़ोसी कुंबार गुड्डा बेल्लारी गुड्डा से ऊंची पहाड़ी है जिससे दुर्ग की श्रेष्ठता और गोपनीयता जैसे गुणों पर प्रभाव पड़ता है परन्तु उनसे समझौता करना पड़ा।

**चित्र :** ऊपरी दुर्ग का प्रवेश (ऊपर), दुर्ग के भीतर मंदिर के अवशेष (नीचे)



### 12. Bellary Fort

Bellary is a historic city in Bellary district in the state of Karnataka. The Bellary fort is built on top of Ballari Gudda (hill in Kannada) or the Fort Hill. The fort is divided as the Upper Fort and the Lower Fort. The Upper Fort is a polygonal walled building on the summit, with only one approach, and has no accommodation for a garrison. The Upper Fort consists of a citadel on the summit of the rock at approximately 2000 feet, guarded by three outer lines of fortification, one below the other. It contains several cisterns, excavated in the rock.

The turreted rampart is surrounded by a ditch and covered way. There is only one way up to the fort, which is a winding rocky path amongst the boulders. On the top, outside the citadel is a small temple, the remains of some cells and several deep pools of water. Within the citadel are several strongly constructed buildings, and an ample water supply from reservoirs constructed in the clefts of the rocks.

The Lower Fort lies at the eastern base of the rock and measures about half a mile in diameter, and probably had an arsenal and barracks. It consists of a surrounding rampart, numerous bastions, faced by a deep ditch and glacis. The entrance to the Lower Fort is via two gates, one each on the western and eastern sides. Just outside the eastern gates of the Lower Fort is a temple dedicated to Lord Hanuman - the Kote Anjaneya Temple.

The Fort was built round the hill during Vijayanagar times by Hande Hanumappa Nayaka. Hyder Ali, who took possession of the fort from the Hande Nayaka family in 1769, got the fort renovated and modified with the help of a French engineer. The Lower Fort was added by Hyder Ali around the eastern half of the hill. Legend has it that the unfortunate French engineer was hanged, for overlooking the fact that the neighbouring Kumbara Gudda is taller than Ballari Gudda, thus compromising the secrecy and command of the fort.

**Pictures:** Entrance of Upper fort (above), Remains of temples inside the fort (below).



## कर्नाटक के दुर्ग Forts of Karnataka

### 13. बंगलुरु दुर्ग

बंगलुरु दुर्ग कर्नाटक के दक्षिणी पूर्वी भाग के दक्षिणी पठार पर स्थित है। दुर्ग की परिधि लगभग एक मील है, यह ठोस राजगीरी के काम से बना हुआ और चौड़ी खाई से घिरा हुआ है। परकोटों के बीच में बने 26 बुर्ज दुर्ग को प्रभावशाली बनाते हैं। इसके उत्तर में दुर्गीकृत शहर स्थित है, जिसका कई मील का घेरा है तथा केक्टस इत्यादि की पट्टी से बने एक परकोटे और एक छोटी खाई द्वारा सुरक्षित है।

बंगलुरु दुर्ग मूलरूप से एक मिट्टी के दुर्ग जैसा 1537 ई. में विजयनगर साम्राज्य तथा बंगलुरु के संस्थापक केंपगौड़ा ने बनवाया था।

विजयनगर साम्राज्य के पतन के बाद यहाँ के शासक समय-समय पर बदलते रहे। 1638 ई. में रानादुल्लाखान ने बीजापुर की बड़ी सी सेना का नेतृत्व किया और शाह जी भोंसले के साथ मिल कर केंपगौड़ा – तृतीय को हरा दिया। जिसके बाद बंगलुरु उसको जागीर के रूप में दे दी गयी। बाद में बंगलुरु मैसूर के चिक्कदेवराजा वाडियार (1673–1704 ई.) को 3,00,000 रुपये में बेच दिया गया। 1759 ई. में मैसूर की सेना के प्रधान सेनापति हैदर अली ने स्वयं को मैसूर का वास्तविक शासक घोषित कर दिया। 1761 ई. में हैदर अली ने दुर्ग को पत्थर के दुर्ग के रूप में बदल दिया। इसी दुर्ग में डेविड बेअर्ड तथा अनेक अंग्रेज सेना अधिकारियों को हैदर अली ने कैद में रखा था। ब्रिटिश शासन के विरुद्ध मैसूर शासक के संघर्ष का साक्षी है यह दुर्ग।

हैदर अली के बाद मैसूर का राज्य उसके बेटे टीपू सुल्तान को मिला जिसे 'मैसूर का शेर' कहा जाता है। बंगलुरु दुर्ग, टीपू सुल्तान का गढ़ था। उसने दुर्ग को और बढ़ाया और यह टीपू सुल्तान दुर्ग नाम से जाना गया। बारीक नक्काशीदार मेहराब, मुस्लिम शैली में बने थे। इस दुर्ग का दूसरा आकर्षण इसके भीतर स्थित अच्छी तरह संरक्षित गणपति मंदिर भी है।

**चित्र :** बंगलुरु दुर्ग का भीतरी दृश्य (ऊपर), बंगलुरु दुर्ग का मुख्य प्रवेश (नीचे, बाएँ), मुख्य प्रवेश पर अभिप्रायों का ब्योरा (नीचे, दाएँ)



### 13. Bengaluru Fort

Bengaluru fort is located on the Deccan Plateau in the south-eastern part of Karnataka. The fort at Bengaluru had a perimeter of about one mile; it was of solid masonry, surrounded by a wide ditch which was commanded from 26 towers placed at intervals along the ramparts. To its north lay the fortified town, several miles in circumference and protected by a rampart constituting of a deep belt of thorn and cactus, and a small ditch.

Bengaluru fort was originally built as a mud fort in 1537 by Kempe Gowda a feudatory of the Vijayanagar empire and the founder of Bengaluru.

After the fall of the Vijayanagara empire, Bengaluru's rule changed hands several times. In 1638, a large Bijapur army led by Ranadulla Khan and accompanied by Shahji Bhonsle defeated Kempe Gowda III and Bengaluru was given to him as a *jagir*. Later on, Bengaluru was sold to Chikkadevaraja Wodeyar (1673–1704) of Mysuru for 3,00,000 rupees. In 1759, Hyder Ali, Commander-in-Chief of the Mysuru Army, proclaimed himself the de facto ruler of Mysuru. He converted the fort into a stone fort in 1761. It was here that Hyder Ali imprisoned David Baird, along with a number of other army officers of the British. The fort stands as a witness to the struggle of the Mysuru Emperor against the British domination.

The kingdom later passed to Hyder Ali's son Tipu Sultan, known as the Tiger of Mysore. Bengaluru Fort was a stronghold of Tipu Sultan. He later extended the fort and it came to be known as the Tipu Sultan Fort. The intricately carved arches of the fort have been built as per the Islamic style. Another major attraction of the fort is also the well-preserved Ganapati temple situated inside it.

**Pictures:** Inside view of Bengaluru fort (above), Main Entrance of Bengaluru fort (below, left) and detail of motifs on Main Entrance (below, right).



## कर्नाटक के दुर्ग Forts of Karnataka

### 14. चित्रदुर्ग का दुर्ग

यह दुर्ग कर्नाटक के चित्रदुर्ग जिले में स्थित है। हम्पी से लगभग 120 कि.मी. दूरी तथा बंगलुरु से लगभग 200 कि.मी. की दूरी पर है। 'चित्रदुर्ग' शब्द कन्नड़ भाषा के दो शब्दों से बना है, 'चित्र' तथा 'दुर्ग'। इसका स्थानीय नाम 'येलुसुत्तिना कोटे' अर्थात् 'सात चक्र दुर्ग' है। 'चिनमूलाद्रि' पहाड़ी शृंखला से घिरी सात समकेन्द्रीय दीवारें इस दुर्ग का दुर्गीकरण करती हैं। प्रत्येक दीवार में एक द्वार है जिसके साथ एक सर्पिल संकरा ऊपर जाता हुआ गलियारा है जिससे हाथियों द्वारा हमला करके द्वार तोड़ना अत्यंत कठिन हो जाता था। दुर्ग की दीवारों में छोटे झरोखे बने हुए हैं जिनमें से तीरंदाज दुश्मन पर तीर चला सकें। बाहरी दीवार में चार द्वार बने थे। कन्नड़ भाषा में इन्हें बागिलू कहते हैं, ये चार द्वार—रंगय्यना बागिलू, सिद्ध्यना बागिलू, उच्चंगी बागिलू तथा लालकोटे बागिलू हैं।

कथानुसार इस दुर्ग का क्षेत्रफल 1500 एकड़ है। दुर्ग की कुल दीवार लगभग 8 कि.मी. लम्बी है। इसके अजेय दुर्गीकरण में सुरक्षा के लिए इसमें द्वारमार्ग, चोर दरवाजे, पानी की टंकियां तथा घुसपैठियों की पहरेदारी के लिए बने पर्यवेक्षण बुर्ज इत्यादि हैं। सामान रखने के लिए गोदाम खदान तथा भंडार गृह, प्राथमिक तौर पर खाना, पानी तथा शस्त्र आपूर्ति के लिए बनाये गये थे, जिससे दुश्मनों की घेराबंदी के समय लम्बे काल तक आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति होती रहे। विलक्षण रूप से, ये सभी सुविधाएं आज भी सुरक्षित हैं। आरंभ में ये स्थान मिट्टी के बनाये गये थे परन्तु बाद में 18वीं शताब्दी ई. में थोड़ा-थोड़ा करके इन्हें ग्रेनाइट की शिला पट्टियों से पुख्ता किया गया। दुर्ग के कई भागों में एक असाधारण विशेषता देखी जा सकती है। बड़े-बड़े ग्रेनाइट के शिलाखंडों को जोड़ने के लिए कहीं भी सीमेंट गारा इत्यादि जोड़ने वाले मिश्रण का प्रयोग नहीं किया गया अपितु इन्हें नाप कर, काट छॉट करके आपस में एक दूसरे के साथ जमा कर रखा गया है।

यह दुर्ग 10वीं से 18वीं शताब्दी के बीच कई चरणों में, इस क्षेत्र के राजवंशों द्वारा बनाया गया जिसमें राष्ट्रकूट, चालुक्य तथा होयसल भी शामिल हैं परन्तु केवल चित्रदुर्ग के नायक अथवा पालेकर नायक, दुर्ग के विस्तार के उत्तरदायी हैं क्योंकि नायक राजवंश का शासन 200 साल से अधिक रहा। मदकरी नायक पंचम के शासन तक चित्रदुर्ग के दुर्ग के नायकों का गढ़ तथा उस प्रान्त की जान रहा, इनका अंतिम शासक मैसूर के हैदर अली द्वारा पराजित हुआ। यह दुर्ग, कर्नाटक के इस भाग के शासन में नायक राजवंश के लिए एक श्रद्धांजलि है।

**चित्र :** चित्रदुर्ग के दुर्ग का मुख्य प्रवेश (ऊपर, बाएँ), चित्रदुर्ग के दुर्ग के परकोटे (ऊपर, दाएँ), महल परिसर (नीचे, बाएँ), अक्का तंगियर्रा हौदा (नीचे, दाएँ)



### 14. Chitradurga Fort

Chitradurga fort is situated in the Chitradurga district of Karnataka. It is located approximately 120 kms from Hampi, and approximately 200 kms from Bengaluru. Chitradurga is formed of two words in the Kannada language: '*chitra*' means "picture" and '*durga*' means "fort". It is locally known as '*Yelusuttina Kote*' or "Seven circles fort". The Chinmuladri range constituting of seven hills is enclosed by a series of seven concentric fortification walls which is the Chitradurga fort. Each wall has a gate with an ascending access through winding, and turning narrow corridors which would make it difficult to use elephants for attacking the fort or to break down the gates. Small embrasures in the fort walls were provided for use by archers to shoot arrows at the enemy. Four gates were provided in the outer most walls. The four gates (called '*Bagilu*' in Kannada) are called *Rangayyana Bagilu*, the second one called *Siddayyana Bagilu*, third one is called the *Uchchangi Bagilu* and fourth one is named *Lalkote Bagilu*.

The area covered by the fort is reported to be 1,500 acres. The total length of the fort walls is about 8 kms. The impregnable fortification for defence purposes consisted of gateways, posterior entrances, water tanks and watch towers to guard and keep vigil on the enemy incursions. The storage warehouses, pits and reservoirs were primarily designed to ensure food, water and military supplies required to endure a long siege. Uniquely, all these facilities are still well conserved. Initially, it was built in mud but was subsequently strengthened in stretches with granite stone slabs in the 18th century C.E. An outstanding feature noticed in several stretches of the fort walls is that no cementing material has been used in joining the large granite cubes that have been neatly sized, cut, trimmed and placed in position.

The fort was built in stages between the 10th and 18th centuries by the dynastic rulers of the region, including the Rashtrakutas, Chalukyas and Hoysalas. However, the Nayakas of Chitradurga, or Palegar Nayakas, were solely responsible for the expansion of the fort as the dynastic reign of the Nayakas lasted for over 200 years. The Chitradurga fort was their stronghold and the very heart of their province until Madakari Nayaka V, its last ruler was defeated by Hyder Ali of Mysore Kingdom. The fort thus stands as a tribute to the Nayakas who ruled this part of Karnataka.

**Pictures:** Main Entrance of Chitradurga fort (above, left), Ramparts of Chitradurga fort (above, right), Palace Complex (below, left) and Akka Tangiyarra Houda (below, right).





## कर्नाटक के दुर्ग Forts of Karnataka

### 15. सेरिंगपट्टम दुर्ग

प्राचीन दुर्गनगर सेरिंगपट्टम (आज का श्रीरंगपट्टन अथवा श्रीरंगपट्टनम्) मैसूरु से लगभग 15 कि.मी. तथा बंगलुरु से लगभग 120 कि.मी. की दूरी पर कावेरी नदी के एक द्वीप पर स्थित है। द्वीप दुर्ग के भीतर एक आकर्षक दीवार से घिरा हुआ आँगन है जिसमें जलद्वार की ओर मार्ग बनाते हुए बरगद के पेड़ों के नीचे उभरी हुई नक्काशी के बने साँपों के चित्र हैं। दुर्ग के पूर्वी भाग में शहर की ओर टीपू का ग्रीष्मकालीन महल है, जिसके बाग में बड़ी सुन्दर कारीगरी की लाल और सफेद खड़ी धारियों के मिश्रण वाली दीवारें हैं। इन दीवारों पर हैदर अली द्वारा कर्नल की पराजय के दृश्यों के चित्र बने थे, जिन्हें बाद में लार्ड डलहौजी के आदेश पर वेलेसली द्वारा दोबारा चित्रकारी की गयी। उन्होंने हैदर अली और टीपू सुल्तान के मकबरों के लिए, जो लालबाग से आगे पूर्व दिशा में हैं, हाथी दांत से जुड़े शीशम के दोहरे दरवाजे भी लगवाए। कर्नल बैली, जो कि कैद में ही मर गये थे, का स्मारक भी पास में ही है।

यह मुस्लिम शासकों— हैदर अली (1722–1782 ई.) तथा टीपू सुल्तान (1753–1799 ई.) की राजधानी थी। श्री रंगनाथ स्वामी (भगवान विष्णु) के हिन्दू मंदिर के नाम पर इसका नाम रखा गया था तथा यह द्वीप के पश्चिमी किनारे पर स्थित है। यह नगर दो सबसे प्रसिद्ध युद्ध घेराबंदी, आंग्ल-मैसूरु युद्ध (1792 तथा 1799 ई.) का घटनास्थल बना।

अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी तथा मैसूरु राज्य के बीच चौथे आंग्ल-मैसूरु युद्ध में सेरिंगपट्टम का घेराव (5 अप्रैल–4 मई, 1799) अंतिम आमना-सामना था। सेरिंगपट्टम दुर्ग की दीवार भेद कर तथा गढ़ पर हमला कर अंग्रेजों ने निर्णायक जीत प्राप्त की। मैसूरु का शासक टीपू सुल्तान युद्ध करते हुए मारा गया। जीत के बाद अंग्रेजों ने पुनः राजगद्दी वाडियार राजवंश को दे दी परन्तु अप्रत्यक्ष रूप से राज्य पर अपना अधिकार बनाये रखा।

**चित्र :** सेरिंगपट्टम दुर्ग का प्रवेश (ऊपर, बाएँ), जगह, जहाँ टीपू का शरीर पाया गया (ऊपर, दाएँ), कर्नल बैली के तहखाने का आंतरिक दृश्य (नीचे, बाएँ), स्मारक स्तंभ (नीचे, दाएँ)



### 15. Seringapatam Fort

The ancient fortress city of Seringapatam (now called Srirangapatna or Srirangapatnam) was located on an island in the Cauvery river approximately 15 kms from Mysuru and approximately 120 kms from Bengaluru. The island fort has an attractive walled courtyard with reliefs of serpents beneath banyan trees leading to the Water Gate. Tipu's summer palace is just outside the east side of the fort, a confection of red and white vertically striped walls in a garden. Its wall paintings, depicting Colonel Baillie's defeat at the hands of Haider Ali, were restored by Wellesley and later repainted on the orders of Lord Dalhousie. He also gave the double doors, rosewood inlaid with ivory, for the mausoleum of Haider Ali and Tipu Sultan, which stands in the Lalbagh further east. The memorial of Colonel Baillie, who died a prisoner, is nearby.

It was the capital for the Muslim rulers of the kingdom of Mysore, Haidar Ali (1722 – 1782) and his son, Tipu Sultan (1753 – 1799). The name is derived from the ancient Hindu temple of Sri Ranganatha Swami (the Hindu god Vishnu), which is located at the western end of the island. The city became the site of two of the most famous sieges of the Anglo-Mysore Wars (in 1792 and 1799).

The Siege of Seringapatam (5 April – 4 May 1799) was the final confrontation of the Fourth Anglo-Mysore War between the British East India Company and the Kingdom of Mysuru. The British achieved a decisive victory after breaching the walls of the fortress at Seringapatam and storming the citadel. Tipu Sultan, Mysuru's ruler, was killed in the action. The British restored the Wodeyar dynasty to the throne after the victory, but retained indirect control of the kingdom.

**Pictures:** Entrance of Seringapatam fort (above, left), Place where Tipu's body was found (above, right), Inside view of Colonel Baillie's Dungeon (below, left) and Memorial Tower (below, right).



## कर्नाटक के दुर्ग Forts of Karnataka

### 16. मुद्गल दुर्ग

मुद्गल दुर्ग कर्नाटक के रायचूर जिले में स्थित है। इस दुर्ग के दुर्गीकरण को अधिक सबल बनाने के लिए इसमें पत्थर की दीवारें तथा मजबूत गोलाकार असमान आकार की छावनियां बनी हुई हैं। इसमें दोहरी दीवार का दुर्गीकरण है। पहले प्रवेशमार्ग में पुख्ता लकड़ी का दरवाजा है जिसमें लम्बी, बाहर निकली हुई लोहे की कीलें जड़ी हुई हैं। बाहरी प्रवेशमार्ग के खम्बे पर चार लोहे की जंजीरें गड़ी हुई हैं। मूल रूप से ये जंजीरें लम्बी थीं तथा एक सिरे से दूसरे सिरे तक दरवाजों पर बाँध कर सुरक्षा करने के काम आती थीं। दूसरे द्वार तक पहुँचने का रास्ता एक सींग के आकार की व्यवस्था है जिसमें दोनों ओर प्रहरी कक्ष हैं। मोर्चाबंदी के लिए चारदीवारी है, जिसमें छेद बने हुए हैं।

बाहरी दुर्ग को एक पानी से भरी चौड़ी खाई ने घेरा हुआ है। खाई की चौड़ाई भिन्न-भिन्न है, कई स्थानों पर 50 गज तक चौड़ी है। खाई के पीछे की कगार पर एक छावनियों की शृंखला है उसके बाद एक सँकरा ढका हुआ रास्ता है, जिससे जुड़ी दूसरे किनारे की कगार है, जिस पर यह विशाल गढ़ बना हुआ है। वर्तमान दुर्ग की व्यवस्था देखते हुए लगता है कि बंदूकों, तोपों की खोज के बाद इसे दोबारा बनवाया गया था। अनेक स्थानों पर हिंदू शैली में राजगीरी के काम हैं, परन्तु तोरण के आकार की मुंडेर मुस्लिम पद्धति से बनी हुई है। खाई तथा छावनियों की शृंखला मिल कर एक अच्छा दृश्य प्रस्तुत करते हैं।

मूलरूप में मुद्गल काकतीय राज्य की एक सीमान्त बस्ती थी। यह यादवों के अधिकार से दिल्ली के सुल्तानी अधिकार, विजयनगर और फिर बहमनी राज्य के अधिकार में आई। आदिलशाही राज्य की स्थापना के समय दुर्ग इस राज्य का भाग था। आदिलशाह ने इसे फिर बनवाकर इसकी सुरक्षा सबल बनाई। मुद्गल दुर्ग के अनेक शिलालेख बीजापुर शासकों जैसे अली आदिलशाह प्रथम (1558-80 ई.) तथा इब्राहीम आदिलशाह द्वितीय (1580-1627 ई.) से संबंधित हैं।

**चित्र :** मुद्गल दुर्ग के परकोटे (ऊपर), मुद्गल दुर्ग की दीवारों में कंगूरे (नीचे)



### 16. Mudgal Fort

Mudgal fort is situated in the Raichur district of Karnataka. Mudgal has strong fortifications of stone walls and strong circular bastions of irregular shape. It has a double wall fortification. The first entrance has strong wooden gate with long projecting iron spikes. At the outer gateway column, there are four hooked iron chains. Originally they were longer, they were probably meant to tie across the gateway for protection. The second gate is entered through horn-shaped arrangement and has guard rooms on either side. The battlements are strong with machicolation.

The outer fort has a wide moat, which is filled with water. The width of the moat varies, being as much as 50 yards at several places. Behind the moat, there is a scarp with a row of bastions and after that, a narrow covered passage and adjoining it the counter scarp with very massive bastions. From the arrangement of the existing fort, it is apparent that the fort was rebuilt after the inventions of guns. The courses of masonry at several places are of Hindu style, but the arch-shaped parapet is of Muslim design. The moat and the row of bastions together offer a pleasing view.

Mudgal was originally an outpost of the Kakatiya kingdom. It passed hands from the Yadavas to the Delhi Sultans, Vijayanagar and the Bahamani kingdom. When Adil Shahi kingdom was established, the fort was part of the kingdom. The Adil Shahs rebuilt it and strengthened the defences of the fort. Several inscriptions at Mudgal fort belong to Bijapur rulers like Ali Adil Shah I (1558-80) and Ibrahim Adil Shah II (1580-1627).

**Pictures:** Ramparts of Mudgal fort (above) and merlons in the walls of Mudgal fort (below).



## कर्नाटक के दुर्ग Forts of Karnataka

### 17. जमालाबाद दुर्ग

जमालाबाद दुर्ग बेल्लानगढ़ी नगर के उत्तर में 8 कि.मी. की दूरी (मंगलुरु से लगभग 65 कि.मी.) एवं समुद्र तल से 1788 फीट की ऊंचाई पर स्थित है। ग्रेनाइट की उस पहाड़ी को, जिस पर यह स्थित है, को पहले नरसिंहगढ़ कहते थे। स्थानीय लोग इसे 'जमाल गड्डा' भी कहते हैं।

दुर्ग तक पहुँचने के लिए केवल एक ही सँकरा मार्ग है, जो उसी ग्रेनाइट पहाड़ी में से लगभग 1876 सीढ़ियाँ काट कर बना है, जिस पर यह दुर्ग स्थित है, और यह मार्ग सीधा पहाड़ी चोटी अर्थात् दुर्ग तक पहुँचाता है। इस मार्ग के बिना दुर्ग तक पहुँचना असंभव है।

गढ़ के भीतर पानी एकत्र करने की एक टंकी तथा एक छोटी सी पहाड़ी पर रखी एक तोप के बचे हुए भाग हैं। दुर्ग की दीवार तथा मुंडेरों के कुछ सकेत मिलते हैं इससे अधिक कुछ बचा नहीं है। यह दुर्ग टीपू सुल्तान द्वारा 1794 ई. में बनवाया गया था और उसका नाम उसकी माँ, जमालाबी के नाम पर रखा गया था। यह दुर्ग पुराने दुर्ग के खंडहरों पर ही बनवाया गया है। चौथे आंग्ल-मैसूर युद्ध के समय 1799 ई. में अंग्रेजों ने दुर्ग पर अपना अधिकार कर लिया था।

**चित्र :** जमालाबाद दुर्ग का दूरवर्ती दृश्य (ऊपर), जमालाबाद दुर्ग का प्रवेश (नीचे)



### 17. Jamalabad Fort

Jamalabad fort, located 8 kms north of Beltangadi town, (approximately 65 kms from Mangaluru) is 1788 ft above sea level and was formerly called Narasimha Ghada, which refers to the granite hill on which the fort is built. It is also referred to locally as 'Jamalagadda'.

The fort is inaccessible other than via a narrow path, with nearly 1876 steps to the fort that are cut out of the granite hill and lead all the way to the top through the fort to the summit.

Inside the citadel there is only one tank to store water and the remains of a single cannon on the hillock. Nothing much of the fort remains except hints of the fort wall with parapets. The fort was built by Tipu Sultan in 1794 and named after his mother, Jamalabee. The fort is said to have been built over the ruins of an older structure. The fort was captured by the British in 1799 during the Fourth Anglo-Mysore war.

**Pictures:** A distant view of Jamalabad fort (above) and entrance of Jamalabad fort (below).



## कर्नाटक के दुर्ग Forts of Karnataka

### 18. देवनहल्ली दुर्ग

देवनहल्ली दुर्ग कर्नाटक में बंगलुरु नगर के उत्तर में लगभग 35 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। वर्तमान दुर्ग हैदर अली तथा टीपू सुल्तान द्वारा पत्थर का बनवाया गया था। यह 20 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है, लगभग अंडाकार है तथा पूर्वी दिशा की ओर निर्धारित है। इसके दुर्गीकरण के लिए 12 अर्ध गोलाकार गढ़, समान दूरी पर बने हुए हैं, जिन पर राजगीरी की सजावटी परत बनी हुई है। दुर्गीकरण के भीतरी भाग में मोर्चाबंदी के लिए बड़ी चारदीवारी बनी हुई है। दुर्ग में पूर्व तथा पश्चिम में प्रवेश मार्ग हैं जिन पर सुंदर कटे हुए प्लास्टर का काम है। प्रवेश मार्ग संकरे और छोटे थे कि उस समय के घोड़ों की आवाजाही के लिए सुविधाजनक रहे हों। गढ़ में चूने और ईंटों के बने स्थान थे जिन पर तोपें रखी जा सकें। वह घर जिसमें टीपू और हैदर अली रहते थे, आज तक बना हुआ है। टीपू सुल्तान और हैदर अली के दरबार के एक बड़े अधिकारी दीवान पूर्णय्या का घर भी दुर्ग के अन्दर स्थित है।

यह मूल रूप से मल्लाबैरेगौड़ा द्वारा 1501 ई. में बनाया गया था तथा 18वीं शताब्दी के मध्य तक उसी के वंशजों के अधिकार में रहा। 1749 ई. में तत्कालीन मैसूर के दलवाई, नंजराजैया ने हमला करके अपने अधिकार में कर लिया।

बाद में यह दुर्ग हैदर अली और उसके बाद टीपू सुल्तान के अधिकार में आया। 1791 ई. में लार्ड कार्नवालिस ने आंग्ल – मैसूर युद्ध के समय दुर्ग पर चढ़ाई कर अपना अधिकार स्थापित किया।

**चित्र :** देवनहल्ली दुर्ग की बाहरी दीवार का एक दृश्य (ऊपर, बाएँ), टीपू सुल्तान का जन्म स्थान (ऊपर, दाएँ), देवनहल्ली दुर्ग के शेष हिस्से का आंतरिक दृश्य (नीचे)



### 18. Devanahalli Fort

Devanahalli fort is located approximately 35 kms north of Bengaluru city, in Karnataka. The present fort was built of stone by Hyder Ali and Tipu Sultan. It is spread over an area of 20 acres. The roughly oval east oriented fortification veneered with dressed masonry has as many as 12 semi-circular bastions at regular intervals. A spacious battlement is provided towards the inner side of the fortification. The fort has entrances decorated with cut plasterwork at the east and west. The entrances are quite small, comfortable enough for the horses of yore. The bastions are provided with gun points built with lime and brick. The house in which Tipu and Hyder Ali lived also exists till date. The house of Dewan Purnaiah, a high ranking official in Hyder Ali and Tipu Sultan's court, is also located inside the fort.

It was originally built in 1501 by Mallabairegowda, and it remained in the hands of his descendants until the mid-eighteenth century. In 1749, the then Dalwai of Mysuru, Nanjarajaiah, attacked the fort and occupied it.

Later, the fort passed into the hands of Hyder Ali and subsequently Tipu Sultan. In 1791, Lord Cornwallis laid siege to the fort and took its possession during the Anglo-Mysore War.

**Pictures:** A view of outer wall of Devanahalli fort (above, left), birth place of Tipu Sultan (above, right) and inside view of remains of Devanahalli fort (below).





## कर्नाटक के दुर्ग Forts of Karnataka

### 19. मिर्जन दुर्ग

मिर्जन दुर्ग मुस्लिम तथा पुर्तगाली तकनीकी से बनाया गया जिससे वह कर्नाटक के उत्तरी कन्नड़ जिले के सबसे मजबूत और बड़े दुर्गों में से एक है। यह कर्नाटक के पश्चिमी तट पर स्थित था तथा प्रसिद्ध बंदरगाह था। प्लिनी, 77 ई. तथा पेरिप्लस 247 ई. के वर्णनानुसार यहाँ रोमन व्यापारी पहली तथा तीसरी शताब्दी के बीच समय-समय पर आते रहे। काली मिर्च, दालचीनी तथा अरबी घोड़ों इत्यादि के समुद्री व्यापार में इस बंदरगाह नगर की प्रमुख भूमिका रही। बीजापुर के आदिलशाही सुल्तान के एक जागीरदार शरीफ-उल-मुल्क (1608-1640 ई.) ने 17वीं शताब्दी में इस दुर्ग को बनवाया था। विजयनगर साम्राज्य के पतन के बाद यह पूरी तरह से बीजापुर के बहमनी सुल्तान आदिलशाहियों के अधिकार में हो गया जो उत्तर कन्नड़ क्षेत्र का छोटा सा शासक परिवार था। इसके बाद पुर्तगाली, हैदर अली, टीपू तथा अंत में अंग्रेजों ने इस पर अपना अधिकार किया।

यह दुर्ग एक ऊँचे टीले पर 11.8 एकड़ के क्षेत्र में फैला हुआ है। यह लेटराइट के लाल चट्टानी पत्थर से बना हुआ है। इसके चार प्रवेशमार्ग हैं, यह एक खाई से घिरा हुआ है जिसमें पास के झरने कुद्रेहल्ला से लगातार पानी पहुँचाया जाता है। यहाँ ग्यारह गोल छतरियाँ हैं जिनकी दीवार पर कंगूरे और बन्दूक के लिए छेद बने हुए हैं, यह दुर्ग को घेरे हुए है। दुर्ग के भीतर संरचनाएं तथा अन्य खंडहर हैं। ऐसी ही एक संरचना प्रशासनिक कार्यालय प्रतीत होती है। एक कोष्ठ संभवतः बारूद इत्यादि रखने के काम आता था। यहाँ खुदे हुए भूमिगत रास्ते तथा लगभग 2 कुएँ दुर्ग में हैं, जिनमें पत्थर की परत बनी हुई है। इसके लम्बे ऐतिहासिक महत्त्व के कारण इस दुर्ग को भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण ने संरक्षित स्मारक घोषित किया है।

**चित्र :** मिर्जन दुर्ग का बृहत्तर दृश्य (ऊपर) व झंडा फहराने का उच्च स्थान (नीचे)



### 19. Mirjan Fort

Mirjan Fort is built using Islamic and Portuguese technology making it one of the strongest and biggest forts in North Kannada district of Karnataka. Situated on the west coast of Karnataka, it was a well-known port frequented by the Roman merchants between 1st and 3rd centuries C.E. mentioned by Pliny, 77 C.E. and Periplus, 247 C.E. This port town played a dominant role in the maritime trade for items like black pepper, cinnamon and Arabian horses. However, it was only in 17th century that Shareef-ul-Mulk (1608-1640), a feudatory of the Adil Shahi Sultan of Bijapur, got this fort constructed. After the fall of Vijayanagar empire this fort successively went into the hands of the Bahamani Sultans, Adil Shahis of Bijapur, a small ruling family of Uttara Kannada region, the Portuguese, Hyder and Tipu and finally the British.

The fort is spread over an elevated mound with an area of 11.8 acres. Built out of laterite blocks, it has four entrances and is surrounded by a moat to which water is continuously supplied by the nearby stream Kudurehalla. There are eleven circular bastions all around with series of merlons and gun holes above the walls. Within the forts are structures and other remains, one such structure appears to have housed the administrative offices. There is also a chamber which was possibly used for storing explosives. There are underground passages and about 2 wells with stone lining dug inside of the fort. Because of its long historical importance, Mirjan fort has been declared as a protected monument by the Archaeological Survey of India.

**Pictures:** Wide view of Mirjan fort (above), Ramparts of Mirjan fort (below).



## कर्नाटक के दुर्ग Forts of Karnataka

### 20. वागण्गेर दुर्ग

वागण्गेर, शोरापुर तालुक में, 16वीं-18वीं शताब्दी का एक ऐतिहासिक महत्त्व का स्थान है। भारतीय इतिहास के पृष्ठों में इसका स्थान शोरापुर के राजा और सम्राट औरंगजेब के बीच हुए युद्ध के सन्दर्भ में आता है। वागण्गेर में एक अच्छे बने हुए दुर्ग के खंडहर हैं जो कि राजा के समय अजेय माना जाता था। यह शोरापुर नगर के पश्चिम में 7 कि.मी. तथा कृष्णा नदी के उत्तर में 12 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। गाँव के पश्चिम वाला दुर्ग 'पादुकोट' तथा पूर्व वाला दुर्ग 'होसाकिला' कहलाता है। इन दोनों दुर्गों के बीच एक बड़ा जलाशय है जिसका नाम अनेसोन्दिकेरी है जो दुर्ग के लिए खाई का काम करता है।

यह एक आयताकार योजना का दुर्ग है तथा इसकी लम्बाई चौड़ाई का माप 350 मी. x 240 मी. है। इसमें दो पृथक प्रांगण हैं, बड़ा प्रांगण पूर्व में तथा छोटा प्रांगण पश्चिम में है। मुख्य द्वार मार्ग दुर्ग के पूर्व में है जिसमें अनेक संरचनाएँ हैं। बड़ा दरबार ऊँचे उठे हुए स्तर पर बना हुआ है तथा गढ़ की तरह उपयोग के लिए है। दुर्ग की दीवारें सुंदर कटे हुए ग्रेनाइट के शिलाखंडों से बनी हुई हैं जिन के दोनों ओर प्लास्टर किया गया है। दीवार की ऊँचाई 4 से 5 मीटर तथा 1.5 मीटर मोटी है।

दुर्ग की दीवारें कुल 9 छतरियों तथा दो द्वार में बाँटी जा सकती हैं। उत्तरी तथा दक्षिणी दीवार से दुर्ग दो दरबारों में विभाजित है जिनके बीच में एक द्वार है। दुर्ग के तीन द्वार हैं, पूर्वी, पश्चिमी तथा दक्षिणी, तीनों दीवारों में एक-एक द्वार है। यह द्वार मार्ग सामान योजना से बने हुए हैं जिसमें मेहराबदार प्रवेश, दोनों किनारों पर अर्ध गोलाकार छतरियाँ, उनके साथ बने हुए पर्यवेक्षण बुर्ज तथा मार्ग के दोनों ओर बने हुए ऊँचे चबूतरे हैं। जैसे कि हिन्दू मंदिरों में पाए जाते हैं, ज्यामितीय रेखा-चित्र तथा फूल-पत्तियों के सांचों से सजी दीवारें, खम्बों के खंड इत्यादि यहाँ बने हुए हैं।

राम दरवाजे के पश्चिम में एक मस्जिद बनी हुई है। यह आयताकार है तथा 24 मीटर x 13 मीटर नाप की है। इसमें एक प्रार्थना सभा भवन, एक खुला आयताकार आँगन है जिसको घेरी हुई दीवारें 70 से.मी. मोटी तथा 1 मी. ऊंची हैं। इसमें पूर्वी तथा दक्षिणी छोर पर प्रवेश द्वार हैं। बाहरी तथा भीतरी दीवारों पर प्लास्टर है। खुले आँगन में दो कब्रें बनी हुई हैं।

**चित्र :** वागण्गेर दुर्ग का दूरवर्ती दृश्य (ऊपर), वागण्गेर दुर्ग के भीतर कुएँ का ध्वंसावशेष (नीचे)



### 20. Wagangera Fort

Wagangera was a place of historical importance in Shorapur taluk during 16th-18th century. It finds its place in the pages of Indian history for the battle which took place between the Raja of Shorapur and Emperor Aurangzeb. Wagangera contains the ruins of a well constructed fort which at the time of the Raja was considered to be invincible. It lies 7 kms to the west of Shorapur town and 12 kms to the north of the river Krishna. The fort known as Padukote is to the west of the village and fort known as Hosakila is to the east. Between these two forts there is a large reservoir known as Anesondikeri which serves as a moat to the fort.

The fort is rectangular in plan and measures 350 m by 240 m. It has two distinct courts, upper court on the east and lower court on the west. The main approach to the fort is on the east with a large number of structures. The upper court occupies the elevated area that serves as a citadel. The fort wall is built with dressed granite blocks and is plastered on both sides. The wall measures 4 m to 5 m in height and 1.5 m in thickness.

The fort wall can be divided into total 9 bastions and two gates. North and south wall divides the fort into two courts and it has a gate in the middle. The fort has three gates one each on the eastern, western and southern walls. These gateways are similar on plan and consist of arched openings, a semi circular bastion on sides, a barbican court and raised platforms flanking the passage. The wall is built with the blocks having floral and geometrical decorations and also has fragments of pillars and capital blocks etc of Hindu temples.

A mosque is located to the west of the *Ram Darwaza*. It is rectangular in plan and measures 24 m by 13 m. It has a prayer hall and an open court and the rectangular open court is surrounded by 70 cm thick and 1 m high wall. It has entrances on the eastern and southern sides. Both the exterior and interior walls are plastered. Two graves are situated in open court.

**Pictures:** A distant view of Wagangera fort (above) and Ruins of well inside Wagangera fort (below).



## कर्नाटक के दुर्ग Forts of Karnataka

### 21. बसवाकल्याण दुर्ग

बसवाकल्याण दुर्ग कर्नाटक के बीदर जिले में स्थित है। यह 10वीं शताब्दी के ऐतिहासिक महत्त्व को दर्शाता है। बाद के चालुक्यों ने अपनी राजधानी मान्यखेट से स्थानान्तरित करके कल्याण में बनाई, इसीलिए इसे कल्याण दुर्ग भी कहते हैं। 12वीं शताब्दी के समाज सुधारक बसवेश्वर के कारण बसवाकल्याण तथा इसका दुर्ग, महान सामाजिक तथा धार्मिक आन्दोलन का केंद्र था। बसवेश्वर ने जाति व्यवस्था तथा रुढ़िवादिता का विरोध किया था।

यह दुर्ग, आसपास के क्षेत्रों की तुलना में सबसे नीचे स्थल पर स्थित है। प्रथम बात यह कि दूर से देखने पर यह आसानी से अवगत नहीं होता और दूसरे इस पर ढलान से आते हुए पानी का कोई प्रभाव नहीं पड़ता क्योंकि प्राकृतिक रूप से आये पानी को बिना किसी प्रयत्न के खाई में डालकर उपयोग किया जा सकता है।

गढ़ के मुख्य द्वार को 'अखण्ड दरवाजा' कहते हैं, जो चार रंगीन पत्थरों की पट्टियों से बना है। गढ़ के सामने की चौखट जो अब खंडहर हो गयी है, का मार्ग महल संकुल में पहुंचाता है जो राजमहल कहलाता है। एक मस्जिद, एक नृत्यशाला जिसे रंगीनमहल कहते हैं तथा एक दरबार हाल जैसी कुछ संरचनाएं तराशे हुए पत्थर तथा गारे से बनी हुई हैं। दुर्ग के बाड़े में एक चबूतरा है, जो या तो मुहम्मद की इबादत के दौरान उपयोग में लाया जाता था अथवा राजसी प्रांगण रहा होगा जिसे राजा अपने आराम करने के लिए उपयोग में लाता होगा।

यह एक ऐसा दुर्ग है जहाँ विभिन्न प्रकार की बारीक कलाकारी की और जटिलता से बनायी गई तोपें देखने को मिलती हैं। कुछ देखने में गोलमटोल छोटी सी हैं परन्तु उनकी नली के छेद बड़े माप के और प्रभावशाली हैं। तोपों के मूठ पर उत्कीर्ण आकृति के विश्लेषण के लिए उन्हें पास से देखने की आवश्यकता है। उनमें से अधिकतर मछली के आकार की हैं। उनमें से एक जो सबसे बड़ी है वह बीजापुर की उस तोप के समान है, जो कि अनुमान के अनुसार पांच धातुओं की मिश्र धातु से बनी है। इस मिश्र धातु के कुछ विशेष गुण हैं जैसे कि यह भीषणतम गर्मी के मौसम में भी गरम नहीं होती, क्षरित नहीं होती, विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक प्रहारों को सहन कर सकती है। यह तोप अब भी लगभग अपने मूल रूप में है और इसकी घूमने की प्रक्रिया अभी भी कार्य करती है।

**चित्र :** बसवाकल्याण दुर्ग का दृश्य (ऊपर), राजमहल का भीतरी दृश्य (नीचे, बाएँ), रंगीन महल का ध्वंसावशेष (नीचे, दाहिने)



### 21. Basavakalyan Fort

Basavakalyana fort is located in Bidar district of Karnataka. Its historic importance is dated to the 10th century. The capital of Later Chalukyas was shifted from Manyakheta to Kalyana that is why it is also known as Kalyana fort. Basavakalyana with its fort was the centre of a great social and religious movement, in the 12th century, because of Basaveshwara, the social reformer. He fought against caste system and the orthodoxy in Hinduism.

The fort is strategically built as a defence structure in an unobtrusive setting, which is not visible till the enemy is at close quarters of the fort. This gives advantage for the defence forces holed up in the fort to repulse enemy attacks. The fort was made defensively complex with guard rooms and barbicans, which was a novelty at that time. It consists of three concentric irregular fort walls.

The main door to the citadel is known as the 'Akhand Darwaza' built with four red stone slabs. From the doorway, up a flight of steps is the passage to the Rajmahal (mostly in ruins). However, the ceiling in the palace hall displays colourful designs. The central wall in the hall has patterns of vases and urns. Within the fort precincts one finds a platform used during Muharram prayers, or could be a royal courtyard used by king for relaxing purposes.

This is one fort where one can see varieties of cannons, some artistic and intricately designed. Some of them are short and stubby but the size of the bore is really large and impressive. A close look at the handles of the cannons is needed to analyse the design engraved on it. Most of them are fish shaped. One biggest cannon has similarities to the cannon in Bijapur, the one that's supposed to be an alloy of five metals. The alloy has certain qualities- does not heat in the hottest of weathers, does not corrode, can withstand the worst of nature's forces. This cannon is almost in the original condition, the swivel action still works.

**Pictures:** View of Basavakalyana fort (above), inside view of Raj-Mahal (below, left) and ruins of Rangin Mahal (below, right).



## कर्नाटक के दुर्ग Forts of Karnataka

### 22. यादगिरि दुर्ग

यादगिरि दुर्ग कर्नाटक के सबसे बड़े दुर्गों में से एक है। इसकी वास्तुशैली तथा भवन योजना जैसी विशेषताएं उल्लेखनीय हैं। यह दुर्ग विशाल एकल पत्थर पर बना हुआ है जो लगभग 850 मीटर लम्बा, 500 मीटर चौड़ा तथा 100 मीटर ऊंचा है। कल्याण चालुक्य, यादव, चोल, बहमनी सुल्तान, आदिलशाही तथा निजाम शासकों ने इस पर शासन किया। सूत्रों के अनुसार, इस दुर्ग में पांच शिलालेख जो अलग-अलग समय से संबंधित हैं, पाए गये। दुर्ग के द्वार मार्ग पर स्थित शिलालेख के अनुसार, शाहपुर तालुक के गाँव सागर में रहने वाले एक जगन्नाथ नामक व्यक्ति ने यह दुर्ग बनाया था।

अपने माप तथा मजबूती के आधार पर इस दुर्ग की तुलना मधुगिरि, चित्रदुर्ग, बेल्लारी तथा शाहपुर जैसे दुर्गों से की जा सकती है। ये सभी दुर्ग चट्टानी पहाड़ी के ऊपर बहुतलीय स्थान पर बने हुए हैं।

यादगिरि नगर पहाड़ी के उत्तरी कोने के आसपास बसा हुआ है, उसी ओर दुर्ग का प्रवेश मार्ग है। यह प्रवेशमार्ग महाद्वार कहलाता है। महाद्वार से आगे प्रवेशद्वारों की एक शृंखला है जो वास्तव में सुरक्षा संकुल है। समस्त दुर्गीकरण इन बाहर से अन्दर तक प्रवेशद्वारों में विभाजित है। सुरक्षा संकुल के बाद ऊपर पहाड़ी की ओर जाता हुआ एक लम्बा गलियारा है जिसके बायीं तरफ ऊँची दीवार तथा दायी ओर पत्थरों की सतह से बना एक जलाशय है, इसकी पृष्ठभूमि में यादगिरि झील है। यादगिरि में दुर्ग के भीतर तथा बाहर निर्मल जल के अनेक स्रोत थे।

पहाड़ी के उत्तरी-पश्चिमी पठारी कोने पर दो या तीन बुर्ज हैं। उनमें से एक बुर्ज जिस पर तोप रखी हुई है, इसके अंतिम छोर पर एक अरबी अथवा फारसी का शिलालेख है। आसपास के इलाकों में कई तोपें पड़ी हुई हैं। यहाँ एक बड़ी आयताकार संरचना भी है जो सिपाहियों की बैरक प्रतीत होती है। यहाँ एक विशाल गढ़ों का जोड़ा है जो परकोटों की दीवारों से आपस में जुड़ा हुआ है तथा इनके बीच एक छोटा गलियारा है। यह दुर्ग का पश्चिमी द्वार मार्ग है। इससे प्रतीत होता है कि यह वास्तव में अच्छे पहरों से सुरक्षित दुर्ग था।

**चित्र :** यादगिरि दुर्ग का दूरवर्ती दृश्य (ऊपर), यादगिरि दुर्ग का प्रवेश (नीचे, बाएँ), महल परिसर के ध्वंसावशेष (नीचे, दाएँ)



### 22. Yadgiri Fort

Yadgiri fort is one of the largest forts of Karnataka. Remarkable architecture and building planning are the key features of this fort. The fort is built over a massive monolith measuring about 850m long, 500m wide and 100 m high. It was ruled by the Kalyana Chalukyas, Yadavas, Cholas, Bahmani Sultans, Adil Shahis and the Nizams. According to sources, five inscriptions of various time periods have been found in this fort. As per the inscription situated close to the fort entrance, Yadgiri fort was built by a person named Jagannath from Sagar, a village in Shahpur taluq.

In terms of size and strength, Yadgiri fort can be compared to Madhugiri, Chitradurga, Bellary, and Shahpur forts. All these forts are built over rocky hills and have multiple levels.

Yadgiri town has grown around the northern corner of the hill that's where the fort entrance is situated. This is the Mahadwara, the entrance gate. Beyond the Mahadwara are a series of gateways which is nothing but a security measure. The whole fortification can be divided on the basis of these gateways from outer to innermost. After entering these gates a long path going uphill with towering walls to the left and deep stone lined water tanks to the right with Yadgiri Lake in the background is picturesque. Yadgiri had plenty of resources for fresh water, within and outside the fort.

The north-west corner of the hill is located on the edge of the plateau and there are two or three turrets. One of the turrets with cannon has an Arabian or Persian inscription at the tail-end. In the vicinity are several cannons lying about. Also there's a big rectangular structure which might have been soldiers barracks. There is a pair of massive bastions connected by rampart walls with a small passage in it. That is the western entrance to this fort. All the sides and entrances are armed with cannons. This suggests it was surely a well guarded fort.

**Pictures:** A distant view of Yadgiri fort (above), Entrance to Yadgiri fort (below, left) and ruins of Palace Complex (below, right).





## कर्नाटक के दुर्ग Forts of Karnataka

### 23. जलदुर्ग

जलदुर्ग कर्नाटक के रायचूर जिले का एक दुर्गीकृत गाँव है। बीजापुर के आदिलशाही राजाओं ने यह दुर्ग बनवाया था। कृष्णा नदी द्वारा एक द्वीप समूह की संरचना की गयी है। वास्तव में कृष्णा नदी रायचूर तथा यादगिरि की सीमा रेखाएं निर्धारित करती है। जलदुर्ग, द्वीप की पश्चिमी नोक पर है। (जल+दुर्ग) जलदुर्ग का नाम द्वीप दुर्ग (द्वीप+दुर्ग) भी है। कृष्णा नदी पहाड़ी के पूर्वी किनारे को घेरती हुई बहती है जिससे आसपास के क्षेत्रों से दुर्ग तक पहुँचना कठिन हो जाता है। इसलिए यह दुर्ग के लिए एक आदर्श स्थान है। दुर्ग अब खंडहर अवस्था में है दुर्ग के ऊपर एक समय में एक महल तथा एक तहखाना था।

दक्षिणी किनारे पर एक ऊँची बनी संरचना है। एक बुर्ज भी बना हुआ है जिससे दुर्ग और द्वीप को बिना किसी रुकावट के देखा जा सके। पहाड़ी की निचली सतह से ऊपर चोटी तक दुर्ग के खंडहर देखे जा सकते हैं। यहाँ राजाओं की कब्रें हैं जिन पर कोई पहचान चिह्न नहीं है। यहीं पर संगमेश्वर माता का तथा येल्लम्मा मंदिर भी है। कृष्णा नदी का किनारा बालूदार नहीं है, परन्तु यहाँ मन्धन मडुवु कहलाने वाले चिकने गोल पत्थर हैं। जलदुर्ग पर एक छोटा पत्थर है जिस पर उर्दू तथा देवनागरी लिपि का शिलालेख है। स्थानीय मान्यतानुसार यह एक संदूक जैसा पत्थर नदी में छुपा हुआ है जिसमें संत वसवण्णा के लिखे हुए एक लाख छंद हैं जो सारी दुनिया से गुप्त रखे गये।

यह दुर्ग लगभग षट्कोणीय है जिसके दोनों विपरीत किनारों पर बंदरगाह हैं। इसके मध्य भाग में एक मंदिर है, मुख्य रास्ते त्रिज्जिय हैं तथा सर्वोच्च भवनों से घिरे हुए हैं जैसे कि राजमहल, मंत्रियों के भवन, सार्वजनिक कार्यालय, प्रभावशाली व्यक्तियों के भवन, ब्राह्मणों के घर इत्यादि। इसमें रहने वालों की सुरक्षा के सभी बुनियादी उपाय तथा शत्रु को अन्दर आने से रोकने के सभी साधनों का ध्यान रखा गया है जिस के कारण यह एक सुरक्षित दुर्ग रहा।

**चित्र :** जलदुर्ग का बृहत्तर दृश्य (ऊपर), कृष्णा नदी पर जलदुर्ग के बुर्ज (नीचे)



### 23. Jaladurga Fort

Jaladurga is a fortified village in Raichur district in the state of Karnataka. The Adil Shahi Kings of Bijapur built the fort. A group of islands are formed by the river Krishna. In fact river Krishna defines the district borders of Raichur and Yadgiri. Jaladurga occupies the western tip of the island. Jala + Durga = water + fort, also known as Dweepadurga too (Dweepta + Durga = island + fort). The Krishna river flows east side around the hill and the approach from surrounding areas is difficult, hence it is an ideal place for a fort. The fort is in ruined status. On top of the fort, at one point of time, there was a palace and a cellar.

On the southern edge there is a high rise structure. Also there is tower built to provide unrestricted view of the fort and the island. The fort ruins can be seen from the base of the hill going right up to the summit. In fact this is the highest point of the fort as well as the island. There are a few tombs of the kings with no identification; there is Sangameshwara Matha, and a temple of Yellamma. The sides of the river Krishna is not sandy, it is full of smooth boulders and it is called Mandhana Maduvu. At Jaladurga there is a small stone inscription written in Urdu and Devanagari script. According to local belief, there is a box like stone hidden in the river, which contain about one lakh verses of the great saint Basavanna and are yet to be discovered by rest of the world.

This fort is built in a roughly hexagonal layout with harbours on the opposite sides. With the temple at the centre, the main streets run in a radial way surrounded by paramount buildings such as royal palaces, mansions of ministers, public offices, buildings of nobles, houses of Brahmins. Almost all the basic safety measures for the inmates and fatal obstacles to the incoming enemies have been thought of, thus making it a very secure fort.

**Pictures:** Wide view of Jaladurga fort (above) and one of the bastions of Jaladurga fort above Krishna river (below).



## कर्नाटक के दुर्ग Forts of Karnataka

### 24. तोरगल दुर्ग

हाले तोरगल रामदुर्ग तालुक में मलप्रभा नदी के किनारे स्थित है। विजयनगर के पतन के बाद तोरगल मुगलों तथा मराठाओं के अधिकार में आया। ऐसा माना जाता है कि शिवाजी ने इसे बनवाया या इसका विस्तार करवाया था।

दुर्ग की दीवारों पर दो फारसी शिलालेख पाए गये। उनमें से एक 1535 ई. में इब्राहीम के समय का है, इसके निर्माण का उल्लेख करें या शायद इसके निर्माण के विस्तार का, तो यह एक अब्दुल अजीज के बेटे इस्माइल नामक व्यक्ति ने किया था। उसके नीचे कुछ कन्नड़ की पत्तियों का दूसरा शिलालेख 1583 ई. का इब्राहीम द्वितीय के समय का है, यह दुर्ग के अन्य भाग के निर्माण के विषय में है।

यह दुर्ग मलप्रभा नदी के किनारे पहाड़ी भू-भाग पर स्थित है। इसके दो प्रवेशमार्ग हैं, एक पश्चिम की ओर खुलता है तथा दूसरा उत्तर पूर्व की ओर खुलने वाला मुख्य द्वार है। दुर्ग की दीवारें सुंदर नमूने और अनुकल्पों से सजी हुई हैं। हल्की नक्काशीदार पत्थर की दीवार सामान्यतः यहाँ पायी जाती हैं। कुछ नमूने वास्तव में अद्भुत तथा विचित्र हैं। उदाहरण के लिए एक नक्काशी है जिसमें एक मछली तथा दो अन्य जीव हैं जिनके शरीर हंस के समान हैं परन्तु सिर साँपों की तरह प्रतीत होते हैं।

तोरगल गाँव में एक दूसरे की ओर मुंह किये दो जुड़वां चालुक्य मंदिर हैं। दुर्ग के भीतर भूतनाथ मंदिर का विशाल संकुल है। दूसरा मंदिर, जो समान योजना तथा माप का है, के गर्भगृह में देवी की मूर्ति स्थापित है। उत्तरी प्रवेश मार्ग से संकुल में प्रवेश करने पर एक छोटा सा विजयनगर शैली का गणपति मंदिर है। कुल मिलाकर यहाँ नौ मंदिर हैं। गर्भगृह के चारों ओर इनमें से केवल भूतनाथ मंदिर की संरचना है, जिसकी मुंडेरों पर कुछ कामोत्तेजक मूर्तियाँ बनी हुई थीं, जो अब ध्वस्त हो गयी हैं। भूतनाथ मंदिर की वास्तुकला तथा मूर्तिकला असाधारण रूप में खजुराहो मंदिरों के समान हैं। इसके अतिरिक्त, दुर्ग में तीन मस्जिदें, चार दरगाह तथा दो कब्रें हैं। यह छोटा सा ग्राम दुर्ग अपने स्मारक, मंदिरों तथा मूर्तियों के कारण रोचक पर्यटक केंद्र है और विगत समय की ऐतिहासिक घटनाओं का प्रतिबिम्ब भी।

**चित्र :** तोरगल दुर्ग का दृश्य (ऊपर), भूतनाथ मंदिर परिसर (नीचे)



### 24. Torgal Fort

Located in the Ramdurg taluq on the bank of river Malaprabha is located Hale Torgal. After the fall of Vijayanagar, Torgal came under the Mughals and Marathas. It is believed that Shivaji also built or expanded a fort here. Two Persian inscriptions have been found on the walls of the fort. One is of the days of Ibrahim dated 1535, speaking of the construction perhaps extension of the construction of the fort by one Ismail, son of Abdul Aziz. Another inscription with a few Kannada lines at the bottom is the Ibrahim II of 1583, it speaks of the construction again perhaps of another part of the fort.

Fort is located on hilly terrain along the bank of river Malaprabha. It has got two gateways, one faces west while the other north-east. The one on the north-east is the main entrance of the fort. Wall of the fort is decorated with motifs and designs. Light carving on stone wall is very common here. Some of the designs are really unique and peculiar for example there is a carving of a fish and two creatures and their body looks like swan but the head looks like snake.

The Torgal village has twin Chalukyan temples facing each other. Bhutanatha Temple complex within the fort is a huge site. Other temple with a similar plan and size has a Devi image installed in the *Garbhagriha*. While entering the complex from the north gate, there is a small Ganapati shrine of Vijayanagar style. All together there are nine temples here. Of these only Bhutanatha has sculpture around its *Garbhagriha* and its parapets have some erotic sculptures which have been damaged. Architecture and some sculptures of Bhutanatha temple are strikingly similar to Khajuraho temples. Apart from these temples, the fort has three mosques, four *dargahs* and two tombs. This small fort village is an interesting tourist spot because of its old monuments, temples and statues and also reflect the historical events that have taken place during the bygone era.

**Pictures:** View of Torgal fort (above) and Bhutanatha Temple complex (below).



## कर्नाटक के दुर्ग Forts of Karnataka

### 25. किट्टूर चैनम्मा दुर्ग

चैनम्मा दुर्ग एक महान ऐतिहासिक स्मारक है तथा कर्नाटक का मुख्य पर्यटक आकर्षण है। यह किट्टूर चैनम्मा दुर्ग के नाम से भी जाना जाता है। यह बेलगाम से 50 कि.मी. की दूरी पर तथा धारवाड़ से 32 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। किट्टूर चैनम्मा दुर्ग, रानी चैनम्मा के नेतृत्व में किये गये महान स्वतंत्रता संघर्ष का साक्षी है। इसका महत्त्व केवल इसके वास्तुशिल्प के लिए ही नहीं है, अपितु यह एक साहस तथा महिला सम्मान का प्रतीक है।

यह दुर्ग काले असिताश्म चट्टानी पत्थर से निर्मित है लेकिन वर्तमान में यह एक खंडहर के अलावा कुछ नहीं है। दुर्ग के दोनों ओर छोटी दीवार से तटबंधन बना रखे हैं। इसके अन्दर एक प्राचीन दूरबीन है जिसे रानी चैनम्मा प्रातःकाल ध्रुव नक्षत्र को देखने के लिए उपयोग में लाती थीं। इस दूरबीन की देखभाल अब नहीं हो पाती। इस दुर्ग में एक सुन्दर प्रकोष्ठ (बरामदा) जिसकी लम्बाई चौड़ाई 100 फीट x 30 फीट थी और यह शीशम के खम्भों पर टिका हुआ था परन्तु अब खम्भे तथा छत दोनों ही हटा दिए गये हैं और इस दुर्ग में एक संग्रहालय भी है जिसमें प्रदर्शन के लिए प्राचीन वस्तुएं जैसे तलवारें, ढाल तथा लकड़ी के दरवाजे इत्यादि रखे गये हैं।

इसकी दीवार के साथ खाई भी इस दुर्ग को घेरे हुए है। संभवतः पूर्वी दीवार के पास बनी हुई झील में से पानी इस खाई में आता था। प्रवेश मार्ग के दोनों ओर की छावनियां, सीमेंट तथा बालू के मिश्रण से प्लास्टर करके पुनः स्थापित की गयी हैं। महल संकुल में सम्मेलन इत्यादि के लिए एक बड़े से दरबार की संरचना की गई थी जिसे 'दरबार महल' कहते थे। यह दुर्ग केवल वास्तुशिल्प का प्रतीक ही नहीं अपितु एक महान विद्रोह का स्मरण कराता है, जो अंग्रेजों की नीति 'डॉक्ट्रिन ऑफ लैप्स' के विरुद्ध किया गया था।

**चित्र :** चैनम्मा दुर्ग के भीतर महल परिसर के ध्वंसावशेष (ऊपर), चैनम्मा दुर्ग के भीतर महल परिसर के ध्वंसावशेष का अन्य दृश्य (नीचे)



### 25. Kittur Chennamma Fort

Chennamma fort is a great historical monument and tourist attraction in Karnataka. It is also known as Kittur Chennamma fort. This fort is situated at a distance of 50 kilometres from Belgaum and from Dharwad it is located at a distance of 32 kilometres. The Kittur Chennamma Fort stands as an evidence of the great Freedom struggle that was led by Rani Chennamma. It is not just important from archaeological point of view but also stands as a symbol of bravery and women's pride.

The fort is constructed out of black basalt rock but at present it is nothing but a ruin. The low wall on both sides of the fort has tiny embankments. In the interior of it lies an ancient telescope through which Rani Chennamma used to watch the *Dhruva Nakshatra* or the Pole Star in the morning. But the telescope is poorly maintained. It had a beautiful porch which measured 100 feet by 30 feet which was supported by teak pillars. But now the pillar is removed together with its roof. A museum is also present in Kittur which exhibits some antique pieces like swords, shields, wooden doors etc.

A moat runs right around the perimeter of the wall. Probably the moat was fed by water from a lake close to the eastern wall. Bastions flanking the gateway are restored and plastered with a thick layer of cement-sand mixture. Within the Palace complex a huge hall structure was built mainly for the conference purpose and called as Palace Durbar or conference hall. This fort is not just symbolic for its architectural designs but also stands as reminiscence to the great revolt against the British after the introduction of the Doctrine of Lapse.

**Pictures:** Ruins of Palace Complex inside Chennamma fort (above) and another view of ruins of Palace Complex inside Chennamma fort (below).









तथा छोटा प्रांगण पश्चिम में है। मुख्य द्वार मार्ग दुर्ग के पूर्व में है जिसमें अनेक संरचनाएं हैं। बड़ा दरबार ऊँचे उठे हुए स्तर पर बना हुआ है तथा गढ़ की तरह उपयोग के लिए है। दुर्ग की दीवारें सुंदर कटे हुए ग्रेनाइट के शिलारखंडों से बनी हुई है जिन के दोनों ओर प्लास्टर किया गया है। दीवार की ऊँचाई 4 से 5 मीटर तथा 1.5 मीटर मोटी है।

दुर्ग की दीवारें कुल 9 छतरियों तथा दो द्वार में बाँटी जा सकती हैं। उत्तरी तथा दक्षिणी दीवार से दुर्ग दो दरबारों में विभाजित है जिनके बीच में एक द्वार है। दुर्ग के तीन द्वार हैं, पूर्वी, पश्चिमी तथा दक्षिणी, तीनों दीवारों में एक–एक द्वार है। यह द्वार मार्ग सामान योजना से बने हुए हैं जिसमें मे. हराबदार प्रवेश, दोनों किनारों पर अर्ध गोलाकार छतरियां, उनके साथ बने हुए पर्यवेक्षण बुर्ज तथा मार्ग के दोनों ओर बने हुए ऊँचे चबूतरे हैं। जैसे कि हिन्दू मंदिरों में पाए जाते हैं, ज्यामितीय रेखा–चित्र तथा फूल–पत्तियों के साँचों से सजी दीवारें, खम्बों के खंड इत्यादि यहाँ बने हुए हैं।

राम दरवाजे के पश्चिम में एक मस्जिद बनी हुई है। यह आयताकार है तथा 24 मीटर ग 13 मीटर नाप की है। इसमें एक प्रार्थना सभा भवन, एक खुला आयताकार आँगन है जिसको घेरी हुई दीवारें 70 से.मी. मोटी तथा 1 मी. ऊंची हैं। इसमें पूर्वी तथा दक्षिणी छोर पर प्रवेश द्वार हैं। बाहरी तथा भीतरी दीवारों पर प्लास्टर है। खुले आँगन में दो कब्रें बनी हुई हैं।

**21- cl okdY; k k nqZ**

बसवाकल्याण दुर्ग कर्नाटक के बीदर जिले में स्थित है। यह 10वीं शताब्दी के ऐतिहासिक महत्त्व को दर्शाता है। बाद के चालुक्यों ने अपनी राजधानी मान्यखेट से स्थानान्तरित करके कल्याण में बनाई, इसीलिए इसे कल्याण दुर्ग भी कहते हैं। 12वीं शताब्दी के समाज सुधारक बसवेश्वर के कारण बसवाकल्याण तथा इसका दुर्ग, महान सामाजिक तथा धार्मिक आन्दोलन का केंद्र था। बसवेश्वर ने जाति व्यवस्था तथा रूढ़िवादिता का विरोध किया था।

यह दुर्ग, आसपास के क्षेत्रों की तुलना में सबसे नीचे स्थल पर स्थित है। प्रथम बात यह कि दूर से देखने पर यह आसानी से अवगत नहीं होता और दूसरे इस पर ढलान से आते हुए पानी का कोई प्रभाव नहीं पड़ता क्योंकि प्राकृतिक रूप से आये पानी को बिना किसी प्रयत्न के खाई में डालकर उपयोग किया जा सकता है।

गढ़ के मुख्य द्वार को ‘अखण्ड दरवाजा’ कहते हैं, जो चार रंगीन पत्थरों की पट्टियों से बना है। गढ़ के सामने की चौखट जो अब खंडहर हो गयी है, का मार्ग महल संकुल में पहुंचाता है जो राजमहल कहलाता है। एक मस्जिद, एक नृत्यशाला जिसे रंगीनमहल कहते हैं तथा एक दरबार हाल जैसी कुछ संरचनाएं तराशे हुए पत्थर तथा गारे से बनी हुई हैं। दुर्ग के बाड़े में एक चबूतरा है, जो या तो मुहर्रम की इबादत के दौरान उपयोग में लाया जाता था अथवा राजसी प्रांगण रहा होगा जिसे राजा अपने आराम करने के लिए उपयोग में लाता होगा।

यह एक ऐसा दुर्ग है जहाँ विभिन्न प्रकार की बारीक कलाकारी की और जटिलता से बनायी गई तोपें देखने को मिलती हैं। कुछ देखने में गोलमटोल छोटी सी हैं परन्तु उनकी नली के छेद बड़े माप के और प्रभावशाली हैं। तोपों के मूठ पर उत्कीर्ण आकृति के विश्लेषण के लिए उन्हें पास से देखने की आवश्यकता है। उनमें से अधिकतर मछली के आकार की हैं। उनमें से एक जो सबसे बड़ी है वह बीजापुर की उस तोप के समान है, जो कि अनुमान के अनुसार पांच धातुओं की मिश्र धातु से बनी है। इस मिश्र धातु के कुछ विशेष गुण है जैसे कि यह भीषणतम गर्मी के मौसम में भी गरम नहीं होती, क्षरित नहीं होती, विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक प्रहारों को सहन कर सकती है। यह तोप अब भी लगभग अपने मूल रूप में है और इसकी घूमने की प्रक्रिया अभी भी कार्य करती है।

**22- ; knfxj nqZ**

यादगिरि दुर्ग कर्नाटक के सबसे बड़े दुर्गों में से एक है। इसकी वास्तुशैली तथा भवन योजना जैसी विशेषताएं उल्लेखनीय हैं। यह दुर्ग विशाल एकल पत्थर पर बना हुआ है जो लगभग 850 मीटर लम्बा, 500 मीटर चौड़ा तथा 100 मीटर ऊंचा है। कल्याण चालुक्य, यादव, चोल, बहमनी सुल्तान, आदिलशाही तथा निजाम शासकों ने इस पर शासन किया। सूत्रों के अनुसार, इस दुर्ग में पांच शिलालेख जो अलग–अलग समय से संबंधित हैं, पाए गये। दुर्ग के द्वार मार्ग पर स्थित शिलालेख के अनुसार, शाहपुर तालुक के गाँव सागर में रहने वाले एक जगन्नाथ नामक व्यक्ति ने यह दुर्ग बनाया था।

अपने माप तथा मजबूती के आधार पर इस दुर्ग की तुलना मधुगिरि, चित्रदुर्ग, बेल्लारी तथा शाहपुर जैसे दुर्गों से की जा सकती है। ये सभी दुर्ग चट्टानी पहाड़ी के ऊपर बहुतलीय स्थान पर बने हुए हैं।

यादगिरि नगर पहाड़ी के उत्तरी कोने के आसपास बसा हुआ है, उसी ओर दुर्ग का प्रवेश मार्ग है। यह प्रवेशमार्ग महाद्वार कहलाता है। महाद्वार से आगे प्रवेशद्वारों की एक शृंखला है जो वास्तव में सुरक्षा संकुल है। समस्त दुर्गाकरण इन बाहर से अन्दर तक प्रवेशद्वारों में विभाजित है। सुरक्षा संकुल के बाद ऊपर पहाड़ी की ओर जाता हुआ एक लम्बा गलियारा है जिसके बायीं तरफ ऊँची दीवार तथा दायी ओर पत्थरों की सतह से बना एक जलाशय है, इसकी पृष्ठभूमि में यादगिरि झील है। यादगिरि में दुर्ग के भीतर तथा बाहर निर्मल जल के अनेक स्रोत थे।

पहाड़ी के उत्तरी–पश्चिमी पठारी कोने पर दो या तीन बुर्ज हैं। उनमें से एक बुर्ज जिस पर तोप रखी हुई है, इसके अंतिम छोर पर एक अरबी अथवा फारसी का शिलालेख है। आसपास के इलाकों में कई तोपें पड़ी हुई हैं। यहाँ एक बड़ी आयताकार संरचना भी है जो सिपाहियों की बैरक प्रतीत होती है। यहाँ एक विशाल गढ़ों का जोड़ा है जो परकोटों की दीवारों से आपस में जुड़ा हुआ है तथा इनके बीच एक छोटा गलियारा है। यह दुर्ग का पश्चिमी द्वार मार्ग है। इससे प्रतीत होता है कि यह वास्तव में अच्छे पहर से सुरक्षित दुर्ग था।

**23- t ynqZ**

जलदुर्ग कर्नाटक के रायचूर जिले का एक दुर्गाकृत गाँव है। बीजापुर के आदिलशाही राजाओं ने यह दुर्ग बनवाया था। कृष्णा नदी द्वारा एक द्वीप समूह की संरचना की गयी है। वास्तव में कृष्णा नदी रायचूर तथा यादगिरि की सीमा रेखाएं निर्धारित करती है। जलदुर्ग, द्वीप की पश्चिमी नोक पर है। (जल+दुर्ग) जलदुर्ग का नाम द्वीप दुर्ग (द्वीप+दुर्ग) भी है। कृष्णा नदी पहाड़ी के पूर्वी किनारे को घेरती हुई बहती है जिससे आसपास के क्षेत्रों से दुर्ग तक पहुँचना कठिन हो जाता है। इसलिए यह दुर्ग के लिए एक आदर्श स्थान है। दुर्ग अब खंडहर अवस्था में है दुर्ग के ऊपर एक समय में एक महल तथा एक तहखाना था।

दक्षिणी किनारे पर एक ऊँची बनी संरचना है। एक बुर्ज भी बना हुआ है जिससे दुर्ग और द्वीप को बिना किसी रुकावट के देखा जा सके। पहाड़ी की निचली सतह से ऊपर चोटी तक दुर्ग के खंडहर देखे जा सकते हैं। यहाँ राजाओं की कब्रें हैं जिन पर कोई पहचान चिह्न नहीं हैं। यहीं पर संगमेश्वर माता का तथा येल्लम्मा मंदिर भी है। कृष्णा नदी का किनारा बालूदार नहीं है, परन्तु यहाँ मन्धन मडुवु कहलाने वाले चिकने गोल पत्थर हैं। जलदुर्ग पर एक छोटा पत्थर है जिस पर उर्दू तथा देवनागरी लिपि का शिलालेख है। स्थानीय मान्यतानुसार यह एक संदूक जैसा पत्थर नदी में छुपा हुआ है जिसमें संत वसवण्णा के लिखे हुए एक लाख छंद हैं जो सारी दुनिया से गुप्त रखे गये।

यह दुर्ग लगभग षट्कोणीय है जिसके दोनों विपरीत किनारों पर बंदरगाह हैं। इसके मध्य भाग में एक मंदिर है, मुख्य रास्ते त्रिज्जीय हैं तथा सर्वोच्च भवनों से घिरे हुए हैं जैसे कि राजमहल, मंत्रियों के भवन, सार्वजनिक कार्यालय, प्रभावशाली व्यक्तियों के भवन, ब्राह्मणों के घर इत्यादि। इसमें रहने वालों की सुरक्षा के सभी बुनियादी उपाय तथा शत्रु को अन्दर आने से रोकने के सभी साधनों का ध्यान रखा गया है जिस के कारण यह एक सुरक्षित दुर्ग रहा।

**24- rlxjy nqZ**

हाले तोरगल रामदुर्ग तालुक में मलप्रभा नदी के किनारे स्थित है। विजयनगर के पतन के बाद तोरगल मुगलों तथा मराठाओं के अधिकार में आया। ऐसा माना जाता है कि शिवाजी ने इसे बनवाया या इसका विस्तार करवाया था।

दुर्ग की दीवारों पर दो फारसी शिलालेख पाए गये। उनमें से एक 1535 ई. में इब्राहीम के समय का है, इसके निर्माण का उल्लेख करें या शायद इसके निर्माण के विस्तार का, तो यह एक अब्दुल अजीज के बेटे इस्माइल नामक व्यक्ति ने किया था। उसके नीचे कुछ कन्नड़ की पंक्तियों का दूसरा शिलालेख 1583 ई. का इब्राहीम द्वितीय के समय का है, यह दुर्ग के अन्य भाग के निर्माण के विषय में है।

यह दुर्ग मलप्रभा नदी के किनारे पहाड़ी भू–भाग पर स्थित है। इसके दो प्रवेशमार्ग हैं, एक पश्चिम की ओर खुलता है तथा दूसरा उत्तर पूर्व की ओर खुलने वाला मुख्य द्वार है। दुर्ग की दीवारें सुंदर नमूने और अनुकल्पों से

सजी हुई है। हल्की नक्काशीदार पत्थर की दीवार सामान्यतः यहाँ पायी जाती हैं। कुछ नमूने वास्तव में अद्भुत तथा विचित्र हैं। उदाहरण के लिए एक नक्काशी है जिसमें एक मछली तथा दो अन्य जीव हैं जिनके शरीर हंस के समान हैं परन्तु सिर सौंपों की तरह प्रतीत होते हैं।

तोरगल गाँव में एक दूसरे की ओर मुंह किये दो जुड़वां चालुक्य मंदिर हैं। दुर्ग के भीतर भूतनाथ मंदिर का विशाल संकुल है। दूसरा मंदिर, जो समान योजना तथा माप का है, के गर्भगृह में देवी की मूर्ति स्थापित है। उत्तरी प्रवेश मार्ग से संकुल में प्रवेश करने पर एक छोटा सा विजयनगर शैली का गणपति मंदिर है। कुल मिलाकर यहाँ नौ मंदिर हैं। गर्भगृह के चारों ओर इनमें से केवल भूतनाथ मंदिर की संरचना है, जिसकी मुंडेरों पर कुछ कामोत्तेजक मूर्तियाँ बनी हुई थीं, जो अब ध्वस्त हो गयी हैं। भूतनाथ मंदिर की वास्तुकला तथा मूर्तिकला असाधारण रूप में खजुराहो मंदिरों के समान हैं। इसके अति. रिक्त, दुर्ग में तीन मस्जिदें, चार दरगाह तथा दो कब्रें हैं। यह छोटा सा ग्राम दुर्ग अपने स्मारक, मंदिरों तथा मूर्तियों के कारण रोचक पर्यटक केंद्र है और विगत समय की ऐतिहासिक घटनाओं का प्रतिबिम्ब भी।

**25- fdêÿ pulêk nqZ**

चेनम्मा दुर्ग एक महान ऐतिहासिक स्मारक है तथा कर्नाटक का मुख्य पर्यटक आकर्षण है। यह किट्टूर चेनम्मा दुर्ग के नाम से भी जाना जाता है। यह बेलगाम से 50 कि.मी. की दूरी पर तथा धारवाड़ से 32 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। किट्टूर चेनम्मा दुर्ग, रानी चेनम्मा के नेतृत्व में किये गये महान स्वतंत्रता संघर्ष का साक्षी है। इसका महत्त्व केवल इसके वास्तुशिल्प के लिए ही नहीं है, अपितु यह एक साहस तथा महिला सम्मान का प्रतीक है।

यह दुर्ग काले अस्िताश्म चट्टानी पत्थर से निर्मित है लेकिन वर्तमान में यह एक खंडहर के अलावा कुछ नहीं है। दुर्ग के दोनों ओर छोटी दीवार से तटबंधन बना रखे हैं। इसके अन्दर एक प्राचीन दूरबीन है जिसे रानी चेनम्मा प्रातःकाल ध्रुव नक्षत्र को देखने के लिए उपयोग में लाती थीं। इस दूरबीन की देखभाल अब नहीं हो पाती। इस दुर्ग में एक सुन्दर प्रकोष्ठ (बरामदा) जिसकी लम्बाई चौड़ाई 100 फीट ग 30 फीट थी और यह शीशम के खम्भों पर टिका हुआ था परन्तु अब खम्भे तथा छत दोनों ही हटा दिए गये हैं और इस दुर्ग में एक संग्रहालय भी है जिसमें प्रदर्शन के लिए प्राचीन वस्तुएं जैसे तलवारें, ढाल तथा लकड़ी के दरवाजे इत्यादि रखे गये हैं।

इसकी दीवार के साथ खाई भी इस दुर्ग को घेरे हुए है। संभवतः पूर्वी दीवार के पास बनी हुई झील में से पानी इस खाई में आता था। प्रवेश मार्ग के दोनों ओर की छावनियां, सीमेंट तथा बालू के मिश्रण से प्लास्टर करके पुनः स्थापित की गयी हैं। महल संकुल में सम्मेलन इत्यादि के लिए एक बड़े से दरबार की संरचना की गई थी जिसे ‘दरबार महल’ कहते थे। यह दुर्ग केवल वास्तुशिल्प का प्रतीक ही नहीं अपितु एक महान विद्रोह का स्मरण कराता है, जो अंग्रेजों की नीति ‘डॉक्ट्रिन ऑफ लैप्स’ के विरुद्ध किया गया था।

# ದುರ್ಗ ದೆಗ್ನ

## Forts of Karnataka

### 1. Banavasi Fort

Banavasi is an ancient temple town in Uttara Kannada district in Karnataka. It is 374 kilometres away from Bengaluru. It is one of the ancient towns of India which has been mentioned in the Mahabharata epic. Banavasi has been called as “Jaladurga” or Water Fort by the Aihole inscription of Pulkeshi II probably because the river Varadha flows around the town on three sides. It used to lie in the rain forests of Western Ghats making its access very difficult.

At one point of time the extant fort walls used to enclose part of the present village of Banavasi. The Chutus, a feudatory of the imperial Satavahanas made Banavasi its capital and later on it was ruled by the Kadambas. However, only the ruins and few remains of the fort can be seen today.

The fort was built at the sharp curve of the river Varadha, the point at which the river from the north-western direction used to take an easterly turn abruptly. The river flowed in a zigzag way thus providing considerable protection on the southern side. The total length of the fort wall measured 2140 meters. There used to be a moat along the exterior slope. The width of the moat was about 12m at the base and about 22m at the top. There were two main gates, one on the north and the other on the south-east. There was a small gate on the west almost in the mid-way of the western wing of the fort-wall which is in ruins. It was not meant for regular and common entrance, but to be used in times of danger by people for escape.

Originally, the fort wall was built of bricks during the reign of the Chutus, a feudatory of the Satavahanas. Thereafter, during the reign of Kadambas, the fort was enlarged and fortified with laterite stones, bricks and mud.

### 2. Malkhed Fort

Manyakheta or modern Malkhed is located on the banks of Kagina River in Gulbarga district, Karnataka. Malkhed was the capital of the powerful Rashtrakuta empire from 814 C.E. to 968 C.E. Malkhed had a glorious past under the Rashtrakuta dynasty, particularly under the Emperor Amoghavarsha Nrupatunga, who ruled for 64 years and penned the first classical Kannada work, Kavirajamarga. Amoghavarsha and scholars such as mathematician Mahaveeracharya, and intellectuals Jinasenacharya, Gunabhadracharya helped to spread Jainism in the region. After the fall of the Rashtrakutas, it remained the capital of their successors, the Kalyani Chalukyas or Western Chalukyas till about 1050 C.E.

There used to be two forts: a large outer fort at the ground level and within it, a small fort on the artificially elevated ground. Architecturally too, the outer and the inner differed considerably. It appears that the outer was much earlier than the inner. The outer fort was irregularly polygonal. The width of the wall was 3 m and the wall rose to a height of 6 m. It had two exits, one near the north-west corner looking west and another in the middle of the eastern side looking east. The citadel within the fort was meant for the rulers and their important officials. But this fort including the citadel was destroyed ultimately perhaps during severe conflicts between the Rashtrakutas and the Cholas. Within the fort is, at present, a Jaina temple and a few sculptures, door frames, pillars of some temples of the Rashtrakuta period.

Later a Muslim chieftain owing allegiance to the Bahamanis perhaps built the fort with considerable modifications. Within the fort is Jamma Masjid, Kali Masjid together with a colossal bastion known as 'Upli Burj'. Malkhed was subjected to series of unspeakable destructions by the Cholas and later by the

Muslims during the Sultanate and Mughal periods.

### 3. Badami Fort

Badami, formerly known as Vatapi, is a taluk in the Bagalkot district of Karnataka. It was the regal capital of the Badami Chalukyas from 540 to 757 C.E. It is famous for rock-cut and other structural temples. Badami may be termed as hill cum land fort. It is situated at the mouth of a ravine between two extremely rocky hills on its north and south and a dam to the east at the foothills forming a large reservoir between them.

The fortifications consisted originally of a lower fort consisting of a bastioned wall enclosing the town and on a level with the plain commanded by two small but strong forts on the hills. The fort on the south hill is called Ranmandal or the Battlefield fort and that on the north hill, is called the Bande Kote or Fifty two rocks fort. The city was defended on the east by stone and mud walls with loop-holed parapets and on the west further protected by deep and broad ditches.

The fort on the north-hill is a very good instance of Giridurga. The fort wall is semi-circular raised all along the edge of the high hill serving as a bastion providing a view of the plains. The fort is irregularly polygonal and the height of the wall also varies between 2m to 6m. The south fort stands on the summit of a cliff. The rock is separated from the mass of the main hill by an impressive chasm, 26 to 60 feet deep and 18 to 30 feet broad. It is approached by a flight of steps through a narrow valley. The walls have circular bastions on the outside and on the top is an irregularly pentagonal citadel.

Pulkeshi I shifted the capital of his kingdom to Badami and also made tremendous effort to construct a fort on the high hill plateau. His only known inscription dated 543 C.E essentially speaks of the construction of the fort, the only one known so far belonging to the period of ancient Karnataka.

### 4. Vijayanagar Fort

Under the guidance of sage Vidyanarya, Harihar and Bukka founded in 1335 a city on the banks of the Tungabhadra river which was named Vijayanagar in Bellary district in Karnataka.

The kingdom prospered under their rule but it was constantly in conflict with the neighbouring powers like the Bahamani kingdom. To protect the city Harihar II (1399-1406) raised walls and towers of the fort and strengthened their fortifications. The city was further strengthened by Devaraya II (1422-1446). The Persian traveller Abdul Razak who visited the city in 1443 tells us that the fortress of Vijayanagar is in the form of a circle situated on the summit of a hill.

The fortifications of the city were no doubt formidable. It was surrounded by deep moats which prevented the enemy from coming near the walls. It was equipped with up-to-date weapons of offence and defence. On the walls were set up catapults which showered stones, clubs and viable axes upon the enemy, causing much harm. Explosive weapons were also used in defending the fort against the invaders. There were various gateways, namely the Kampli gateway, Sandur gateway, Hospet gateway, Kamalapura gateway and Mallapura gateway. All these gates were connected with high walls and hill ranges concentrically. The defence of the fort was left in the hands of Amaranayakas in whom the Raja had great confidence.

Krishnadevaraya who ascended the throne in 1509 added several buildings in the capital. But a battle on 23 January 1565 at Talikota completely destroyed Vijayanagar. It was a watershed battle fought between the Vijayanagar Empire and the Deccan Sultanates of Ahmednagar, Bidar, Bijapur and Golconda, who had formed a grand alliance which caused the end of the Vijayanagar Empire, the last great Hindu kingdom in South India.

### 5. Gulbarga Fort

The fort of Gulbarga located in Karnataka was a Naradurga with no natural defences. The fort had 15 towers and probably 26 guns, including one 25 feet long. The fort stands to the north-west of the city and has a rectangular plan. It is enclosed by a double wall (50 feet thick) with bastions at intervals and surrounded by a deep and wide moat. The really massive projecting bastions held revolving platforms for cannon. There were machicolations, merlons and embrasures with loopholes for musketry.

There were two gateways, one in the middle of the east wall and other in the middle of the west wall. The outer barbican gate of the east gateway is destroyed. On the either side of this 50 feet long gateway are large guard rooms.

The west gate was a formidable structure and was protected by an outwork, now in ruins. It projects out as a spectacular horn work beyond the fort and includes a succession of four doors and four strongly defended courts. The entrance was further defended by three tiers of powerful iron chains which, in times of attack, were fixed across the opening in front of the door. The two-leaved door is still in its position, iron clad and armoured with spikes.

Alone among Indian forts, Gulbarga boasted a huge, formidable dungeon the Bala Hissar. Rectangular, with four great towers, its grey-black sandstone walls have no opening below the level of the crenellations except the entrance, high up on the north face at the head of a long, exposed flight of steps. It was in the centre of the fort, used as a residence and place of last refuge.

### 6. Jamia Mosque, Gulbarga Fort

Gulbarga's Jamia Mosque, built in 1367 by Rafi of Kazvin, is unique in India in that it is completely covered, with a dome over the mihrab, domes at each corner and more than 70 smaller domes. There is no open courtyard and it measures 216 feet by 176 feet – all light comes from the arcades.

Towards the east of the city are Bahmani tombs - squares with large domes. They are simple domed cubes of plastered rubble in northern style. But the mausoleum of Firoz Shah does bear some Hindu decoration, though this remained uncommon in the Deccan until the time of the Adil Shahi dynasty towards the end of the 15th century C.E. One of the tombs – of Khwaja Banda Nawaz- is venerated by all communities. The arches of these buildings are in Bahmani style and paintings on walls are in Persian style.

The revolt of the Muslim officers appointed from Delhi resulted in founding of the Bahmani Sultanate in 1347 C.E. by Hassan Gangu, who chose Gulbarga to be his capital and adorned it with buildings.

Gulbarga continued to play an important role till 1429 when Ahmad Shah shifted his capital to Bidar. With the transfer of the capital, Gulbarga lost its place of pride. In 1520 Krishnadevaraya of Vijayanagar invaded Gulbarga, razed the fortress to the ground. Later Ali Adil Shah defeated the king of Vijayanagar and, as per inscriptions, repaired the Gulbarga Fort. In 1657 Aurangzeb, then governor of Deccan succeeded in conquering Bijapur and Gulbarga. Later Gulbarga changed hands and became a part of the Nizam's kingdom.

### 7. Bidar Fort

Located on the Deccan Plateau in the north-eastern part of Karnataka, Bidar is situated 740 kms north of Bengaluru. The Bidar fort is irregular rhomboid in shape and is one of the most formidable forts of the country. The total circuit of the ramparts is over 3 miles and it has 37 bastions and five gates. The fort is surrounded by glacis and moats in the form of triple channel with partition walls hewn out of solid rocks

which are a special feature of Bidar. The walls, bastions, gates and barbicans of Bidar, which are still intact, are some of the most sophisticated architectural features in India. The Munde Burj is the most prominent bastion commanding the approach with heavy guns and loopholes. The main entrance to the fort is from the town through a triple gate. The first was defended by a moat, now filled in, and was closed by two doors in succession, the outer door being studded with spikes.

The gateways are skillfully designed, having strong barbicans. The gateways on the east side, standing high above the plain, are approached through steep and winding tunnels. The citadel was formerly cut off from the rest of the fort by a wall, now largely destroyed, occupies the highest spot and, in addition to its gate from the fort, has a strong postern. Inside the town-walls and the fort are many old buildings. The more important of them are Royal Kitchen, Tarkash Mahal, Lal Bagh, Gagan Mahal, Rangin Mahal, Takhat Mahal, and so on. The madrasa of Mahmud Gawan is one of the noteworthy monuments of Bidar.

The Bahamani rulers did not take too long to realize that Gulbarga being nearer to their rival Vijayanagar was not too secure a place for the capital. Comparatively Bidar was more secure and also climatically better. In 1429 Ahmad Shah Wali shifted the Bahamani capital from Gulbarga to Bidar. It is believed that the building of the city and fort of Bidar commenced sometime in 1429, when the king Ahmad Shah Wali returned from the conquest of Kherla, and the operation lasted for three years and was completed in 1432.

### 8. Bijapur Fort

Bijapur was once the capital of the Adil Shahi dynasty and it is located in the district of the same name in the present Karnataka state. The fort is roughly oval-shaped in plan, the western part being broader, with wide moat (36m wide), filled with water besides tall and formidable defence curtains interconnected by colossal watch towers and gun bastions. The area covered by the fort is 4km east-west and 3.25 km north-south. Bijapur fort is the most spacious fort of the Muslim rulers in Karnataka. The fort has five important gateways - Mecca Gate on the west, Shahpur Gate at the north-west, Bahamani Gate on the north, Allapur Gate on the east and Fateh Gate on the south-east.

In addition to the main gateways, there are three colossal watch towers (burj), almost at regular intervals, one being the Feringi Burj which accommodates several pieces of cannon. The fort has a number of guns, some are famous, one of them being Malik-i-Maidan (March of the Field). The citadel popularly known as the Arkquila is roughly located in the centre of the fort. The Arkquila is a treasury of artistic buildings consisting of palaces, arches, tombs, gateways, minarets all carved with rich brown basalt rock. The most important of them being the Gol Gumbaz, the tomb of Sultan Mohammad Ali Shah, regarded as one of the most remarkable buildings in the world. The prominent palaces are the Chini Mahal, Anand Mahal, Adalat Mahal, Asar Mahal, Gagan Mahal and Sat Manjil.

In the wake of the breakup of the Bahamani Kingdom, Yusuf Adil Shah (1489-1510), who was a governor under the Bahamani Sultan Muhammad Shah II (1482-1515) of Bidar, declared independence and founded a new dynasty of rulers in Bijapur, known as the Adil Shahis. From the early part of the 16th century to the middle of 17th century, vigorous structural activity in Bijapur resulted in the appearance of monuments of wonder and grandeur.

### 9. Raichur Fort

Raichur, on the banks of the Tungabhadra river, is the headquarters of Raichur district. It is located 409 kms from the state capital, Bengaluru.

The original fort at Raichur, according to a long inscription on a slab on the western wall, was built by Raja Vitthala on the order of the Kakatiya queen, Rudamma Devi, in the last decade of the 13th century. It came into the possession of the Bahamanis and later Adil Shahis during the 15th and 16th centuries.

Adil Shahi rulers made several additions and modifications to the fortifications and built the outer fort wall. The walls of this fort are constructed of huge blocks of well-dressed and nicely fitted stones, without the aid of any cementing material. The outer wall, which is constructed of comparatively rough stone masonry, however, is the work of the Muslims, as is shown by the various inscriptions in Arabic and Persian on its bastions and gateways. There are two gateways in the inner fortifications (Sailani darwaza in the west and Sikandari darwaza in the east) and five in the outer fortifications (Mecca in the west, Naurangi in the north, Kati in the east, Khandak in the south and Doddi in the eastern side). The outer wall is enclosed by a deep moat on three sides, the fourth (or the southern) side being naturally defended by a row of three rocky hills, all fortified with massive ramparts. The outer fort is considerably larger than the inner fort.

The Bala Hissar or citadel, situated on the middle and loftiest of the hills on the southern side, stands on an irregularly shaped platform supported on stone masonry piled up with on rough boulders. It contains mainly, a Durbar Hall, a small one-arched mosque in Bijapur style, a dargah called Panch Bibi Dargah and a square cistern now filled up with earth.

### 10. Shahpur Fort

Shahpur is a town located in Karnataka and it is about 500 kms north of Bengaluru. Shahpur fort is of irregular shape built on precipitous rocks which originally formed the principal defences of the fort. The two arched gateways of the Shahpur fort which are attached with the fortification walls are in ruins. One of them has Persian inscription on top. The fort is dominated by a great attainable conical hill, on which the citadel stands making it impregnable. To reach the citadel one has to pass through triple wall fortification built of masonry in lime-mortar. The inner walls also have bastions with battlements. Entrance to the inner circle is through small doorways. Between the ramparts are several stone structures of various dimensions, serving different purposes.

Of the seven inscriptions at Shahpur fort, the earliest dated 1555, describes that the fort was built by Ibrahim Adil Shah I through one Muhammad Yusuf. He strengthened the bastions and curtains. It is interesting to note that even in the inscriptions carved on Shahpur fort and the town gateway (*Gogi Darwaza*) the name Shahpur does not appear. As per the mythology, the name of Shahpur is 'Sagar'. But in its place the name Nusratbad is mentioned which was given by Adil Shahi rulers.

### 11. Belgaum Fort

One of the oldest forts in Karnataka, the Belgaum fort played host to a multitude of dynasties, from the Rattas, the Vijayanagar emperors, Bijapur Sultans, Marathas and finally the British. During the freedom movement of India, Mahatma Gandhi was imprisoned here. The Belgaum fort is also an embodiment of the legacy of religious tolerance in Belgaum as there are a number of sacred shrines pertaining to different religions. The fort has Hindu, Jain and Muslim architectural influence with temples and mosques located within its limits, indicating cultural syncretism. The architectural styles seen in the mosques are of the Indo-Saracenic and Deccan type.

There are two Hindu shrines at the fort entrance - one devoted to Ganesha and another to goddess Durga. There are two Jain

temples inside the fort, the Kamal Basadi, with the Neminatha idol in black stone is more famous. It was built in the Chalukyan style in 1204 C.E. The other temple called the Chikki Basadi is in ruins. It was once considered as a "remarkable piece of Jain architecture". It had a frontage, which was ornamented with rows of dancing figurines, musicians, and trimmed flowers. The fort has two mosques or masjids, namely the Safa Masjid and Jamia Masjid; the former mosque is the most frequented by the Muslim population of the city of Belgaum.

Located in an undulating plain land, the fort is of oval shape and is surrounded by a deep and wide moat excavated in soft red stone. It was originally built by Jaya Raya, also called Bichi Raja, an ally of the Ratta Dynasty, in 1204 C.E. However Jakub Ali Khan of the Bijapur Sultanate is responsible for transforming the fort into an invincible fortress surrounded by a deep moat, huge walls, bastions, battlements and parapets. In 1686, the Mughal emperor Aurangzeb defeated the Bijapur Sultanate, and Belgaum came under his control.

### 12. Bellary Fort

Bellary is a historic city in Bellary district in the state of Karnataka. The Bellary fort is built on top of Ballari Gudda (hill in Kannada) or the Fort Hill. The fort is divided as the Upper Fort and the Lower Fort. The Upper Fort is a polygonal walled building on the summit, with only one approach, and has no accommodation for a garrison. The Upper Fort consists of a citadel on the summit of the rock at approximately 2000 feet, guarded by three outer lines of fortification, one below the other. It contains several cisterns, excavated in the rock.

The turreted rampart is surrounded by a ditch and covered way. There is only one way up to the fort, which is a winding rocky path amongst the boulders. On the top, outside the citadel is a small temple, the remains of some cells and several deep pools of water. Within the citadel are several strongly constructed buildings, and an ample water supply from reservoirs constructed in the clefts of the rocks.

The Lower Fort lies at the eastern base of the rock and measures about half a mile in diameter, and probably had an arsenal and barracks. It consists of a surrounding rampart, numerous bastions, faced by a deep ditch and glacis. The entrance to the Lower Fort is via two gates, one each on the western and eastern sides. Just outside the eastern gates of the Lower Fort is a temple dedicated to Lord Hanuman - the Kote Anjaneya Temple.

The Fort was built round the hill during Vijayanagar times by Hande Hanumappa Nayaka. Hyder Ali, who took possession of the fort from the Hande Nayaka family in 1769, got the fort renovated and modified with the help of a French engineer. The Lower Fort was added by Hyder Ali around the eastern half of the hill. Legend has it that the unfortunate French engineer was hanged, for overlooking the fact that the neighbouring Kumbara Gudda is taller than Ballari Gudda, thus compromising the secrecy and command of the fort.

### 13. Bengaluru Fort

Bengaluru fort is located on the Deccan Plateau in the south-eastern part of Karnataka. The fort at Bengaluru had a perimeter of about one mile; it was of solid masonry, surrounded by a wide ditch which was commanded from 26 towers placed at intervals along the ramparts. To its north lay the fortified town, several miles in circumference and protected by a rampart constituting of a deep belt of thorn and cactus, and a small ditch.

Bengaluru fort was originally built as a mud fort in 1537 by Kempe Gowda a feudatory of the Vijayanagar empire and the founder of Bengaluru.

After the fall of the Vijayanagara empire, Bengaluru's rule changed hands several times. In 1638, a large Bijapur army led by Ranadulla Khan and accompanied by Shahji Bhonsle defeated Kempe Gowda III and Bengaluru was given to him as a jagir. Later on, Bengaluru was sold to Chikkadevaraja Wodeyar (1673–1704) of Mysuru for 3,00,000 rupees. In 1759, Hyder Ali, Commander-in-Chief of the Mysuru Army, proclaimed himself the de facto ruler of Mysuru. He converted the fort into a stone fort in 1761. It was here that Hyder Ali imprisoned David Baird, along with a number of other army officers of the British. The fort stands as a witness to the struggle of the Mysuru Emperor against the British domination.

The kingdom later passed to Hyder Ali's son Tipu Sultan, known as the Tiger of Mysore. Bengaluru Fort was a stronghold of Tipu Sultan. He later extended the fort and it came to be known as the Tipu Sultan Fort. The intricately carved arches of the fort have been built as per the Islamic style. Another major attraction of the fort is also the well-preserved Ganapati temple situated inside it.

#### 14. Chitradurga Fort

Chitradurga fort is situated in the Chitradurga district of Karnataka. It is located approximately 120 kms from Hampi, and approximately 200 kms from Bengaluru. Chitradurga is formed of two words in the Kannada language: '*chitra*' means "picture" and '*durga*' means "fort". It is locally known as '*Yelusuttina Kote*' or "Seven circles fort". The Chinmuladri range constituting of seven hills is enclosed by a series of seven concentric fortification walls which is the Chitradurga fort. Each wall has a gate with an ascending access through winding, and turning narrow corridors which would make it difficult to use elephants for attacking the fort or to break down the gates. Small embrasures in the fort walls were provided for use by archers to shoot arrows at the enemy. Four gates were provided in the outer most walls. The four gates (called '*Bagilu*' in Kannada) are called *Rangayyana Bagilu*, the second one called *Siddayyana Bagilu*, third one is called the *Uchchangi Bagilu* and fourth one is named *Lalkote Bagilu*.

The area covered by the fort is reported to be 1,500 acres. The total length of the fort walls is about 8 kms. The impregnable fortification for defence purposes consisted of gateways, posterior entrances, water tanks and watch towers to guard and keep vigil on the enemy incursions. The storage ware-houses, pits and reservoirs were primarily designed to ensure food, water and military supplies required to endure a long siege. Uniquely, all these facilities are still well conserved. Initially, it was built in mud but was subsequently strengthened in stretches with granite stone slabs in the 18th century C.E. An outstanding feature noticed in several stretches of the fort walls is that no cementing material has been used in joining the large granite cubes that have been neatly sized, cut, trimmed and placed in position.

The fort was built in stages between the 10th and 18th centuries by the dynastic rulers of the region, including the Rashtrakutas, Chalukyas and Hoysalas. However, the Nayakas of Chitradurga, or Palegar Nayakas, were solely responsible for the expansion of the fort as the dynastic reign of the Nayakas lasted for over 200 years. The Chitradurga fort was their stronghold and the very heart of their province until Madakari Nayaka V, its last ruler was defeated by Hyder Ali of Mysore Kingdom. The fort thus stands as a tribute to the Nayakas who ruled this part of Karnataka.

#### 15. Seringapatam Fort

The ancient fortress city of Seringapatam (now called Srirangapatna or Srirangapatnam) was located on an island in the Cauvery river approximately 15 kms from Mysuru and approximately 120 kms from Bengaluru. The island fort has an attractive walled courtyard with reliefs of serpents beneath

banyan trees leading to the Water Gate. Tipu's summer palace is just outside the east side of the fort, a confection of red and white vertically striped walls in a garden. Its wall paintings, depicting Colonel Baillie's defeat at the hands of Haider Ali, were restored by Wellesley and later repainted on the orders of Lord Dalhousie. He also gave the double doors, rosewood inlaid with ivory, for the mausoleum of Haider Ali and Tipu Sultan, which stands in the Lalbagh further east. The memorial of Colonel Baillie, who died a prisoner, is nearby.

It was the capital for the Muslim rulers of the kingdom of Mysore, Haidar Ali (1722 – 1782) and his son, Tipu Sultan (1753 –1799). The name is derived from the ancient Hindu temple of Sri Ranganatha Swami (the Hindu god Vishnu), which is located at the western end of the island. The city became the site of two of the most famous sieges of the Anglo-Mysore Wars (in 1792 and 1799).

The Siege of Seringapatam (5 April – 4 May 1799) was the final confrontation of the Fourth Anglo-Mysore War between the British East India Company and the Kingdom of Mysuru. The British achieved a decisive victory after breaching the walls of the fortress at Seringapatam and storming the citadel. Tipu Sultan, Mysuru's ruler, was killed in the action. The British restored the Wodeyar dynasty to the throne after the victory, but retained indirect control of the kingdom.

#### 16. Mudgal Fort

Mudgal fort is situated in the Raichur district of Karnataka. Mudgal has strong fortifications of stone walls and strong circular bastions of irregular shape. It has a double wall fortification. The first entrance has strong wooden gate with long projecting iron spikes. At the outer gateway column, there are four hooked iron chains. Originally they were longer, they were probably meant to tie across the gateway for protection. The second gate is entered through horn-shaped arrangement and has guard rooms on either side. The battlements are strong with machicolation.

The outer fort has a wide moat, which is filled with water. The width of the moat varies, being as much as 50 yards at several places. Behind the moat, there is a scarp with a row of bastions and after that, a narrow covered passage and adjoining it the counter scarp with very massive bastions. From the arrangement of the existing fort, it is apparent that the fort was rebuilt after the inventions of guns. The courses of masonry at several places are of Hindu style, but the arch-shaped parapet is of Muslim design. The moat and the row of bastions together offer a pleasing view.

Mudgal was originally an outpost of the Kakatiya kingdom. It passed hands from the Yadavas to the Delhi Sultans, Vijayanagar and the Bahamani kingdom. When Adil Shahi kingdom was established, the fort was part of the kingdom. The Adil Shahs rebuilt it and strengthened the defences of the fort. Several inscriptions at Mudgal fort belong to Bijapur rulers like Ali Adil Shah I (1558-80) and Ibrahim Adil Shah II (1580-1627).

#### 17. Jamalabad Fort

Jamalabad fort, located 8 kms north of Beltangadi town, (approximately 65 kms from Mangaluru) is 1788 ft above sea level and was formerly called Narasimha Ghada, which refers to the granite hill on which the fort is built. It is also referred to locally as 'Jamalagadda'.

The fort is inaccessible other than via a narrow path, with nearly 1876 steps to the fort that are cut out of the granite hill and lead all the way to the top through the fort to the summit.

Inside the citadel there is only one tank to store water and the remains of a single cannon on the hillock. Nothing much of the fort remains except hints of the fort wall with parapets. The fort was built by Tipu Sultan in 1794 and named after his mother, Jamalabee. The fort is said to have been built over the ruins of an older structure. The fort was captured by the British in 1799

during the Fourth Anglo-Mysore war.

#### 18. Devanahalli Fort

Devanahalli fort is located approximately 35 kms north of Bengaluru city, in Karnataka. The present fort was built of stone by Hyder Ali and Tipu Sultan. It is spread over an area of 20 acres. The roughly oval east oriented fortification veneered with dressed masonry has as many as 12 semi-circular bastions at regular intervals. A spacious battlement is provided towards the inner side of the fortification. The fort has entrances decorated with cut plasterwork at the east and west. The entrances are quite small, comfortable enough for the horses of yore. The bastions are provided with gun points built with lime and brick. The house in which Tipu and Hyder Ali lived also exists till date. The house of Dewan Purnaiah, a high ranking official in Hyder Ali and Tipu Sultan's court, is also located inside the fort.

It was originally built in 1501 by Mallabairegowda, and it remained in the hands of his descendants until the mid-eighteenth century. In 1749, the then Dalwai of Mysuru, Nanjarajiah, attacked the fort and occupied it.

Later, the fort passed into the hands of Hyder Ali and subsequently Tipu Sultan. In 1791, Lord Cornwallis laid siege to the fort and took its possession during the Anglo-Mysore War.

#### 19. Mirjan Fort

Mirjan Fort is built using Islamic and Portuguese technology making it one of the strongest and biggest forts in North Kannada district of Karnataka. Situated on the west coast of Karnataka, it was a well-known port frequented by the Roman merchants between 1st and 3rd centuries C.E. mentioned by Pliny, 77 C.E. and Periplus, 247 C.E. This port town played a dominant role in the maritime trade for items like black pepper, cinnamon and Arabian horses. However, it was only in 17th century that Shareef-ul-Mulk (1608-1640), a feudatory of the Adil Shahi Sultan of Bijapur, got this fort constructed. After the fall of Vijayanagar empire this fort successively went into the hands of the Bahamani Sultans, Adil Shahis of Bijapur, a small ruling family of Uttara Kannada region, the Portuguese, Hyder and Tipu and finally the British.

The fort is spread over an elevated mound with an area of 11.8 acres. Built out of laterite blocks, it has four entrances and is surrounded by a moat to which water is continuously supplied by the nearby stream Kudurehalla. There are eleven circular bastions all around with series of merlons and gun holes above the walls. Within the forts are structures and other remains, one such structure appears to have housed the administrative offices. There is also a chamber which was possibly used for storing explosives. There are underground passages and about 2 wells with stone lining dug inside of the fort. Because of its long historical importance, Mirjan fort has been declared as a protected monument by the Archaeological Survey of India.

#### 20. Wagangera Fort

Wagangera was a place of historical importance in Shorapur taluk during 16th-18th century. It finds its place in the pages of Indian history for the battle which took place between the Raja of Shorapur and Emperor Aurangzeb. Wagangera contains the ruins of a well constructed fort which at the time of the Raja was considered to be invincible. It lies 7 kms to the west of Shorapur town and 12 kms to the north of the river Krishna. The fort known as Padukote is to the west of the village and fort known as Hosakila is to the east. Between these two forts there is a large reservoir known as Anesondikeri which serves as a moat to the fort.

The fort is rectangular in plan and measures 350 m by 240 m. It has two distinct courts, upper court on the east and lower court on the west. The main approach to the fort is on the east with a large number of structures. The upper court occupies the

elevated area that serves as a citadel. The fort wall is built with dressed granite blocks and is plastered on both sides. The wall measures 4 m to 5 m in height and 1.5 m in thickness.

The fort wall can be divided into total 9 bastions and two gates. North and south wall divides the fort into two courts and it has a gate in the middle. The fort has three gates one each on the eastern, western and southern walls. These gateways are similar on plan and consist of arched openings, a semi circular bastion on sides, a barbican court and raised platforms flanking the passage. The wall is built with the blocks having floral and geometrical decorations and also has fragments of pillars and capital blocks etc of Hindu temples.

A mosque is located to the west of the *Ram Darwaza*. It is rectangular in plan and measures 24 m by 13 m. It has a prayer hall and an open court and the rectangular open court is surrounded by 70 cm thick and 1 m high wall. It has entrances on the eastern and southern sides. Both the exterior and interior walls are plastered. Two graves are situated in open court.

### **21. Basavakalyan Fort**

Basavakalyana fort is located in Bidar district of Karnataka. Its historic importance is dated to the 10th century. The capital of Later Chalukyas was shifted from Manyakheta to Kalyana that is why it is also known as Kalyana fort. Basavakalyana with its fort was the centre of a great social and religious movement, in the 12th century, because of Basaveshwara, the social reformer. He fought against caste system and the orthodoxy in Hinduism.

The fort is strategically built as a defence structure in an unobtrusive setting, which is not visible till the enemy is at close quarters of the fort. This gives advantage for the defence forces holed up in the fort to repulse enemy attacks. The fort was made defensively complex with guard rooms and barbicans, which was a novelty at that time. It consists of three concentric irregular fort walls.

The main door to the citadel is known as the '*Akhand Darwaza*' built with four red stone slabs. From the doorway, up a flight of steps is the passage to the Rajmahal (mostly in ruins). However, the ceiling in the palace hall displays colourful designs. The central wall in the hall has patterns of vases and urns. Within the fort precincts one finds a platform used during Muharram prayers, or could be a royal courtyard used by king for relaxing purposes.

This is one fort where one can see varieties of cannons, some artistic and intricately designed. Some of them are short and stubby but the size of the bore is really large and impressive. A close look at the handles of the cannons is needed to analyse the design engraved on it. Most of them are fish shaped. One biggest cannon has similarities to the cannon in Bijapur, the one that's supposed to be an alloy of five metals. The alloy has certain qualities- does not heat in the hottest of weathers, does not corrode, can withstand the worst of nature's forces. This cannon is almost in the original condition, the swivel action still works.

### **22. Yadgiri Fort**

Yadgiri fort is one of the largest forts of Karnataka. Remarkable architecture and building planning are the key features of this fort. The fort is built over a massive monolith measuring about 850m long, 500m wide and 100 m high. It was ruled by the Kalyana Chalukyas, Yadavas, Cholas, Bahmani Sultans, Adil Shahis and the Nizams. According to sources, five inscriptions of various time periods have been found in this fort. As per the inscription situated close to the fort entrance, Yadgiri fort was built by a person named Jagannath from Sagar, a village in Shahpur taluq.

In terms of size and strength, Yadgiri fort can be compared to Madhugiri, Chitradurga, Bellary, and Shahpur forts. All these forts are built over rocky hills and have multiple levels.

Yadgiri town has grown around the northern corner of the hill that's where the fort entrance is situated. This is the Mahadwara, the entrance gate. Beyond the Mahadwara are a series of gateways which is nothing but a security measure. The whole fortification can be divided on the basis of these gateways from outer to innermost. After entering these gates a long path going uphill with towering walls to the left and deep stone lined water tanks to the right with Yadgiri Lake in the background is picturesque. Yadgiri had plenty of resources for fresh water, within and outside the fort.

The north-west corner of the hill is located on the edge of the plateau and there are two or three turrets. One of the turrets with cannon has an Arabian or Persian inscription at the tail-end. In the vicinity are several cannons lying about. Also there's a big rectangular structure which might have been soldiers barracks. There is a pair of massive bastions connected by rampart walls with a small passage in it. That is the western entrance to this fort. All the sides and entrances are armed with cannons. This suggests it was surely a well guarded fort.

### **23. Jaladurga Fort**

Jaladurga is a fortified village in Raichur district in the state of Karnataka. The Adil Shahi Kings of Bijapur built the fort. A group of islands are formed by the river Krishna. In fact river Krishna defines the district borders of Raichur and Yadgiri. Jaladurga occupies the western tip of the island.

Jala + Durga = water + fort, also known as Dweepadurga too (Dweepa + Durga = island + fort). The Krishna river flows east side around the hill and the approach from surrounding areas is difficult, hence it is an ideal place for a fort. The fort is in ruined status. On top of the fort, at one point of time, there was a palace and a cellar.

On the southern edge there is a high rise structure. Also there is tower built to provide unrestricted view of the fort and the island. The fort ruins can be seen from the base of the hill going right up to the summit. In fact this is the highest point of the fort as well as the island. There are a few tombs of the kings with no identification; there is Sangameshwara Matha, and a temple of Yellamma. The sides of the river Krishna is not sandy, it is full of smooth boulders and it is called Mandhana Maduvu. At Jaladurga there is a small stone inscription written in Urdu and Devanagari script. According to local belief, there is a box like stone hidden in the river, which contain about one lakh verses of the great saint Basavanna and are yet to be discovered by rest of the world.

This fort is built in a roughly hexagonal layout with harbours on the opposite sides. With the temple at the centre, the main streets run in a radial way surrounded by paramount buildings such as royal palaces, mansions of ministers, public offices, buildings of nobles, houses of Brahmins. Almost all the basic safety measures for the inmates and fatal obstacles to the incoming enemies have been thought of, thus making it a very secure fort.

### **24. Torgal Fort**

Located in the Ramdurg taluq on the bank of river Malaprabha is located Hale Torgal. After the fall of Vijayanagar, Torgal came under the Mughals and Marathas. It is believed that Shivaji also built or expanded a fort here. Two Persian inscriptions have been found on the walls of the fort. One is of the days of Ibrahim dated 1535, speaking of the construction perhaps extension of the construction of the fort by one Ismail, son of Abdul Aziz. Another inscription with a few Kannada lines at the bottom is the Ibrahim II of 1583, it speaks of the construction again perhaps of another part of the fort.

Fort is located on hilly terrain along the bank of river Malaprabha. It has got two gateways, one faces west while the other north-

east. The one on the north-east is the main entrance of the fort. Wall of the fort is decorated with motifs and designs. Light carving on stone wall is very common here. Some of the designs are really unique and peculiar for example there is a carving of a fish and two creatures and their body looks like swan but the head looks like snake.

The Torgal village has twin Chalukyan temples facing each other. Bhutanatha Temple complex within the fort is a huge site. Other temple with a similar plan and size has a Devi image installed in the Garbhagriha. While entering the complex from the north gate, there is a small Ganapati shrine of Vijayanagar style. All together there are nine temples here. Of these only Bhutanatha has sculpture around its Garbhagriha and its parapets have some erotic sculptures which have been damaged. Architecture and some sculptures of Bhuthnatha temple are strikingly similar to Khajuraho temples. Apart from these temples, the fort has three mosques, four dargahs and two tombs. This small fort village is an interesting tourist spot because of its old monuments, temples and statues and also reflect the historical events that have taken place during the bygone era.

### **25. Kittur Chennamma Fort**

Chennamma fort is a great historical monument and tourist attraction in Karnataka. It is also known as Kittur Chennamma fort. This fort is situated at a distance of 50 kilometres from Belgaum and from Dharwad it is located at a distance of 32 kilometres. The Kittur Chennamma Fort stands as an evidence of the great Freedom struggle that was led by Rani Chennamma. It is not just important from archaeological point of view but also stands as a symbol of bravery and women's pride.

The fort is constructed out of black basalt rock but at present it is nothing but a ruin. The low wall on both sides of the fort has tiny embankments. In the interior of it lies an ancient telescope through which Rani Chennamma used to watch the Dhruva Nakshatra or the Pole Star in the morning. But the telescope is poorly maintained. It had a beautiful porch which measured 100 feet by 30 feet which was supported by teak pillars. But now the pillar is removed together with its roof. A museum is also present in Kittur which exhibits some antique pieces like swords, shields, wooden doors etc.

A moat runs right around the perimeter of the wall. Probably the moat was fed by water from a lake close to the eastern wall. Bastions flanking the gateway are restored and plastered with a thick layer of cement-sand mixture. Within the Palace complex a huge hall structure was built mainly for the conference purpose and called as Palace Durbar or conference hall. This fort is not just symbolic for its architectural designs but also stands as reminiscence to the great revolt against the British after the introduction of the Doctrine of Lapse.